श्रीः

ज्योतिष्मती

त्रैमासिक

वर्ष १८
सं० २०३१

संख्या २
माघ



वार्षिक
मूल्य
१२.००

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

इस अङ्क का
मूल्य ३.२५

विषय-सूची

ग्राहकों और लेखकोंसे आवश्यक निवेदन

जिन सज्जनोंने गतवर्ष १७ संख्या ३, अप्रैल १९७४ (वैशाख सं० २०३१) के अंकसे अपना वार्षिक मूल्य भेजा था उनका शुल्क इस अंकमें समाप्त हो गया है, अतः उनके अंकमें छपा हुआ मनीआर्डर फार्म साथ भेजा जा रहा है, वे आगामी वर्ष १८ संख्या ३ से अपना वार्षिक मूल्य बारह रुपये शीघ्र भेज दें। विलम्ब करनेसे संभवतः उन्हें आगामी अंक कागजकी कमीके कारण उपलब्ध न हो सकें। लेखक महाशय अपने लेख जो महत्वपूर्ण सारगर्भित हों वे ही संक्षेपमें स्पष्टाक्षरोंमें कागजके एक ओर लिखकर भेजें। लम्बे लेख प्रकाशित न हो सकेंगे। आगामी त्रैमासिक व्यापार भविष्य सम्बन्धी जो लेख दि. १० मार्च १९७५ तक प्राप्त हो जावेंगे वे ही छप सकेंगे। इस अंकमें एक सप्ताहके विलम्बका कारण देखिये पृष्ठ १३ पर।

विगत तीन वर्षोंसे श्री त्रिवेदीजीने ज्योतिषसम्बन्धी अन्य सब कार्य (जन्मपत्र वर्षफल प्रश्नादिका निर्णय करना) बिलकुल बन्द कर दिया है। अतः इस सम्बन्धमें अब कोई सज्जन उनसे पत्र-व्यवहार न करें, अन्यथा उनके पत्रोंका उत्तर नहीं दिया जावेगा। फरवरी मासके प्रारम्भमें श्री त्रिवेदीजी स्वास्थ्यलाभ एवं कुछ अत्यावश्यक कार्यवशात् सोलनसे बाहर जा रहे हैं, उधरसे मार्च ७५ के मध्य तक लौटेंगे। ज्योतिष्मती और पंचांग प्रेषण सम्बन्धी सब कार्य यहां व्यवस्थापक द्वारा बराबर होते रहेंगे।

निवेदक :—

व्यवस्थापक ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि०प्र०)

❀ श्री: ❀

ज्योतिष्मती

[भारतीय संस्कृति और ज्योतिर्विज्ञानकी प्रचारक प्रमुखपत्रिका]

सम्पादक एवं संचालक

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

मुख्य सभापति—अ०भा० ज्योतिषपरिषद् (भारत सरकारसे पंजीकृत)

उपसम्पादक

डा० रुद्रदेव त्रिपाठी साहित्य-सांख्य-योगाचार्य
एम.ए. (हिन्दी-संस्कृत) पी.एच.डी.

प्रकाशक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

'ज्योतिष्मती' के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य

१. भारतकी प्राचीन विद्याओंका अन्वेषण और संवर्द्धन।

२. भारतीय संस्कृतिका प्रचार और उसके उज्ज्वलतम लक्ष्यकी पूर्तिका प्रयत्न।

३. ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नति और ज्योतिः-शास्त्र द्वारा भारतीय व्यापारके संवर्द्धनकी कामना।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक

(१) जो महानुभाव ५०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती'के संरक्षक माने जायेंगे। संरक्षकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

सहायक

(२) जो सज्जन १०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सहायक माने जायेंगे। सहायकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

(३) जो सज्जन एक बार ५०१) रु० देंगे वे आजीवन संमान्य सदस्य और जो १२५) रु० एक बार देंगे वे आजीवन सदस्य माने जायेंगे।

(४) 'ज्योतिष्मती' आश्विन शुक्ला १५, पौष शुक्ला १५, चैत्र शुक्ला १५ और आषाढ़ शुक्ला १५ को प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य १२.०० बारह रुपये और एक प्रतिके तीन रुपये पच्चीस पैसे हैं।

(५) जिन सज्जनोंके लेख ज्योतिष्मती-निकेतन की ओरसे प्रार्थनापूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(६) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएं सम्पादक 'ज्योतिष्मती' सोलन (हिमाचल-प्रदेश) के पतेसे भेजने चाहिएं।

(७) लेख आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए

(८) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'ज्योतिष्मती' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विन मासकी शरद् पूर्णिमासे) ही बनाये जाते हैं चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि शरद्पूर्णिमाका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे, या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछेका अङ्क न लेना चाहें तो वे बीचमें किसी भी समयसे वर्षभरके लिए ग्राहक हो सकते हैं।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखनी चाहिए। पता अंग्रेजीमें लिखना हो तो घसीट अस्पष्ट अक्षरोंमें न लिख कर केपिटल लेटर्स (बड़े अक्षरों) में स्पष्ट लिखें। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डर कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य व एक अङ्कके मूल्यके नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'ज्योतिष्मती'का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिये टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'ज्योतिष्मती' प्रकाशित होनेकी तिथि शुक्ला पूर्णिमा है। प्रकाशन तिथिसे सात दिन पूर्व प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दी जाती है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १० दिनके अन्दर अपना ग्राहक नम्बर लिखकर हमें सूचना देनी चाहिए।

व्यवस्थापक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि०प्र०)

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"



(माघ-फाल्गुन-चैत्र दि० २८ जनवरी ७५ से २५ अप्रैल ७५ तक)

गुम्फन्तीव पुरातनैरथ नवैर्ज्योतिःप्रबन्धैः समं
भाग्याभाग्यविनिर्णयं कविकथा-सन्दोहमातन्वती।
अज्ञानान्धनिवारणं विदधती विज्ञानसूर्योज्ज्वला
जीयाद्धर्ममयी सुकर्मनिरता 'ज्योतिष्मती' भूतले ॥

वर्ष	सोलन, पौष शु० १५ सोमवार, सं० २०३१ वि०	संख्या
१८	७ माघ शाके १८९६ (२७ जनवरी १९७५ ई०)	१

दयामयीसे

कर दी कृपा है, आज तूने, माँ ! अनोखी रीतिसे।
रहता भरा तव दिल सदा है सुतके प्रति प्रीतिसे ॥
जो आज तूने की न होती, मुझ अकिंचन पै दया।
तो मैं तड़पता दुःखमें रहता पड़ा, ऐ माँ ! सदा ॥
निस्तेज अरिदल हो गए, अवलोक तव सुकीर्तिसे।
कर दी कृपा है आज तूने, माँ अनोखी रीतिसे ॥
है ज्ञान मेरे पास—न तो शब्द तव गुणगानको।
कर दिया तूने आज सारे, चूर अरि-अभिमानको ॥
रखना दया निज पुत्र पै, डरते रहें अरि भीतिसे।
कर दी कृपा है, आज तूने, माँ ! अनोखी रीतिसे ॥
भूले जो नर ऐसी कृपामयीकी कृपाकी दृष्टिको।
धिक्-धिक् है सौ-सौ बार ऐसे हीन मानव जन्मको ॥
करती तू रहना नेह-दृष्टि, मां ! अनोखी रीतिसे।
मुझसे अकिञ्चन दास पै, तू सदा सुप्रीतिसे ॥

—कपिलनारायण मिश्र

सम्पादकीय विचार

पार्लमेण्ट्री शासन प्रणालीका अन्त

इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा, यज्ञः पुर एतु सोमः ।
देव सेनानामभिभञ्जन्तीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥
(ऋ० १०।१०३।८) (साम० उ० २२-३-२ (१८५६)

परमैश्वर्य अजेय इन्द्र हमारा सेनापति है। नीति निपुण महाज्ञानी बृहस्पति हमारा पथ दर्शक है। सदा सतत आगे बढ़ती सेना ही विजय सोम पाती है। निर्भय वीरोंको यह देव सेना है बलवान्। है समर्थ पवन वेगसे दुश्मनका नाश करनेमें, मरुत वीर विजय वैजयन्ती फहराते आगे बढ़ते रहें।

जन-क्रान्तिके विरोधी कहते हैं, स्वतन्त्र भारतमें पार्लमेंट्री शासन पद्धतिके चलते सत्याग्रहके लिए कोई स्थान नहीं। इस स्थापनामें यह मान लिया गया है, भारतमें ब्रिटिश मुस्लिम रूसी शासनका अन्त हो गया है। पर यह तथ्य नहीं है। जनक्रान्तिका समर्थक वकील समुदाय नई दिल्लीमें अंग्रेजीमें ओजस्वी लच्छेदार धारा प्रवाह भाषण दे रहा था। ज० प्र० भी दिल्लीके लगभग १,००० वकीलोंकी सभा में अंग्रेजीमें ही बोले। अंग्रेजीका २८ वर्ष बाद भी चलते रहना क्या इस बातका प्रमाण है कि भारत स्वतन्त्र देश है? शान्तिकालमें इण्डिया डिफेंस एक्ट और मीसा सदृश कानूनों का प्रचलन क्या बताता है? क्या यह पार्लमेंट्री शासन प्रणालीका प्रमाण है? पार्लमैंट्री शासन प्रणालीका एक प्रमाण है विरोधी दलका अधिक से अधिक सम्मान करना। ब्रिटेनमें १९७४ के दोनों चुनावोंमें मजदूर दल जीता। इसके निर्वाचन घोषणा पत्रमें इस्पात समेत अनेक उद्योगोंके राष्ट्रीयकरणकी बात कही गई थी। किन्तु, ब्रिटिश प्रधानमंत्री हैराल्ड विलसनने अपनी पार्टीके दबाव डालने पर भी कानून पेश करना नहीं माना। क्योंकि पार्लमेंटमें चार सीटोंका बहुमत होने पर भी वोटरोंका बहुमत उनके विरुद्ध है। इसका अर्थ है कि जनता उनके प्रोग्रामको नहीं मानती। इसके विपरीत श्रीमती गांधीने ४२ प्रतिशत वोट पाकर भी १९७१-७२ में संविधानमें २१ संशोधन करवाये। क्या यह कार्य पार्लमेंट्री शासन प्रणालीका पोषक माना जा सकता है? शासक पार्टी वस्तुतः लोकतंत्रकी विनाशक और पार्लमेंट्री शासन प्रणालीकी विध्वंसक है। यही कारण है, पार्लमेंटमें सदा मौन रहने वाले वयोवृद्धश्री देसाई पिछली लाइनसे निकलकर आगे आए और घोषणा की कि "यदि रिपोर्ट पेश नहीं की गई और सरकारने प्रदत्त वचनका पालन नहीं किया तो वह लोकसभामें सत्याग्रह करेंगे।' यह धमकी इस बातका प्रमाण है कि

भारतीय बुद्धिने इन्दिराशासनसे हार मान ली है। श्री अटलबिहारी वाजपेयीका पार्लमैंटकी सदस्यतासे त्यागपत्र देनेके लिए उद्यत होना भी इस बातका प्रमाण है कि बौद्धिक शक्तिसे शासन और सत्ताका बदलना सम्भव नहीं। क्योंकि अधिनायकतंत्रमें बुद्धि विवेकके लिए सर्वथा स्थान नहीं। श्री जयप्रकाश नारायणने इस सत्यको १९५१ में ही देख लिया था। परन्तु इस द्रष्टाको उस समय किसीने पहचाना नहीं। अब जब उसने भारत भक्ति विहीन पक्षों से निराश होकर सामान्य जनताका आह्वान किया। उसने प्रतिसाद दिया। अत: ज० प्र० ठीक कहते हैं, कि जनक्रान्ति यदि विफल हुई तो भारतमें 'इन्दिरा-डांगे तंत्र' स्थापित होगा। प्रवदा मास्को इसी कारण जनक्रान्ति पर अभि-शापोंकी निरन्तर वर्षा कर रहा है। श्री डांगे को इसी सफलता पर मास्कोने लेनिन पुरस्कार दिया है। यह है पुरस्कार भारत भक्ति नष्ट करनेमें सफलता पानेका।

जड़ें गहरी हैं

परन्तु भारतीय जनक्रान्तिकी जड़ें ऋग्वेद तक पहुंची हुई हैं। सामान्य जनताकी भक्ति इस प्राचीनतम ज्ञान विश्वकोशके प्रति है। इसमें कहा गया है –

य इमे रोदसी उभे अहमिन्द्रमतुष्टवम्।
विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्मेदं भारतं जनम्॥
(ऋ० ३।५३।१२)

अर्थात्—तीनों लोकोंमें जिधर भी आंख उठाता हूं उधर ही विश्वामित्र रक्षित भारत ब्रह्मके रूपमें दिखाई देता है। व्यापक ब्रह्मके समान भारत भी बृहत्तर भारत सर्वत्र व्यापक है। क्या शासक पार्टियां इस भारतको कभी नमन करती हैं? फिर ज०प्र० की जनक्रान्ति के आगे मास्को कैसे खड़ा हो सकेगा? मास्को को भारत खाली करना पड़ेगा। जनक्रान्तिने मास्कोको नोटिस दे दिया है। वैदिक ऋषि इस वास्ते भारतभूमिकी ओरसे विश्वको आश्वासन देता है :—

श्रेष्ठं यविष्ठ भारताग्ने द्युमन्तमाभर।
वसो पुरुस्पृहं रयिम् (ऋ० २।७।१)

अर्थात्—भारत सबका भरण पोषण करता है। भारतीय युवा सृष्टि वियोजन संयोजन करनेमें समर्थ है। इस विश्वाससे ही भारतकी घोषणा थी—मुझे चारों दिशाएं नमस्कार करें।

"**मह्यं नमन्तां प्रदिशः चतस्रः** (अथर्व. ५।३।१)

इस सम्भावनासे भयभीत सोवियत रूसकी प्रेरणा और आदेशसे सत्ता-लोलुप शासकोंने भारतीय जनक्रान्तिके विरुद्ध युद्ध घोषणा की है। पटना आज मास्कोसे लड़ रहा है। ७० करोड़ भारतीय जनताका हृदय इस जनक्रान्ति का जयघोष कर रहा है। क्या हम समय रहते इस जयनादको सुनेंगे और इसमें भाग लेंगे?

कठोर दमन :

मीसाकी रचना शासन विरोधी स्वरको उठनेसे रोकनेके उद्देश्यसे की गई है। तस्कर व्यापारको नियंत्रित करनेके लिए नहीं। एक लड़का मीसासे पकड़ा गया और बिना मुकदमा चलाए ११ मास जेलमें बन्द रहा। क्योंकि इसने एक पुलिसमैनसे कहा था "कैंटीनमें मैं काम करता हूं, परन्तु खाना पैसे देकर खाता हूँ, मुफ्त खाना नहीं मिलता।"

जनक्रान्तिके सिलसिलेमें मीसामें पकड़े

गए ६०० व्यक्तियोंमेंसे दोको छोड़कर हाईकोर्ट में अपील करने पर रिहा कर दिए। यह क्या प्रमाणित करता है ? यही न कि इन्दिरा शासन पुलिस शासन है। स्वतन्त्रता जेलोंमें बन्द है। स्वाधीनता बन्दी है। क्यों है ? क्योंकि भारत भूमिके प्रति भक्ति और निष्ठाका अन्त कर दिया गया है। अंग्रेजी राजके रहते स्वाधीनता क्या बन्दी न रहेगी ?

पर निराशाका कारण नहीं। ऋषि विश्वास दिलाता है, सतत संघर्ष रतको विघ्न-बाधाएं नहीं रोक सकतीं। उसकी सदा जय होती है, पूर्ण विजय उसको मिलती है। क्या हम इसको स्मरण रखेंगे ?

इतो जयेतो विजय संजय जय स्वाहा ॥
(अथर्व० ८।८।२४)

एक मास पहलेसे

बिहारमें अहिंसाका प्रवेश निषिद्ध है। सोशलिस्ट नेता श्री एस.एम. जोशी अहिंसावादी हैं, परन्तु विनोबा पंथी नहीं। ये जब पटनामें हवाई बन्दर पर पहुँचे और विमानसे ३ दिसम्बर १९७४ को उतरे तो उनको बिहार खाली करने और पटनासे वापस चले जानेका आर्डर दिया गया। इस वारंट पर ३ नवम्बर १९७४ की तारीख पड़ी हुई थी। इसी प्रकार सिद्धराज डड्ढाके साथ हुआ। श्री सिद्धराज सर्वोदय सेवासंघके अध्यक्ष हैं। श्रीमती गांधी की रणनीति है विनोबा कैम्पमें फूट डालना, इसमें वह सफल हुई हैं। ये आदेश वापस लिए गए आलोचना होने पर। यह है इन्दिराशाही का एक नमूना। आचार्य विनोबा भावे गांधी की इच्छासे बंधे हैं। गांधीजीने अपना उत्तराधिकारी श्री जवाहरलाल नेहरूको बनाया था। श्रीमती गांधी श्रीनेहरूकी पुत्री और उत्तराधिकारी है। आचार्य विनोबा भावे इस कारण भ्रष्ट और अभारतीय शासनका समर्थन करनेके लिए बाध्य हैं।

दुविधामें

पर, आचार्य विनोबा भावे जीवनदानी भारतके क्रान्तिकारी फकीरका विरोध करनेकी भी सामर्थ्य नहीं रखते। १९४२ का क्रान्तिकारी 'भारत छोड़ो' आन्दोलनका नेता, नेताजीकी मददके लिए सेना संगठित करने वाला एक महान् भारतीय जन-नेता हिंसाका पथ त्यागकर अहिंसाके पथ पर चलनेको प्रस्तुत हुआ है। इसकी विफलता गांधीवादका भारत से अन्त कर देगा। आचार्य भावे यह भी मानते हैं। अतः ज०प्र०ना० का डट कर विरोध भी नहीं कर सकते। अतः ये भारी दुविधामें हैं। पवनारके सन्तने इस वास्ते एक वर्षका मौन धारण किया है।

विफल अहिंसा

अहिंसा विजयी नहीं बना सकती। ५ अप्रैल १९७४ को श्री जयप्रकाशके नेतृत्वमें पांच लाख जनोंका विराट जुलूस निकला। इन्दिरा ब्रिगेडने इस पर दनादन गोलियां चलाईं। असली निशाना चूक गया, पर १५ व्यक्ति जख्मी हुए। किन्तु, इसके प्रतिशोधमें एक अंगुली भी नहीं उठी। अनुशासित अहिंसा का यह चमत्कार है। परन्तु क्या शासक पार्टी का हृदय बदला ? नहीं।

३ नवम्बरको पटनामें क्या हुआ ? १४४ धारा पर्याप्त नहीं मानी गई। कांटेदार तारें १०-१० मील तक लगा दी गईं। गंगामें चलती नौकाएं डुबो दी गईं। रेल बस ट्रक जनक्रान्ति

के समर्थकोंके लिए बन्द रहे। साइकलें छीन ली गई। फिर भी ११ लाख पुलिसके मुकाबले १० लाख क्रान्ति सैनिक पहुँच गए। ज० प्र० ना० भी गांधी मैदान पहुंच गये। जुलूस चला। यह निःशस्त्र था। फिर भी पुलिस इस पर टूट पड़ी। ज० प्र० ना० पर लाठी बरसी। अश्रुगैस छोड़ी गई। दानवी पाशविक शक्तिका नग्न ताण्डव नृत्य हुआ। मूर्च्छित ज० प्र० ना० पर पुनः हमला किया गया। भारत, विशेषकर पटनाके बिहारका भाग्य तेज था। एक बिहारी सैनिकसे यह दृश्य नहीं देखा गया। वह कूद कर फांदता हुआ सेंट्रल पुलिसके घेरेमें पहुँच गया। दोनों हाथ उठाकर बोला 'क्या जे० पी० को मारने पर ही तुले हुए हो? तुमको इसका किसने आर्डर दिया है?' उसकी इस गर्जनाने अन्य अफसरोंका ध्यान इधर खींचा। सैंट्रल पुलिसके जवान नौ दो ग्यारह हो गए। भारतका सौभाग्य बच गया। बी.बी.सी. ने इस पर टिप्पणी करते हुए कहा—"यदि हम इस कठोर दमन नीतिका अनुसरण करते तो हम कमसे कम और सौ साल भारत पर राज्य कर सकते थे।" परन्तु पवनारका सन्त मौन रहा। नई दिल्ली मुस्कुराई। अहिंसा कोई प्रभाव उत्पन्न न कर सकी!

इसके मुकाबले ११ नवम्बरको शासक पार्टी कम्युनिस्ट पार्टीका जुलूस सरकारी मशीनरीकी पूरी सहायतासे मुफ्त रेल बस यात्राके साथ हथियारोंसे लैस होकर निकला। इसमें लगभग ढाई लाख लोग थे। इस पर कहते हैं बिहार सरकारने ढाई करोड़ रु० खर्च किया। जनता ज० प्र० के साथ नहीं है, सरकारके साथ है, यह सिद्ध न हो सका। अतः इसने दफ्तरोंमें घुसकर बाबुओंको पीटा। ये हस्पतालमें हैं। यह शासक पार्टीने भी अनुभव किया। अतः शासक पार्टीने ५ करोड़ रु० खर्च किया और १६ नवम्बरको जुलूस श्री बरुआके नेतृत्वमें निकाला। नई दिल्लीसे पार्लमैंटके सदस्य पटना पहुँचे। फिर भी मंत्रियों और एम. पी. लोगोंके दर्शनके वास्ते लोग नहीं पहुंचे। बैंडबाजोंके साथ बरातके समान निकला जुलूस आध घंटेमें समाप्त हो गया। श्री बरुआ बिहारके गवर्नर रहे थे। फिर भी पटनाने उनके दर्शनोंका पुण्य नहीं माना। श्रीमती गांधीने इस निराशाको दूर रखनेके लिए लखनऊमें अपने पक्षकी रैली १५ दिसम्बरको की। आर्डर निकाला गया, ० करोड़ यूपियनोंमेंसे पांच लाख लखनऊ पहुँचे। सरकारी अफसर अपने निभागोंके बाबुओंके साथ लखनऊ पहुँचे। उनको विशेष भत्ता मिलेगा। जनता का नेता कौन है? इसका निर्णय करनेका कैसा विचित्र तरीका है? क्या यह जनक्रान्ति को अहिंसाका मार्ग छोड़नेको विवश न करेगी। केन्द्रीय यादव रिपोर्ट है, ९४ प्रतिशत बिहार की जनता जे० पी० के साथ है। वह रेडियो को सच्चा नहीं मानती। श्रीमती गांधी सम्भवतः यही चाहती है। बिहारमें मिलीटरी पुलिसकी और दो डिवीजनें तैयार की गई हैं। इसमें अन्यून २०,००० नौजवानोंका इन्तजाम श्रीमती गांधीने कर दिया है। शायद ये नौजवान श्रीमती गांधीके नहीं, ज० प्र० ना० के नौकरी पानेके लिए कृतज्ञ होंगे। श्रीमती गांधी सेनाकी मददसे जनक्रान्तिसे लड़नेको उत्सुक हैं। जे० पी० इसीको बचा रहे हैं, पर कब तक। अहिंसा सभ्य सरकारका हृदय पलट सकती है। प्रैसीडैन्सी जेलमें नजरबन्द लड़कियों

और युवतियोंसे पाशविक बर्बर बर्ताव करने वाली सरकारका नहीं। यह अमानुषिक बर्ताव बेहोश न होने तक रैक्टममें लोहेका दण्डा डालने वाली इन्दिरा सरकारका क्या ज० प्र० ना० की क्रान्ति हृदय बदल सकेगी ?

गुजरातसे समाप्ति

नव-निर्माण-समिति इन्दिरा सरकारसे टकराकर छिन्न-भिन्न हो गई। पर वह शासक पार्टीका जीवन दीप भी बुझा गई। राष्ट्रपति की सरदार पटेलके जन्म गांवकी यात्रा, प्रधान मंत्रीकी गुजरातकी दो यात्राएं और पार्टीके नए अध्यक्ष श्री बरुआकी गुजरातकी तीन यात्राएं भी कांग्रेस कमेटीका निर्माण नहीं कर सकी। प्रादेशिक कांग्रेस कमेटीका अध्यक्ष ही नहीं मिल रहा। ख्याल है १९७५ फरवरी में होने वाला चुनाव पार्टी सरकारी मशीनरी की सहायतासे लड़ेगी। कहा तो यहां तक जाता है कि गुजरात विधानसभाका चुनाव १९७५ में नहीं होगा। जब होगा तो लोकसभा के चुनावके साथ ही होगा। राष्ट्रपतिका शासन तीन वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है। केरलमें ऐसा हो चुका है। पार्लमेंट्री शासनको इस सीमा तक पक्षाघातकी बीमारी लग चुकी है। जनता श्रीमती गांधीके साथ है, इसका क्या यह एक प्रमाण नहीं ? है भी और नहीं भी। क्योंकि बड़ौदा नरेश सदृश प्रगतिशील पुनः इन्दिरा कैम्पमें आ गए हैं। किन्तु, श्री हितेन्द्र देसाई अनेक बार उनके इन्दिरा कांग्रेसमें आने की घोषणाओंके बाद भी वह मेंडकके समान हर बार छिटक गए। इस बार तो वह सिंडीकेट कांग्रेसके चुनाव अभियानके सेनापति नियुक्त हुए हैं। श्रीमती गांधीके साथ है—न जनता !

अनभ्र बज्रपात

रेलवे मंत्री श्री ललितनारायण मिश्रका देहावसान

शासन-कुशल रेलवे-मंत्री श्री ललितनारायण मिश्रका बम-दुर्घटनामें ३ जनवरी १९७५ को प्रातः साढे नौ बजे दानापुरमें आपरेशन-टेबल पर ही देहावसान हो गया। बिहारका एक भाग्य सूत्रधारक और कांग्रेसका दृढस्तम्भ गिर गया। विदेशी व्यापार बढ़ानेमें श्री मिश्रने अद्भुत सफलता प्राप्त की। निर्यात-व्यापारका एक विशिष्ट मानदण्ड स्थापित किया। आपके आकस्मिक देहावसानसे भारत सरकारने एक कर्मठ मंत्री, बिहारने एक सुयोग्य नेता और भारतवर्षने एक धर्मपरायण प्राचीन परम्पराका भक्त खो दिया।

'ज्योतिष्मती' इस राष्ट्रीय विपत्तिमें परम प्रभुसे प्रार्थी है कि—शोक सन्तप्त मिश्र-परिवारको शान्ति और मृत आत्माको सद्गति प्रदान करे।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

नवग्रहयोगकी भीषण भविष्यवाणीका भय व्यर्थ है

भारतीय गणराज्यके २६वें वर्षका दिग्दर्शन

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

[स्थानाभावके कारण यह स्तम्भ यहां संक्षेपमें ही दिया गया है । नये विक्रमी वर्ष सं० २०३२ का विशेष विचार आगामी अंकोंमें दिया जावेगा । —सम्पादक]

अभी गत अक्टूबर मासमें अंग्रेजीके कुछ पत्रोंमें फ्रांस, अमेरिकाके ज्योतिर्विदोंकी भविष्यवाणी प्रकाशित हुई है—"कि सन् १९८२ में नवग्रहोंका योग हो रहा है, जो १८९ वर्षोंके बाद आ रहा है, इसके विनाशकारी भयंकर परिणाम होंगे । केलिफोर्निया तथा विश्वके अन्य भागोंमें भयंकर भूकम्प आ सकते हैं । सूर्यकी चुम्बकीय शक्तिमें वृद्धि हो जानेसे सूर्य में बड़े विस्फोट होंगे, जिससे भूमिके बाह्य पर्यावरण, संचार साधनोंमें प्रतिकूल प्रभाव पड़ने एवं ऋतु विपर्यय होनेसे पृथ्वी पर अप्रत्याशित विनाशकारी घटनाएं घट सकती हैं ।" यह भविष्यवाणी एक अंग्रेजी पत्रिका 'नेचर' के भौतिक विज्ञान-सम्पादक मि० जान ग्रिबिन और एक अन्तरिक्ष शोधकेन्द्रके शोधकर्ता मि० स्टीफेन प्लेगमेनने 'दि जुपिटर इफेक्ट' नामक पुस्तकमें की है । फ्रांसके १५० से अधिक वरिष्ठ ज्योतिषियोंने भी इस भविष्यवाणीकी पुष्टि की है ।

आगामी सं० २०३९ कार्तिक कृष्णा ३० सोमवार दि० १५ नवम्बर १९८२ को सायन गणनासे सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र और हर्शल वृश्चिक राशिमें रहेंगे, नेपच्यून धनु:में, प्लुटो कन्यामें, मंगल मकरमें और शनि तुलामें, राहु कर्कमें और केतु मकर राशिमें रहेगा । इस प्रकार केवल ६ ग्रहोंका योग बनता है, न कि नौ ग्रहोंका, अतः यह भय व्यर्थ है। पता नहीं इन समुन्नत पश्चिमी राष्ट्रके वैज्ञानिकोंने यह भूल कैसे कर दी ? १९८२ में नौ ग्रहोंका योग तो नहीं है, किन्तु आगामी सन् १९८०-८१ से कुछ अन्य ग्रहयोग ऐसे बन रहे हैं जो विश्वमें भयंकर भूकम्प, भूस्खलन, युद्ध, महामारी, अवर्षण, जलप्लावनादि नानाविध प्रकृति-प्रकोपसे जन धनका विनाश करेंगे । अणुविस्फोट युद्धोन्मादसे भी कुछ राष्ट्रोंके मान चित्र आगामी दस वर्षोंमें बदल जावेंगे । जैसा कि मैंने गत वर्ष २०३१ वि० के पंचांगमें पृष्ठ २६ पर लिखा था –"विश्वयुद्धका बीज इस वर्ष २०३१ वि० के उत्तरार्धमें बोया जायेगा । ६ वर्ष बाद यह विष वृक्ष पनपकर सन् १९८०-८१ में फल देना प्रारम्भ करेगा, जैसा कि हम गत वर्ष भी लिख चुके हैं ।"

भारतीय गणतन्त्रका २६वाँ वर्ष

सं० २०३१ शके १८९६ पौष शु० १४ रविवार दि० २६ जनवरी १९७५ को रात्रिमें भा० स्टै० टा० २०।८ (इष्ट घटयादि ३२-११) पर सिंह लग्नमें भारतीय गणतन्त्रको २६वां

वर्ष प्रवेश होगा। उस समयकी ग्रहस्थिति यह है—

गणतन्त्र वर्ष लग्न

६
४
७ ह.
५
३ चं.श.
रा.प्लू.
२ के.
८ मं.
बुगु.शु. ११
१ ने.
१२
१०सू.

गणतन्त्रके इस २६वें वर्षका लग्नेश सूर्य षष्ठस्थ है, बुध गुरु शुक्र सप्तम केन्द्रस्थ शुभ माने जाते हैं। परन्तु गुरु शुक्र दोनों परस्पर शत्रु हैं, तथा राज्येश अष्टमेशका योग होना भी गणतन्त्रके लिए शुभफलकारक नहीं है। जन्मलग्न वर्षलग्नमें षडष्टकयोग भी भारतीय गणतन्त्रके लिए अग्निपरीक्षाका है। धनेश बुध नीचाभिलाषी है और धनभाव धनेश शनि मंगलसे दृष्ट है अतः आर्थिक संकट बढ़ेगा, वर्षारंभमें ही करोंका भारी बोझ प्रजा पर पड़ेगा। गरीबी और मँहगाई दूर नहीं होगी। चन्द्रमा शनिका मंगलसे प्रतियोग है अतः शासकोंमें अधिनायकतन्त्रकी भावना उग्र होगी, फलतः मौलिक नागरिक अधिकारों और प्रेसकी स्वतन्त्रता पर अधिक प्रतिबन्ध लगेंगे। वर्षारम्भमें चैत्र शु. १५ दि० २५ अप्रैल ७५ को शनि पुनर्वसुनक्षत्रमें प्रवेश करेगा, यहांसे आगे पंजाब, काश्मीर, सौराष्ट्र, सिन्ध और पूर्वीय भारतमें कहीं दुर्भिक्ष आतंक प्रकृतिप्रकोप, तो कहीं राजनैतिक गतिरोध, मंत्रिमण्डलोंमें परिवर्तन, चोरी, डाके, हत्याकाण्ड, तो कहीं दुर्घटना महामारी विषूचिका हैजा, लू आदिसे असन्तोष व्यापेगा। फसलमें हानि होगी, अग्निकाण्ड और यान दुर्घटनाएं अधिक होंगी। यथा—

आदित्ये पाञ्चनदप्रत्यन्तसुराष्ट्र सिन्धु सौवीरान्।
पुष्ये घाण्टिक घौषिकयवनवणिक्कितवकुसुमानि ॥

आगे १५ नवम्बर ७५ से २६ मार्च ७६ तक शनि कर्क राशिमें वक्री रहेगा और ७ नवम्बर ७५ से २० जनवरी ७६ तक मंगल भी वक्री रहेगा अतः इस अवधिमें संसारमें अनेक आतंकपूर्ण अकल्पित घटनाएँ घटेंगी। सामाजिक राजनैतिक वातावरण उग्र बनेगा। राजनैतिक दलोंमें सांठ-गांठ अधिक होगी। भ्रष्टाचार मिटाने और जनता जनार्दनकी सेवा करनेके आश्वासन दिये जावेंगे और शासनकी ओरसे कुछ क्षणिक सुख सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जावेंगी। गणतंत्र वर्षारम्भके प्रारम्भ (फरवरी मार्च १९७६) में केन्द्रीय मंत्रिमण्डलमें कुछ फेर बदल होगा। प्रधानमंत्री कोई अप्रत्याशित महत्वपूर्ण घोषणा करेंगी। रेलभाड़ा बढ़ेगा।

इस समय यत्र-तत्र सर्वत्र चुनावचर्चा जोरों पर है और कई लोग फरवरी मार्चमें ही मध्यावधि चुनावकी आशा लगाये बैठे हैं। परंतु, इस २६वें गणतन्त्र वर्षकी प्रथम तिमाही में चुनाव होनेका प्रबल योग प्रतीत नहीं होता। इस वर्षका पूर्वार्ध अधिक सामाजिक राजनैतिक संकटोंका है। हड़ताल हंगामे हुल्लड़ प्रदर्शन अधिक होंगे। अनेक अकल्पित घटनाएं होंगी। नये वर्षका विस्तृत भविष्यफल सं० २०३२ वि० के 'श्रीविश्वविजयपंचांग' में दिया है, वहां देखें।

★

१९७५ की विश्वप्रवृत्तियां और तनाव

[लेखक :—श्री बेंगलोर वेङ्कट रमण सम्पादक 'एस्ट्रालाजीकल मेग्जीन']

[विद्वान् लेखकने नये वर्षकी यह भविष्यवाणी 'श्रीविश्वविजयपंचांग' सं० २०३२ में प्रकाशनार्थ भेजी थी, परंतु बहुत विलम्बसे प्राप्त होनेके कारण पंचांगमें प्रकाशित न हो सकी। पाठकोंके लाभार्थ यहां प्रकाशित की जा रही है। स्थानाभावके कारण वर्षलग्न नवांश कुण्डली और ग्रहयोगका उल्लेख छोड़ दिया है। आवश्यक फल विचार संक्षेपमें ही दिया गया है। मूल लेख अंग्रेजीमें था, इसका हिन्दी अनुवाद चि० सुधाकर शर्माने किया है। यह पूरा लेख अंग्रेजीमें जनवरी १९७५ के Astrolozical magagine में भी प्रकाशित हुआ है। —सम्पादक]

इस वर्षके ग्रहयोगसे ऐसा लगता है कि प्रजातन्त्रवादी देशोंमें जनतान्त्रिक और अधिनायकवादी शक्तियोंमें संघर्ष होगा और अधिनायकवादी प्रबल होकर सत्ता पर अधिकार करेंगे। श्रमिक समस्याएँ उभर कर सामने आवेंगी और श्रमिक अहितकर आन्दोलनोंके कारण अपने कुछ अधिकार खो देंगे सूर्यके सेनापति होनेके कारण सैनिक देशभक्त, कर्त्तव्यपरायण होंगे और दुर्बल सिद्धान्तहीन राजनेताओंकी अवहेलना करेंगे। किसीको भी आश्चर्य नहीं होना चाहिए यदि कुछ देशोंके शासक जो कि जनप्रतिनिधि होनेका स्वांग करते फिरते हैं, सेनानायकोंके हाथकी कठपुतली बन जावें। प्रधानमंत्री चन्द्रमा पर शनिकी दृष्टि है। उन देशोंका नेतृत्व जिनमें स्त्रियां प्रधान हैं, में चन्द्रमाकी क्षीण प्रवृत्तिके कारण जनताको कठिनाइयोंमें पड़ना पड़ेगा और कानून व व्यवस्थाकी स्थिति बिगड़ेगी। १९७५-७६ में भयानक मन्दा आवेगा और अमेरिकी अर्थव्यवस्था पर कुप्रभाव पड़ेगा। १८ अगस्त को शनि राहुसे त्रिकोण योग करेगा इसके परिणाम स्वरूप भारत पर साढ़ेसातीके प्रभाव में अभिवृद्धि होगी। ज्योतिषके ग्रन्थोंके अनुसार मिथुन परसे शनिके संचारके कारण शासकोंके मतभेद उग्र होते हैं और सौराष्ट्र विशेष रूपसे प्रभावित होता है। कोई आश्चर्य न होगा कि यदि गुजरातकी गम्भीर घटनाओं के कारण केन्द्रकी नींद हराम हो जावे। गुरु अतिचारके कारण सामान्यतया विश्वकी और विशेषतया भारतकी उन समस्याओंका जिनका मूल राजनैतिक बुराई है, कोई समाधान नहीं मिल पावेगा। ४ जून और २९ जुलाईको गुरु और शनि केन्द्रमें होंगे। गुरु मंगलकी १६-६-७५ को युति होगी। इन तिथियोंके आसपास भयानक भूकम्प आ सकते हैं। विशेष रूपसे उन क्षेत्रोंमें जहां गुरु और मंगल, युतिके समय खमध्यमें होंगे।

दि० ११ और २५ मईके ग्रहण जो कि १४ दिनके अन्तरसे होंगे, जिनमेंसे एकका पाकिस्तानके लग्न और अष्टम भावसे सम्बन्ध होगा। अतः पाकिस्तानकी सरकार और भारत पाक सम्बन्धों पर दूरगामी प्रभाव पड़ सकता है। मंहगाई बढ़ती जावेगी और औद्योगिक मन्दा आवेगा। दूरकी यात्राओंसे सम्बन्धित दुर्घटनाएं होंगी। दूसरे दो ग्रहण जो कि तुला और वृषभमें होंगे का भी कुप्रभाव होगा, क्योंकि

तब मंगल बक्री होगा जिससे फसलें नष्ट होंगी और प्राकृतिक विपत्तियां आवेंगी।

भारत

वर्षारम्भके समय गुरु नाड़ीवृत्तके समीप होगा जिससे भयंकर गर्मी पड़ेगी। वसन्त वायुपूर्ण रहेगी किन्तु झंझावात नहीं आवेंगे। वर्षा बहुत न होगी, तेज पूर्वी हवा जलभरे बादलोंको नष्ट कर देगी और प्राणों तथा सम्पत्तिकी भी हानि होगी। तथापि मानसून निराश नहीं करेंगे। फसलें अच्छी होंगी, किन्तु सरकारकी अव्यवस्थाके कारण मई जून तक उपभोक्ता सामग्रीका मूल्य और बढ़ेगा। वर्षके मध्यमें उत्तरी कर्नाटक, गुजरात, बिहार, उड़ीसा और महाराष्ट्रके कुछ भागोंमें अकाल पड़नेकी सम्भावना है। वर्षा समान रूपसे नहीं होगी। उत्तरी भारतमें पर्याप्त वर्षा होगी, और नदियोंमें बाढ़ आवेगी, किन्तु दक्षिणी भारतमें भाद्रपद मासमें (६-९-७५ से १०-९-७५ तक) स्वल्प वर्षा होगी। नवम्बरमें समुद्री तूफान आवेंगे और भारतके पूर्वी और पश्चिमी तट पर जलयान दुर्घटनाएं घटित होंगी। देश की एकता भाषाई और साम्प्रदायिक क्षेत्रीयता के संघर्षोंमें उलझकर अस्तव्यस्त होगी। बृहस्पतिकी दृष्टिके कारण उत्पन्न स्थितियोंका सामना दूरदर्शिता और योग्यतासे होगा। जनता की विचारधारा और मन, हीन मनोवृत्तिके होंगे। भाषाई उपद्रवों, और क्षेत्रीयताके कारण बम्बई, कलकत्ता और मद्रासमें हिंसात्मक घटनाओंके संकेत हैं। अर्थको प्राप्त करने और व्यय करनेमें अधिक यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया जावेगा। महंगाई और घाटेकी अर्थव्यवस्थासे बचनेके लिए योजना कार्य ठप्प पड़ेंगे। व्यापार सूर्यके अधीन होने से और व्यापारका अधिपति ग्रह बुध अपने ही नक्षत्रमें पांचवें भावमें स्थित होनेसे सरकार अतिवादी अर्थनीतिके खतरोंको भांप सकेगी और अंशतः सरकारी नियन्त्रण हटाया जावेगा, जिससे उत्पादन बढ़ानेमें प्रोत्साहन मिलेगा। बुध पर शनिकी दृष्टि होनेके कारण कुछ कम्पनियां औद्योगिक मन्दीकी शिकार होंगी। सरकार कर्मचारियोंकी वेतनवृद्धिकी मांग स्वीकार नहीं करेगी। डाक तार विभाग, विद्युत विभाग और कुछ एक अत्यावश्यक सेवाओंमें होने वाले आन्दोलन बुरी तरह विफल होंगे। मंहगाई बढ़ेगी। खाद्य समस्याके सुलझानेके लिए ऐसे कदम उठायें जावेंगे जिससे समस्या और उलझ जावेगी।

संगठन कांग्रेसका मद्रासमें प्रभाव बढ़ेगा। करुणानिधीको कठिनाईका सामना करना पड़ेगा और तमिलनाडुके एक दो मंत्रियोंको सत्ताच्युत किया जावेगा, किन्तु करुणानिधी मंत्रीमंडलको कोई खतरा नहीं है। उनका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। कलकत्तामें खमध्य पर मंगल शनिका प्रभाव है। पश्चिम बंगाल के रंगमंच पर श्री रायके नेतृत्वकी समाप्तिका नाटक अभिनीत होता दिखाई पड़ेगा। श्री राय को यदि मुख्य मंत्री बने रहना है, तो कठिन समयका सामना करना पड़ेगा। कांग्रेसके अन्तः-संघर्ष और आन्दोलनोंके कारण कानून और व्यवस्थाकी स्थिति बिगड़ेगी। मंगलका वृषभ परसे संक्रमणके बाद कर्नाटकमें नेतृत्व परिवर्तन की मांग जोर पकड़ेगी। मंत्रिमंडलकी स्थिरता को खतरा है।

पटनामें वृश्चिकके २३° ऊदय हो रहे

हैं। नवमांश लग्न मकरमें मंगल बारहवें है! श्री जयप्रकाशके आन्दोलनके शान्तिपूर्ण ढंगसे चलते रहनेके लिए शुभ नहीं है। तथापि जब गुरु मीनमें प्रवेश करेगा तब प्रधानमंत्री जयप्रकाशके आन्दोलनके मूल तत्वको मान्यता देगी। इस विषय पर बादमें हम विस्तारसे विचार करेंगे। इस आन्दोलनसे अनेक सत्तासीन कांग्रेसजनोंको आत्मवेदना होगी और महत्वपूर्ण घटनाएं होंगी। आन्दोलनकी गूंज उत्तर-प्रदेश, मध्य-प्रदेश, राजस्थान और एक दो दक्षिणी राज्योंमें सुनाई पड़ेगी।

१९७५ में भारतीय लोकदल कांग्रेसका न तो विकल्प बन सकेगा, नहीं उत्तरप्रदेशकी शोचनीय राजनीतिको रूपान्तरित कर सकेगा। शनैः शनैः दल शक्तिशाली होगा। और कुछ प्रान्तोंमें कांग्रेसको चुनौती देगा। संक्षेपमें भारतमें ग्रहस्थितिके प्रभावसे मूल्य वृद्धि होगी, उत्पादन कम होगा, बेकारीकी समस्या उग्र होगी और सरकारके विरुद्ध आन्दोलनोंसे जनताकी हालत शोचनीय और करुणाजनक होगी। जीवन-स्तर गिरेगा। वादों पर कम ध्यान जावेगा और यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया जावेगा। प्रेस व विचार अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रताका गला घोटनेके घृणित प्रयत्न होंगे। अनावृष्टिसे उड़ीसा, गुजरातकी खरीफ की फसलें नष्ट होंगी। सिद्धान्तहीन कर्मचारी आन्दोलन विफल होंगे। विचित्र नाटकीय स्थितिमें उड़ीसा मंत्रीमंडल भंग हो सकता है। सिक्किमकी आन्तरिक स्थिति बिगड़ेगी और चोग्यालको निष्कासित किया जा सकता है। राजस्थान और उत्तरप्रदेशमें अरुचिकर राजनैतिक दुष्कांड होंगे। आगेका वर्ष कठिनाईका है। चीन, पाकिस्तानसे सम्बन्ध नहीं सुधरेंगे, किन्तु युद्ध भी नहीं होगा। गुरुके बलवान् होने के कारण देश संकटसे निकल जावेगा।

रावलपिंडीमें मंगलकी केन्द्रस्थितिके कारण भीमकाय सैनिक व्ययमें और भी बढ़ोतरी होगी। पाकिस्तानकी स्थल, जल और वायुशक्ति बहुत बढ़ेगी। भारतको इससे सावधान हो जाना चाहिए। मास्कोका रुख भी पाकिस्तानके प्रति अनुकूल हो सकता है और तेल सम्पन्न अरब देश पाकिस्तानको विपुल अर्थ सहायता देंगे।

विलम्बका कारण

यह अङ्क हम एक सप्ताह पूर्व दि० २० जनवरी १९७५ को पाठकोंके पास पहुँचाना चाहते थे। परन्तु बिजली संकटके कारण छपाईका काम निश्चित समय पर पूर्ण न हो सका। इस समय सर्वत्र बिजलीका घोर संकट चल रहा है। पंजाब हरियाणामें दिनभर बिजली गायब रहनेसे सब उद्योग ठप्प पड़े हैं। हिमाचल भी अछूता नहीं है। निश्चित समय पर अंक प्रकाशित करनेकी सब कुछ तय्यारी होते हुए भी बिजलीके बिना छपाई समय पर पूर्ण न हो सकी। इस संकटके कारण पृष्ठ भी कुछ कम करने पड़े और जैसे तैसे २५ जनवरीको यह अंक हम डिस्पेच कर पाये हैं। यद्यपि माघ मासके प्रारम्भ २८ जनवरी तक ग्राहकोंको अंक अवश्य मिल जायेगा, तथापि अपनी पूर्व सूचनानुसार दो सप्ताह पूर्व मकर संक्रान्ति १४ जनवरीको यह अंक प्रकाशित न हो सका, इसका हमें खेद है। इस संक्रमणकालमें जैसा और जो भी कुछ बन पड़े उसे ही ठीक मानकर सन्तोष करना है।

व्यवस्थापक—ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचल-प्रदेश)

"श्रीविश्वविजयपंचांग"

सं० २०३२ वि० सन १९७५-७६ ई०

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा सम्पादित संचालित ३२वें वर्षका यह पंचांग गत दिसम्बर मासके प्रारम्भमें प्रकाशित हो चुका है। अस्वस्थताके कारण श्री त्रिवेदीजी इस वर्ष पंचांग प्रकाशनार्थ शीघ्र अजमेर न जा सके। राजप्रकाशनने इस वर्ष कुछ पृष्ठ, फायनल प्रूफ पर सम्पादकका प्रिण्टआर्डर लिये बिना ही प्रथम लाटमें लगभग बीस हजार पंचांग छाप दिये—उनमें कुछ अशुद्धियां छप गई हैं, इसका हमें खेद है। शेष साठ हजार पंचांगोंमें श्री त्रिवेदीजीने अजमेर पहुँचकर अशुद्धियां ठीक करवा दी हैं। जिन २०००० ग्राहकोंके पास प्रथम लाटमें छपे पंचांग पहुँचे उनमें प्रेसकी भूलको यथास्थान ठीक करके पढ़नेकी कृपा करें।

गतवर्ष हमें कई ग्राहकोंकी शिकायतें मिलीं थीं कि—"राजप्रकाशनको पंचांगका मूल्य और डाकखर्च मनीआर्डर द्वारा महीनों पहले भेज देने पर भी समय पर न तो पंचांग मिला और न पत्रोंका उत्तर ही।" हमने इन शिकायतोंका समाधान करनेके लिए राजप्रकाशनको आदेश दे दिया था। फिर भी यदि किसी पंचांग-प्रेमीको राजप्रकाशनसे कोई शिकायत हो तो वह संचालक 'श्रीविश्वविजयपंचांग' ज्योतिष्मतीनिकेतन सोलनको बतावें, उनकी शिकायत दूर की जावेगी। अब नये वर्ष सं० २०३२ के 'श्रीविश्वविजयपंचांग' का मूल्य ३·५० है। एक पंचांग पर डाकरजिस्ट्री खर्च १·६५ कुल ५·१५ मनीआर्डर द्वारा नीचे लिखे पते पर ज्योतिष्मतीके मूल्यके साथ या अलग भेजने पर हमारे यहांसे भी पंचांग रजिस्ट्री द्वारा ग्राहकोंको शीघ्र प्राप्त हो सकेगा। श्रीगजेन्द्रविजयपंचांग का मूल्य १·२५ है। वर्तमान वर्ष सं० २०३१ वि० सन् १९७४-७५ के 'श्रीविश्वविजयपंचांग' की कुछ प्रतियां हमारे यहां सोलनमें बची हैं। सुन्दर सफेद कागज पर छपे १५० पृष्ठके इस पंचांगका मूल्य २.५० है, डाकरजिस्ट्री १.५०। आठ रुपये मनीआर्डर द्वारा भेजने पर दोनों वर्षके पंचांग प्राप्त हो सकेंगे।

व्यवस्थापक—ज्योतिष्मती निकेतन, सोलन (हिमाचल प्रदेश)

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजयपञ्चांग' से]

फरवरी १९७५ ई०

ता० २ रविवार—स्वामी विवेकानन्द जयन्ती।
६ गुरुवार—षट्तिला एकादशी व्रत।
८ शनिवार—शनिप्रदोष, मेरुत्रयोदशी जैन
११ मंगलवार—मौनी अमा० माघमेला प्रयाग
१२ बुधवार—कुम्भमें सूर्यसंक्रान्ति मु० १५ पुण्यकाल अगले दिन, चन्द्रदर्शन।
१५ शनिवार—तिलचौथ।
१६ रविवार—वसन्तपंचमी श्री ५
१९ बुधवार—श्रीदुर्गा ८ भीष्माष्टमी।
२२ शनिवार—जयाएकादशी व्रत।
२३ रविवार—प्रदोषव्रत, भीष्म १२।
२५ मंगलवार—सत्यव्रत, ललिता जयन्ती श्रीविद्याजयन्ती, जैन रथयात्रा।
२६ बुधवार—माघी पूर्णिमा, श्रीरविदास ज०
२८ शुक्रवार—श्रीगणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय [स्टे.टा० २१।११

मार्च १९७५ ई०

ता० ६ गुरुवार—समर्थ श्रीरामदास नवमी।
८ शनिवार—विजया एकादशी व्रत।
१० सोमवार—सोमप्रदोष व्रत।
११ मंगलवार श्रीमहाशिवरात्रि १४ व्रत।
१२ बुधवार—अमावस्या पुण्यकाल।
१४ शुक्रवार—मीनमें सूर्यसंक्रान्ति सु० ३०, चन्द्रदर्शन मु० ४५।
१५ शनिवार—श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती
२० गुरुवार—होलाष्टक प्रारम्भ।
२३ रविवार—आमला एकादशीव्रत स्मार्तोका
२४ सोमवार—आमला एकादशीव्रत वैष्णवोंका
२५ मंगलवार—भौमप्रदोषव्रत।
२६ बुधवार—होलिकादहन भद्रामुखोत्तर स्टे० टाइम रात्रि १०।९ के बाद
२७ गुरुवार—सत्यव्रत, धुलेंडी धूलिवन्दन।
२८ शुक्रवार—होला १ वसन्तोत्सव आम्र-कलिकाप्राशन, मेला आनन्दपुर साहब-पंजाब, गुडफ्राइडे।
२९ शनिवार—श्रीसन्त तुकारामजयन्यती।
३० रविवार—श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टण्डर्ड टा० २१।५७ ईस्टर सण्डे
३१ सोमवार—रंगपंचमी।

अप्रैल १९७५ ई०

ता० २ बुधवार—शीतलासप्तमी।
७ सोमवार—पापमोचनी एकादशीव्रत।
८ मंगलवार—भौमप्रदोष व्रत।
१० गुरुवार – मेला पृथूदक (पिहोवा)
११ शुक्रवार—चैत्री अमावस्या पुण्यकाल।
१२ शनिवार वासन्ती नवरात्रारम्भ, नववर्ष चान्द्रसंव्वत्सर प्रवेश, श्रीगौतम जयन्ती।
१३ रविवार—चन्द्रदर्शन मु० १५।
१४ सोमवार—मेषमें सूर्यसंक्रान्ति पुण्यकाल, मु०३० मेला बैशाखी, गणगौरी पूजन।
१७ गुरुवार—स्कन्दषष्ठी जैन आयंबिल ओली प्रारंभ, मेलामाईसरखाना।
१९ शनिवार—दुर्गाष्टमी, मेला श्रीमनसादेवी।
२० रविवार—श्रीरामनवमी व्रत।
२२ मंगलवार—कामदा एकादशीव्रत।
२३ बुधवार—प्रदोषव्रत, अनङ्गत्रयोदशी।
२४ गुरुवार—श्रीमहावीरजयन्ती (जैन)
२५ शुक्रवार—चैत्रीपूर्णिमा, सत्यव्रत, सिद्धाचल यात्रा, जैन आयंबिल ओली समाप्त

भाई बालकृष्ण व्यास और श्री रघुनाथप्रसाद शर्माका देहावसान

अंग्रेजी नये वर्ष १६७५ का प्रारम्भ दुःखद घटनाओंसे हुआ । ३ जनवरीको बम-विस्फोटसे रेलमंत्रीके निधन और भीषण वायुयान दुर्घटनाने भारतको चौंका दिया। इसी जनवरी मासमें मुझे भी अपने दो स्नेही बन्धुओंके देहावसानका दुःख सहना पड़ा। दि. ७ जनवरी ७५ की पूर्व रात्रिमें मालवमहीके महामनीषि पद्मभूषण श्रद्धेय भाई श्री सूर्यनारायणजी व्यासके छोटे भाई श्रीबालकृष्ण व्यासका उज्जैनमें निधन हो गया। व्यास परिवारसे मेरा आत्मीय सम्बन्ध होनेके कारण 'नाना' का निधन मेरे लिए भी दुखदायी है। पचास वर्ष पूर्व उज्जयिनीके व्यास-गुरुगृहमें अध्ययनकालमें हम सब सहपाठी अष्टवर्षीय बालक बालकृष्ण भाईको 'नाना' नामसे सम्बोधित करते थे। दुर्दैवने 'नाना' को हमसे छीन लिया ! इसके एक सप्ताह बाद आज अभी यह दुःखद सूचना मिली कि दिल्लीमें गत १४ जनवरी ७५ को श्री रघुनाथप्रसादजी शर्माका देहान्त हो गया। शर्माजी जैसा साधुमना निःस्वार्थ सेवाभावी आदर्शपुरुष दिल्ली गुर्जर गौड़ ब्राह्मणसभाको मिलना कठिन है। आप अ०भा० गुर्जरगौड़ ब्राह्मण-महासभाके कोषाध्यक्ष और प्रान्तीय सभाके वर्षों अध्यक्ष रह चुके थे। स्वजातिसे आपको अनन्य स्नेह था। महासभाने एक कर्मठ कार्यकर्ता और जातिबन्धुओंने अपना सच्चा स्नेही खो दिया। इन दोनों बन्धुओंको श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हुए प्रभुसे प्रार्थी हूँ कि दिवङ्गतात्माओंको शाश्वत शान्ति और पारिवारिक जनोंको दुःख सहन करनेकी शक्ति प्रदान करें।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी

एक आत्मकथ्य: पूर्वार्द्ध

हृदय अनुभूति व भावनाका प्रतीक ग्रह चन्द्र (१)

[लेखक :—श्री बालकृष्ण इन्दोरिया]

प्रतिदिनकी तरह ब्रह्मवेलामें प्रारम्भिक दैनिक निवृत्तिके बाद महर्षि जैमिनि अपनी तपश्चर्यामें लीन थे। श्रावण मासकी पूर्णिमा का पूर्वदिन सोमवार था। एकाएक महर्षिने देखा कि चन्द्रदेव स्वयं उपस्थित हैं और अभयमुद्रामें आशीर्वाद देते हुए मुस्करा रहे हैं। महर्षि जैमिनिने दण्डवत करते हुए देवको प्रणाम-अर्घ्य प्रस्तुत किया। चन्द्रदेव बोले, 'महर्षिवर जैम ! लम्बे अर्सेसे तुम इस अविराम तपश्चर्यामें व्यस्त हो, किस कामनाके हेतु इस दुष्कर कार्यमें लगे हो ?'

महर्षि बोले—'चन्द्रदेव ! मैं आपका दास हूं ; आप मेरे देव हैं। मुझे किसी कामना या लालसाने इस तपश्चर्यामें प्रेरित नहीं किया है। आपके दर्शन स्वरूपकी जानकारीकी उत्कट इच्छा अवश्य थी।'

चन्द्रदेव बोले— 'जैमिने तुम मेरे परम-उपासक हो, प्रिय हो अतः मैं तुम पर प्रसन्न हूं, तुम्हारी कामनाकी पूर्तिहेतु आज मैं अपने स्वरूप सहित उपस्थित हूं। मेरे स्वरूपकी जानकारी व परिचयमें मैं अपनी आत्मकथाके कुछ पृष्ठों का वाचन करूंगा ताकि तुम्हारी सर्व शंकाएं दूर हो सकें। समस्त तथ्योंको तुम्हें गोपनीय रखना है। मैं सर्व तथ्यों को कलियुगमें प्रचलित गणितीय प्रणालीके अनुरूप प्रकट करूंगा अतः तुम आश्चर्य विहीन-भविष्यद्रष्टा होकर ध्यानपूर्वक सुनो......'

"जब मेरा अवतरण हुआ तो ब्रह्मचक्र त्वरितगतिमें विशिष्ट स्थितिमें गतिशील था। कर्क लग्नकी सुखद जलीय वेला थी। स्वगृही सूर्यदेव मेरे धन भावमें होकर वर्षा ऋतुका संचालन कर रहे थे। सुखेश शुक्र स्वभावमें हो कर मेरे राज्यभाव को सुरक्षित किए हुए था। मेरा पराक्रमफल (बुध) भी स्वगृहमें था। धनु:का प्रबल केतु मेरे षष्ठभावमें वक्रारूढ़ था। तटस्थ शनि मेरे सप्तमभावमें स्वगृही हो कर पौरुष क्षयके साथ सुखहावी था। मेरे भाग्यमें स्वगृही देवगुरु थे और मुझे सौम्यता सुन्दरता एवं आकर्षण शक्ति प्रदान कर रहे थे। राज्येश मंगल भी राज्यस्थित होकर मेरे सुखक्षय को उद्यत था क्योंकि इन्हींकी कृपासे मेरा मुखमण्डल नन्हें धब्बोंसे पूरित हो गया है। व्यवस्थित उच्च राहू अपने स्वभावके अनुसार लालायित होकर मेरी अद्वितीय सुन्दर देहको ग्रसित करने को तत्परतासे उद्यत था। मेरी जन्मकालीन स्थिति सर्वांगीण रूपमें विचित्रता लिये थी। यही प्रधान कारण है कि पाश्चात्य ज्योतिर्विद मुझे स्त्री रूपक मानकर देवी रूपमें प्रतिष्ठा देते हैं जबकि भारतीय पौराणिक शास्त्रोंमें मैं चन्द्रवंशका प्रवर्तक माना जाकर लोक प्रतिष्ठित हूं।"

"मैं महर्षि अत्रि और साध्वी अनुसूयादेवी की तृतीय संतति हूं। एक समय त्रिदेवोंने साध्वी अनुसूया की कोखसे महर्षिके घर पुत्रोंके रूपमें अवतार लेने का वचन दिया था। इसी वचन

बद्धताके कारणहम तीनोंने जन्मधारण किया। दत्तात्रेय(विष्णु) दुर्वासा (महेश)मेरे द्वय अग्रज हैं। मैंने (ब्रह्माने) सोमके रूपमें जन्मधारण किया। आद्यपुरुष मनुकी द्वितीय पुत्री देवहूति मेरी मातामही कर्दम मेरे मातामह हैं। बृहस्पति (गुरु) मेरे मामा हैं। मेरे पितृवर ब्रह्मपुत्र-अत्रिने अनुत्तर नामका तप किया था तदनन्तर महर्षिके नेत्रोंसे जलकी बूंदें गिरनेसे सर्वजगत प्रकाशित हो उठा। दिक्देवियोंने स्त्रीरूपमें उपस्थित हो कर वह पावनजल पुत्र प्राप्तिके हेतु ग्रहण कर लिया किन्तु गर्भ धारणकी असमर्थतासे इन दिक्नारियोंके गर्भस्त्राव हो गया। इसी त्यक्त भ्रूण को सुरक्षित करके तरूण रूपमें प्रकट करने हेतु ब्रह्मा जी मुझे अपने लोक ले गये। ब्रह्मलोकमें सभी ऋषि-मुनि, देव-गन्धर्व एवं अप्सराओंकी स्तुतिके प्रभावसे इसी भ्रूणके तेजकी वृद्धि हुई और पृथ्वी पर दिव्य रत्नोंकी उत्पत्ति हुई। यह मेरे मानवीय रूपकी कथा है।"

"समुद्रमंथनसे पुत्र-रत्न रूपमें मेरा प्रादुर्भाव माना जाता है, जिसे आप लोग आज भी ब्रह्मचक्रमें गतिशील होते देखते हैं। इसी कारणसे मुझे समुद्रपुत्र एवं लक्ष्मीसहोदर कहते हैं। चन्द्रवंशका मैं प्रवर्तक हूं अतः मेरे नाम पर ही चन्द्रवंश को सम्बोधन मिला है। मेरे पितृवरका आश्रम चित्रकूट (प्रयाग)में है। अत्तर सुइया मोहल्ला हमारे आश्रमका अवशेष है। मेरी उत्पत्ति चौल देशमें वर्षा ऋतुके एक सोमवार को हुई थी।"

"मैं तीव्र गतिशील हूं। लगभग बाइस सौ मील प्रति घंटाकी गतिसे मैं अपने मार्ग पर गतिशील रहता हूं। सूर्य अपने मार्ग को जो एक माहमें पूरा करता है, मैं सवा दो दिनों में ही पूरा कर लेता हूं। सूर्यके एक वर्षके मार्ग को एक माहमें, एक पक्षके मार्ग को एक दिनमें पूरा कर लेता हूं। मैं पृथ्वीसे लगभग ढाई लाख मील दूर हूं। मैं पृथ्वीका एक चक्कर लगभग एक माहमें पूरा करते हुए अपनी धूरी का एक चक्कर २७$\frac{1}{3}$ दिनोंमें पूर्ण कर लेता हूं। मेरी आकृति पृथ्वीसे १/४९ है जोकि दो हज़ार एक सौ साठ लाख मील कही जाती है। मेरा मूल त्रिकोण वृषके सताईश अंश है अतः मैं वृष पर उच्च ऐवं वृश्चिक पर नीच होता हूं। मैं मंगलकी राशिमें नीच स्थान पाता हूं तो मंगल भी मेरी राशिमें नीचस्थ होता है। शुक्र मेरा उच्चेश है क्योंकि परम्प्रिया रोहिणी का संरक्षक है। मेरा स्वगृह कर्क राशि है जो भचक्रमें ९०° से १२०° तकका क्षेत्र है। यह राशि उत्तर दिशामें स्थित उपवनतड़ागप्रवासी जलयुक्त, कोमल सौम्य जलाशयी कफ़प्रकृति शूद्र जाति रात्रिबली पृष्ठोदयी चरस्वभावी गुणोंसे युक्त है। इसे कुलीर कर्कटक व कर्कट भी कहा जाता है। मेरा स्वगृह शूद्र जातिका है, किन्तु मैं स्वयं वैश्य जातिका सुन्दर युवक हूं। मैं स्वयं प्रकाशधारक नहीं हूं किन्तु सूर्य से प्रकाश पाकर मैं प्रकाश को परावर्तित करता हूं। मेरा परावर्तित प्रकाश शीतलता के कारण अमृतमय माना जाता है जोकि मेरे संसर्ग का प्रभाव है।"

"मैं कृष्णपक्षकी षष्ठीसे शुक्ल पक्षकी दशमी तक क्षीण हो कर पापी होता हूं एवं शुक्ल पक्षकी दशमीसे कृष्णपक्षकी पंचमी तक पूर्ण ज्योतियुक्त होकर शुभ व बली होता हूं। मैं चतुर्थ भावमें बली, मकरसे छः राशिमें

चेष्टाबली होता हूं। अमावस्याको अस्त, पूर्णिमा को पूर्ण (बलवान्) होता हूं। सौंदर्य का वास्तविक कारक शुक्र है अतः वह सौंदर्य है किन्तु मैं उसका प्रतीक हूं, तभी मुझे शुक्र की वृष राशिमें उच्च स्थान मिला है। यहीं मेरी प्राण प्रिया रोहिणी आवासित है। मानव मुझे सौंदर्यका देवता मान कर उपासना करता है।"

"जम्बुद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्रमें मेरे पन्द्रह मण्डलोंका चित्रण है, ये प्रत्येक मण्डल ५६/६१ योजनका लम्बा चौड़ा क्षेत्र है, इससे लगभग तीन गुण मेरी परिधि है जिसका २८/६१ योजनका बाड़ा है। सबसे अभ्यन्तर मण्डलसे बाहरका मण्डल पांच सौ तेरह योजन अबाधा दूर है। सूर्य बुध मेरे अपने हैं। बुध तो मेरा जारज पुत्र है। मंगल राहु मेरे शत्रु हैं। मैं सूर्यकी संगति अथवा व्यय भावमें निष्फल होता हूं। मैं वृश्चिक, मीन लग्न वालों को शुभ होता हूं। लग्न, चतुर्थ, सप्तम भावका मैं कारक हूं। सिंह, कन्या, धनु, मकर लग्नके जातकों को मैं प्रायः अशुभ रहता हूं। मैं मस्तिष्क, चपलमति, कल्पनाशील, षोडष कलानिधान हूं।"

"मैं सर्वाधिक गतिमान् मन कारक हूं। मेरा पुत्र बुध प्रतिभाकारक एवं महान् गणितज्ञ है। संसारमें मुझे नक्षत्राधीश्वरके रूपमें प्रतिष्ठा मिली है। सूर्यके प्रकाश को मैं परावर्तन करके विशुद्ध प्रकाश देता हूं, यह मेरी शुभ्रता है। मेरी दृष्टि सर्वत्र समान है, अतः अपनी स्थितिसे सप्तम भाव को मैं पूर्ण दृष्टिसे देखता हूं। मैं सदैव मार्गी गतिसे पश्चिमसे पूर्वमें गतिशील रहता हूं। मेरे क्षेत्रमें सूर्य गतिशील होते समय धीमा व निश्चल सा हो जाता है वह उत्तरसे दक्षिणकी ओर हटता प्रतीत होता है जिसके फलस्वरूप समुद्र पर प्रभाव डाल कर वर्षाका मैं कारक होता हूं। मेरा प्रभाव चीन, स्काटलैंड, न्यूजीलैंड, कनाडा, रूस, अल्जीरिया आदि राष्ट्रों पर है। भारतके सिन्ध, काठियावाड़, कच्छ, गुजरात मेरे प्रभावी क्षेत्र हैं। न्यूयार्क मेरा नगर है और मुझे कई नामोंसे सम्बोधन मिला है—अत्रिज, जैव, अब्ज, ग्लौ, मृगांक, शशांक, उडुपति, तारापति, इन्दु, सोम, राकापति, शशधर, क्षपाकर, द्विजराज, विधु, राकेश, कलेश, शुभ्रांशु, तुहिनगु, कुमुद, हिमकर, अब्धिज, नैत्रयोनि, अमृत, अंबु, जलज, शशी, अभिरूपा, शीतांशु, शीतरश्मि, नक्षत्रेश, समुद्रागज, कमर, शीत-द्युति, नभकी रानी, नभका आश्चर्य आदि मेरे ही पर्याय नाम हैं।"

"मैं ही एकमात्र ऐसा ग्रह हूं जो पुरुषों में पुरुष भी और नारियोंमें नारी भी माना गया हूं। अतः मेरा भाग्य देखें कि लोग मुझे ग्रहराज आदित्य की रानी कहते हैं। मैं ग्रह नहीं उपग्रह हूं अतः पूर्णबली हूं।"

"मैं कालपुरुषका हृदय पेट गुर्दा हूं। गले से हृदय तकके क्षेत्र, गर्भ, अण्डकोष आदि पर मेरा प्रभाव है। मैं स्त्री व पिंगला नाड़ीका प्रतीक हूं। मेरी गतिके कारण वेदोंमें मुझे 'मनसो जातः' कह कर मनका प्रतीक कहा है, अतः मेरा प्रभाव अन्तःकरण पर रहता है। 'दिनेश चन्द्रौ राजानौ' कह कर सूर्य को एवं मुझ को नक्षत्रपुंजमें राजा माना गया है। भारतीय दैवज्ञों व ज्योतिर्विदों ने मेरे आधार पर चान्द्र वर्षोंका प्रचलन करके तिथि, मास, नक्षत्रोंका

सीमांकन करते हुए गणनाके मान स्थापित किये हैं। मेरी स्थितिके अनुसार चन्द्रकुण्डली बनाकर ज्योतिषी भविष्यका मूल्यांकन करते हैं। फलित अनुभाग पर मेरा आधिपत्य है। मुहूर्त शास्त्रमें मेरी प्रधानता है। मैं पृथ्वीका छोटा भाई हूं अतः लोग मुझे 'चन्दामामा' कहते हैं। मैं पृथ्वीका एकमात्र उपग्रह हूं। मैं जब सूर्य स्थित राशिमें समान अंशों पर होता हूं तो अमावस्या होती है और इसी प्रकार छः राशि दूर अंशों पर होनेसे पूर्णिमा होती है। जब अमावस्या होती है तो मैं अस्त होता हूं, किन्तु पूर्णिमा को पृथ्वी पर पूर्ण होकर प्रकाश देता हूं। समुद्रमें ज्वारभाटेका कारण मैं हूं। स्त्रीत्व पर मेरा सर्वांगीण अधिकार है अतः स्त्रियोंके मासिक धर्मका कारण मैं हूं। मेरी कलाओंसे पूर्ण प्रभावित होकर ऋतुस्त्राव होता है। भिन्न २ स्त्रियोंकी जन्म कुण्डलियोंमें विभिन्न भावों पर आरूढ़ हो कर मैं अपने बल अनुसार विभिन्न कलाओंसे ऋतुस्त्राव देता हूं। मेरा प्रभाव गर्भाशय पर भी है। मैं पश्चिमोत्तर दिशाका स्वामी हूं अतः मेरे नक्षत्र रोहिणी, हस्त, श्रवण हैं। विंशोत्तरी दशाचक्रमें मुझे दश वर्ष मिलते हैं। मैं दोके अंक पर प्रभावी हूं। दुधिया (दुद्धी) की जड़ मुझे प्रिय है। फरवरी, नवम्बर माह पर एवं २, ११, २०, २६, २२ तारीखों पर मेरा पूर्ण प्रभाव होता है। बीसवें, बाइसवें वर्षकी आयु पर मैं प्रभावी होता हूं।''

''मेरे दीप्तांश कालांश ११ हैं। श्वेत पशु गाय, बैल मेरे प्रतीक हैं। मेरा स्वभाव शीतल, जल तत्व एवं दृष्टि शुभ है। मैं हृदयकी कोमल अनुभूति और भावनाओंका प्रतिनिधी हूं। चांदी मेरी धातु, चावल मेरा अन्न, दूध दही मेरा द्रव, जल मेरा देव, मणि मेरा द्रव्य, निर्मल मोती मेरा रत्न, वर्षा मेरी ऋतु, लवणयुक्त मेरा रस है। मैं शुभ्र रश्मियों से युक्त मधुरवाणी सुन्दर अंग, सुन्दर नेत्र गोलाकार प्रकाशवान्, शुभ्रश्वेतवर्ण बुद्धिमान् एवं सत्वगुणोंका चंचल स्वभावी स्त्री प्रतीक व्यक्तित्व वाला हूं। मैं सिरसे उदित होने वाला, समुद्र जलाशयमें सदाविचरण करने वाला, राज योग कारक हूं। मैं मूल संज्ञक, बली शुभ किन्तु निर्बल अशुभ, नवीन रमणीयवस्त्र वाला, सरीसृप कीट)आकार का हूं। फल, शुभ्र-सफेद फूलों पर मेरा प्रभाव है। माताका अन्तःकरण, मनोभाव, नम्रता सुख सम्पदा, कृषि मानसिक स्थिति, स्त्री, गन्ना, नमक, मधुमिसरी, चांदी, मोती, चावल, जल, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प मेरे प्रतीक हैं।''

''मैं सौभाग्यका मार्गदर्शक, गृहस्थ व देशप्रेमका परिचायक, भावात्मक सहानुभूति सुन्दर कल्पना शक्ति, ज्योतिषविद्या पारिवारिक व्यक्तिगत कार्योंमें सफलताका दाता हूं। रानियां, कुलीन गृहिणियां, दाई-परिचारिका, नर्स, वैश्यायें मेरेसे प्रभावित रहती हैं।''

''मैं वैश्य जातिका सुन्दर-चंचल युवक हूं। मैं भावुक और शंकालु होनेके कारण कोमल स्वभावी हूं। दूसरोंके हितको सम्पादन करनेमें 'ना' कहना मेरे वशकी बात नहीं है। प्रेमके सौंदर्य क्षेत्रमें मैं सबको सम्मोहित किये रखता हूं। मेरी स्वस्थ व सुन्दर देहके आकर्षण से लोगोंने मेरे गलत उपयोग भी किये हैं। स्त्रियां मेरी ओर आकर्षित होकर प्रणयदान की याचना करने लगती हैं। मेरा प्रथम मिलन ही कामोत्तेजनाका अंकुर बन जाता है। हस्तिनी

वृत्तिकी कामातुर कामिनियां सदैव मेरे पीछे प्रेमातुर होकर मुग्ध रहती हैं। यह मेरा दुर्भाग्य समझिये कि मैं सदैव मेरेसे अधिक उम्रकी महिलाओंका प्रणयकेन्द्र रहा हूं। गौतम नारी अहिल्या मेरी आदरणीया है, किन्तु नारी स्वभावके अनुसार उसकी प्रणय वेदना इतनी तीव्र सीमामें प्रकट हुई कि मुझे विवशता में स्वीकृति देकर उसका सहयोग करना पड़ा। इस दुष्कर्ममें मेरा कोई छल व कपट न था। मुझे तो इसके बदले समाजमें भारी अपमान और उपालम्भ मिला है। महर्षि गौतमने क्रुद्ध होकर अपने त्रिशूलसे मेरे पर वार किया था जिसका काला निशान आज भी मेरे मुख पर अङ्कित है। मैंने ऋषिवर को समस्त स्थितिका स्पष्टीकरण देकर कर आश्वस्त किया कि मैं निर्दोष हूं। वास्तवमें दोषी इन्द्र एवं अहिल्या है। मेरे इस स्पष्टीकरणसे महर्षि गौतम सहमत हुए और क्रोध को शांत किया। उन्होंने भी मुझे क्षमा करके समस्त दोषका आधार अहिल्याकी नारीवृत्तिकी कामपिपासा को माना है। ऐसी ही स्थिति आदरणीया तारा (मेरी मामी)के साथ हुई। मेरे मामा जी (बृहस्पति) निवृत्ति मार्गी हैं, अतः महर्षि गौतम की तरह वे भी जितेन्द्रिय हैं। वैराग्य वृत्तिके पालक हैं। इनमें प्रणय कार्यकी अभिरूचि व अवकाशके अभावकी स्थितिमें मामी ताराने भी स्वाभाविक नारीवृत्तिके अनुसार मेरी देह पर पूर्ण मुग्ध होकर प्रणय-याचनाकी थी। मैं अपने स्वभावके वशीभूत होकर 'ना' नहीं कर सका। इसी पापकर्मके दण्डस्वरूप प्रसवकाल तक तारा को मुझे स्वलोकमें आवासित रखना पड़ा। बुध के जन्मके बाद ब्रह्माकी आज्ञा व मामा जीके निर्देशानुसार मैंने सहर्ष तारा को उन्हें सौंप कर जंजाल को दूर किया है। मैंने अपने मामा जी को भी उनकी काम शिथिलता वृत्तिसे भली भांति विज्ञ कराते हुए सर्व परिस्थिति एवं मेरी विवशताके प्रति आश्वस्त करा दिया है। दोनों स्थितियोंमें मैं सर्वथा निर्दोष हूं। कोई कितना ही सन्देह करे वस्तुतः मैंने कोई भी ऐसा दुष्कर्म नहीं किया है जो मेरी प्रतिष्ठा व व्यक्तित्वके प्रतिकूल हो। इनमें अहिल्या, तारा की हस्तिनी नारीवृत्ति और महर्षियोंकी वैराग्य वृत्तिका ही दोष है।"

"दक्षकी सताईस कन्यायें (नक्षत्र) मेरी पत्नियां हैं, जिनमें रोहिणी मेरी परमप्रिया है। मैंने रोहिणीको अपने उच्चस्थानमें सुरक्षित छोड़ रखा है। भगवान् कृष्णके चरित्र को पढ़ कर तुम जानोगे कि उनके जन्मके समय मैं रोहिणी नक्षत्रारूढ़ था। इसीके प्रबल प्रभावसे भगवान् कृष्णमें सम्मोहन शक्ति थी। मेरी सभी पत्नियां मेरे रोहिणी प्रेमसे ईर्ष्यायुक्त हो गईं। सभी एक मत होकर अपने पितृवर दक्षके पास गईं और मेरे प्रति शिकायतें प्रस्तुत कीं। पिताका हृदय पुत्रियोंके उद्वेगसे प्रभावित हो गया, अतः उन्होंने मुझे राजयक्ष्माका रोग श्राप दिया। मैं दुःखी था और महादेव शिव के संरक्षणमें चला गया। मेरी सभी पत्नियां दुःखी हो गईं और पुनः अपने पितासे अनुनय विनय करके मुझे प्राप्त किया है। तभीसे मैं प्रत्येक नक्षत्र को प्रतिदिन भोगता हूं। ब्रह्मा के आशीर्वाद और शिव अनुकम्पासे मेरा क्षय-रोग नियंत्रित है और पन्द्रह दिन मैं क्षय-पीड़ित रहता हूं किन्तु पुनः शुक्ल पक्षमें परिपुष्ट होकर पूर्णिमा को स्वस्थ हो जाता हूं।"

"स्त्रियां चतुर्थी व पूर्णिमाके व्रत को

करके मेरे दर्शन करके अर्घ्य प्रस्तुत करनेके उपरान्त भोजन ग्रहण करती हैं। जब स्त्रियां मुझसे सौभाग्य, सुख, सम्पन्नताकी याचना करती हैं तो मैं प्रसन्न हो जाता हूं। मैं स्त्रियों के सामने समस्त स्थितियोंमें झुक जाता हूं यह मेरी कमज़ोरी है।''

"जब मैं मेष, सिंह, वृश्चिक राशिका होता हूं तो मेरा रंग लाल एवं हाथी मेरा वाहन होता है। वृष, कर्क, तुला राशिका होने पर मैं श्वेत रंगका हो कर बैल वाहन रखता हूं। मिथुन, धनुः, मीन राशिका होकर मैं पीतवर्णका होकर घोड़े को वाहन बनता हूं। कन्या, मकर, कुंभ राशिका होने पर मेरा रंग काला व वाहन भैंसा होता है। यह मेरे रंग व वाहनका रहस्य है। मेरेसे प्रभावित व्यवसाय इस प्रकार हैं—प्रवासी, सेवक, प्रकाशक, दूत, पत्रवाहक, तांगेवाले, ग्वाले, दवाई विक्रेता, नाविक, यात्री, मछुवे, शिकारी, शराबी, शराब विक्रेता, औषधनिर्माता आदि। वाणिज्य के जलमार्ग, व्यापारिक यातायात मार्ग, समुद्री मार्ग मेरेसे प्रभावित रहते हैं। इन्हीं साधनों एवं उपसाधनों से मैं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उपार्जन कराता हूं। मैं लक्ष्मी एवं सरस्वती का लाडला हूं, अतः सम्पदा व विद्या मैं अपरिमित रूपमें प्रदान कराता हूं। अशुभ व निर्बली होने पर मैं इनको निरर्थक भी बना देता हूं। ऐसी स्थितिमें मैं पाण्डुरोग, जलभय, स्त्रियोंसे मनोविकारके कष्ट व रोग देता हूं। राहू, केतु मेरे शत्रु हैं। शनि मेरा मित्र नहीं और मंगलसे भी मुझे नफ़रत है। मैं फल फूलों का कारक हूं अतः वृक्षों, लताओं, पौधोंमें रस तत्वका समन्वय कराता हूं।''

''मैं मेषमें उपकारी वन विभाग सेवी; वृषमें अनाज व किरानेका व्यापारी, मिठाई रसोई बनाने वाला, चिकित्सालय सेवी; मिथुन में वैद्य प्रवचनकार; कर्कमें सोना, चांदीका कलाकार; सिंहमें बड़े अधिकारी; कन्यामें रेलवे, डाकघर, रेकार्डिंग विभाव; तुलामें शिक्षक, प्रवक्ता, रेडियो अधिकारी; वृश्चिक में डाक्टर, हाफकिन्सके सेवी; धनुःमें इंजिनियर; मकरमें बिल्डिंग कन्ट्राक्टर; कुंभमें शास्त्रीय सेवक; मीनमें लेखक, सरकारी कर्मचारी बनाता हूं। यह फल मेरी स्थिति दृष्टिके अनुसार होते हैं। 'ह, ड' अक्षरोंसे प्रारम्भ होने वाले नामके जातक मुझे प्रिय लगते हैं। भगवान् श्री कृष्ण मेरा पूर्ण अवतार है। सूर्यकी रानी प्रभा मेरे धाम रहती है। मेरे नाम पर वंश परम्पराका नाम 'चन्द्रवंश' पड़ा है।''

''मैं स्वगृही होने पर शुद्धचित्त, शीलवान्, सम्पत्तिवान, विलासी, काव्य, प्रकृति व भ्रमणप्रेमी बनाता हूं। मैं ऐसे जातकों को उन्मादी व्यक्तित्व, आदर्शवादी अत्यधिक भावुक, घर कुटुम्ब को प्यार करने वाला, छिद्रान्वेषी, अन्यमनस्क बनाते हुए मैं स्त्रीविशेषके सहयोगसे उन्नतिशील बनाता हूं। मैं उच्चस्थ हो कर उदार, धनी, कफ़ प्रकृति, बहु कन्यासंतति, कामिनियों को प्रिय, वृद्धावस्थामें सुखी, लगनके पक्के, एवं महत्त्वाकांक्षी बनाता हूं। मैं नीचस्थ होकर चालाक, दुष्टचित्त, कुसंगति, गुप्त पाप कर्मरत, गोल जानुवाला एवं किशोर अवस्थामें ही अनैतिक व नवीन अनुभवोंकी लालसा रखने वाला, अत्यधिक कामी बना कर यौन विषयक नवीन व विचित्र प्रयोग कराता

हूं। मित्र क्षेत्री होने पर मैं अनुकूल फल देता हूं। शत्रु क्षेत्री होने पर मैं सर्वदा प्रतिकूल फलोंका दाता होता हूं।''

''मेरे जो जातक कलियुगमें प्रसिद्ध हुए उन में कुछ निम्नांकित हैं—स्वीडनवर्ग, एडिसन, इब्सन थोमस हार्डी, जोसेफ़, जेफ़रसन, सुमित्रा-नन्दन पंत, विल्सन, महात्मागांधी, लाल बहादुर शास्त्री, हर हिटलर, मुसोलिनी आदि।''

मैं ब्रह्माका अंश होनेके कारण शंकरका उपासक हूं। मुझे प्रसन्न करनेके लिये भक्तोंने अनेकों प्रयास किये हैं। एक परम भक्तने मुझे अति प्रसन्न किया जो कि श्रावण मासके प्रति सोमवार को मेरे इष्टदेव शिवकी आराधना करते हुए मेरा व्रत रखता था। अंगूठीमें मोती को प्रतिष्ठित कराके नित्यदर्शन करके कार्यारम्भ किया करता था। अंगूठीकी निरन्तर पूजा करता था। पवित्र प्रदोष पर्वों पर वह भक्त, ब्राह्मणों, पण्डितों, अभावग्रस्तोंमें चावल, दूध, दधि आदि वितरण करते हुए मेरी प्रार्थना निरन्तर करते हुए निम्न मंत्रका जप किया करता था—''

''विश्वाधारं च विश्वस्तं विश्वकारण कारणम्।
विश्वरक्षा करं चैव विश्वघ्नं विश्वजं परम्॥
फलबीजं फलाधारं फलं च तत्फलप्रदम्।
तेज. स्वरूपं तेजोदं सर्वं तेजस्विनां वरम्॥
ॐ श्रीं क्रीं चं चन्द्राय नमः।''

(ब्रह्मवैवर्तपुराण, ब्रह्मखण्ड ३/२४)

इतना कहते हुए चन्द्रदेव अन्तर्ध्यान हो गये। महर्षि जैमिनिने आँखें मल कर चारों ओर देखा किन्तु नीरवताके शांत वातावरण को पाकर पुनः चन्द्रदेव को नमस्कार करते हुए तपश्चर्यामें लीन हो गये। 'जैमिनी-सूत्र'की परिकल्पनामें महर्षि व्यस्त थे।

पता :—
किले के पीछे, पो० चूरू (राजस्थान)

'यमल-योग' एक विवेचन

[लेखक :—रमलज्ञ श्री विष्णु कुमार शास्त्री एम.ए., ज्योतिष शास्त्री रिसर्च-स्कालर]

ज्योतिष प्रत्यक्ष फलदायक शास्त्र है, बशर्ते कि उसका वैज्ञानिक रूपेण सही तथ्यात्मक तरीकेसे विवेचन किया जाय। कुछ लोग प्राचीन मतोंका ही सहारा ले कर भविष्य-वाणी करते हैं, वे कदाचित् धोखा भी खा जाते हैं। आजका मानव चन्द्रमा पर पहुंच गया है, और आगे अन्य ग्रह पर जाने हेतु प्रयत्नशील है, एवं विज्ञान दिन प्रतिदिन उत्तरोत्तर प्रगति कर रहा है। ज्योतिष शास्त्र भी एक विज्ञान है, अतः इसका भी विज्ञान सम्मत विवेचन करना ही समीचीन होगा। सम्प्रति, कुछ रूढ़ी प्राचीन सौर वादी अपने प्राचीन स्थूल गणनाशास्त्र को अपनी पैतृक-परम्परानुसारेण सर्वस्व प्रभु समझ कर उसका अनुसरण कर रहे हैं, और आज यह अनुभव द्वारा सिद्ध हो चुका है कि प्राचीन नवीन गणना शास्त्रमें तिथ्यादि मानमें ४-६ घण्टे तकका अन्तर आता है, इस प्रकारका अन्तर ज्योतिषके अन्य पहलूओंमें भी दृष्टिगोचर होता है। अतएव ज्योतिष प्रेमी विद्ववानों, सज्जनों, शोध अध्येताओंसे मेरी विनम्र प्रार्थना है कि इस वैज्ञानिक युगमें नवीन गणित एवं नवीन फलित मतोंका (प्राचीन मतोंसे सामंजस्य बिठा कर) अनुसरण कर निःशंक भविष्यवाणी करें।

अब आईये, तत्सम्बन्धित विषय पर—'यमल-योग'!

'यमल-योग' जन्मकुण्डलीमें किस प्रकार घटित होता है। इसके बारेमें प्राचीन ग्रन्थों (नवीन मतसे सिद्ध है)में जो कुछ उल्लेख है, वह इस प्रकार है—

(१) वराहमिहिर कृत बृहज्जातकः-

चतुष्पदगते भानौ शेषैर्वीर्य समन्वितैः।
द्वितनुस्थैश्च यमलौ भवतः कोशवेष्टितौ ॥

अ॰. ५ श्लोक ४)

(२) **सूर्यश्चतुष्पदस्थः शेषा द्विशरीर संस्थिता बलिनः।**
केशवेष्टित देहौ यमलौ खलु सा प्रसूयेते ॥

(मा. प. अ. २)

(३) **चतुष्पदेऽर्के शेषेषु सबलेषु द्वगेचषु यमलजन्म।**

(जातकतत्त्व)

(४) **निषेकलग्नेशतृतीय नाथौ लग्नस्थितौ येद्यमलोद्भवः स्यात्।**
तृतीयनाथेन युतो निषेकलग्नेश्वरस्तत्सहजे तथैव॥

(स. चि. २-४२)

(५) **भावाधिपो गुरुश्चैव यदा षष्ठान् हि पश्यति।**
यमलं कुरुते जात ज्येष्ठो वै जायते हिसः ॥

(हो.श. श्लोक ५०)

उपर्युक्त क्रमशः तीन मत बृहज्जातक, मानसागरी पद्धति एवं जातक तत्त्वके अनुसार सूर्य चतुष्पद राशि (१, २, ५ मकरका पूर्वार्ध व धनुःका उतरार्ध)में हो, और शेष ग्रह बलवान होकर द्विस्वभाव राशिमें हो तो यमल-योग होता है। इस सिद्धान्त को मानकर कतिपय यमल कुण्डलियोंमें जांचा तो निराशा ही हाथ लगी, क्योंकि २५ प्रतिशत ही सफलता मिली। चतुर्थ मत सर्वार्थ चिन्तामणिकारका है, उनके मतानुसार आधान लग्नेश व जन्मांग का तृतीयेश जन्मांगमें हो अथवा आधान

लग्नेश तृतीयेशके साथ तृतीयमें अवस्थित हो तो यमल-योग होता है। इस सिद्धान्तानुसार सही आधान लग्न निकालना सरल कार्य नहीं है, यदि आधान लग्न हम पाश्चात्य जगत्में प्रसिद्ध "हर्मीज पद्धति" (*Hermes System*) द्वारा निकाल कर यमल-योगकी कुण्डलियोंमें परखें तो कुछ हद तक सफलता अवश्य मिल सकती हैं।

पंचम सिद्धान्त होराशतककारका है, उन के मतानुसार एकादश भावका अधिपति तथा गुरुकी दृष्टि आदि प्रभाव जब ६ स्थानों पर अर्थात् लग्न, लग्नेश, चन्द्र, चन्द्रलग्नेश, सूर्य, सूर्य लग्नेश पर पड़ता है, तो यमल-योग (*Twin*) होता है। बुधका भी उक्त योगोंके साथ संयोग होना यमल-योग पक्का माना जावेगा। मेरे स्वानुभवसे सुदर्शन पद्धतिका अत्यधिक महत्त्व है। उसके अनुसार सूर्यलग्न एवं चन्द्रलग्नसे एकादशेशका सम्बन्ध होना भी जरूरी है, अतः उक्त लाभेशका सम्बन्ध हो जाने पर तथा मिथुन राशिका संयोग होने पर यमल-योग पूर्णरूपेण पक्का समझा जावेगा।

अन्तिम उपर्युक्त मतानुसार कतिपय यमल कुण्डलियोंमें विवेचन करते हैं :—

(१)

लग्न ६	९ के.बु	र.चं. १० मं.श	११ शु.	१२ गु.	१	२	३ रा.	४

दि० १६-१-१९६४, लग्न ५-२३°

इस कुण्डलीमें लाभेश पंचम भावमें शनि (चन्द्रलग्नेश), तृतीयेश (भौम) तथा सूर्यके साथ अवस्थित हो कर इनके साथ एकादश भाव (निजभाव) पर पूर्ण दृष्टि डाल रहा है। एकादश स्थान एवं लग्न भाव पर, गुरुकी पूर्ण दृष्टि है. लग्नेश (बुध) गुरुकी राशिमें है।

सूर्य-चन्द्र लग्नात् एकादशेश मंगल इनके साथ व इनके स्वामी (शनि)के साथ बैठा है, एकादश (तृतीय) स्थान पर गुरुकी पूर्ण दृष्टि होनेसे यमल-योग पक्का समझा जायेगा। इस कुण्डलीमें एकादशेश (बड़े भ्राता) व तृतीयेश (छोटे भाई) एक साथ पंचम भाव में संस्थित होनेसे यह बालक यमलोत्पन्न हैं।

(२)

लग्न १२ रा	१ शु. श.	२ बु.	३ सू.	४ चं.	६ गु के.	८ मं.

दि० १८-६-१९६९, लग्न ११-१२°

इस यमलोत्पन्न कुण्डलीमें लाभेश शनि तृतीयेशके साथ अवस्थित हो कर निज-दृष्टिसे एकादश भाव को देख रहा है, एकादश भाव लग्न भाव पर गुरुकी पूर्ण दृष्टि है। चन्द्रमा (चन्द्रलग्नेश हो कर) लाभ स्थान को देख रहा है। चन्द्र लग्नात् एकादश स्थानमें बुध जिस पर लग्नेश (गुरु)की पूर्ण दृष्टि है, सूर्य लग्नात् लाभेश भौम पर सूर्य लग्नेश (बुध)की तथा सूर्य पर मंगलकी पूर्ण दृष्टि है। एकादशाधिपति व तृतीयाधिपति दोनों एक साथ बैठे हैं, जिससे यह बालक यमलोत्पन्न है।

(३)

लग्न ८	९ श. गु.	११ के.	३ चं. मं.	५ सू. रा.	६ शु. बु.

दि० १५-९-१९६०, लग्न ७-६°

लग्नेश मंगल (चन्द्र लग्नमें स्थित है) अष्टममें अवस्थित होकर गुरुकी पूर्ण दृष्टिसे प्रभावित है, मंगल एवं चन्द्र मिथुन (राशीश-बुध) राशिमें है, लाभेश बुध उच्चस्थ है, जिस पर तृतीयेश (शनि)की पूर्ण दृष्टि है। सूर्य लग्नसे भी लाभेश बुध है, सूर्य लग्न व लाभ (अष्टम) भाव पर गुरुकी पूर्ण दृष्टि है, चन्द्र लग्नसे लाभेश मंगल, लाभ (षष्ठ) भाव पर गुरुकी पूर्ण दृष्टि होनेसे यह कन्या यमलोत्पन्न है। उक्त योगोंके कारण 'यमल-योग' पक्का समझना चाहिए। लग्नेश मंगल, लाभेश (बुध), लाभ भाव, तृतीय, तृतीयेश पर पूर्ण प्रभाव डाल रहा है। तृतीयेश लाभ, लाभेश पर, तथा लाभेश तृतीयेश पर केन्द्रीय प्रभाव डाल रहा है।

(४) यह कुण्डली होराशतकारने अपनी पुस्तकमें प्रकाशितकी है :—

लग्न	३	४	५	७	९	१०
	सू.	मं०				
१	बु.	शु रा.	चं.	श.	गु.	के.

इस कुण्डलीमें गुरु सूर्य को, सूर्य लग्नाधिपति (बुध) को, चन्द्र को, चन्द्र लग्नाधिपति को तथा लग्नको पूर्ण दृष्टिसे देख रहा है। लाभ का स्वामी शनि उच्चस्थ होकर लग्न, लग्नेश पर पूर्ण दृष्टि डाल रहा है। सूर्य लग्नसे एकादशेश स्वयं गुरु है, जिस पर गुरुका पूर्ण प्रभाव है, चन्द्र लग्नसे लाभेश ५वें लाभ भाव पर गुरुकी पूर्ण दृष्टि है, लाभेश तृतीयेशका त्रिकोण सम्बन्ध होनेसे यह स्त्री यमलोत्पन्न है।

उपर्युक्त चार कुण्डलियोंके विवेचनसे यह निष्कर्ष निकलता है कि यमलोत्पन्न (*Twin*) कुण्डलीमें लग्न, लग्नेश, सूर्य, सूर्यलग्नेश, चन्द्र, चन्द्रलग्नेश, लाभ, लाभेश पर गुरु (तथा बुध) का पूर्ण प्रभाव हो, लाभेश तृतीयेशका सम्बन्ध हो, लाभेश बलवान हो, उच्च, स्ववर्गोत्तम, आदि हो। उक्त योग होने पर 'यमल-योग' सिद्ध हो जाता है। पूर्वोक्त तीन मत वृहज्जातकादिके अनुसार कुण्डली नम्बर १ तथा ३में सूर्य चतुष्पद राशिमें अवस्थित है, कुण्डली २ में चार ग्रह (राहु-केतु सहित) द्विस्वभाव राशिमें, कुण्डली नं० ३ में ६ ग्रह द्विस्वभाव राशिमें है, तथा कुण्डली नं० ४में तीनग्रह द्विस्वभाव राशिमें है।

बहुत सी कुण्डलियां ऐसी देखनेमें आयी है, जिनमें सूर्य चतुष्पद राशिमें हो कर चार-पाँच ग्रह द्विस्वभाव राशिमें अवस्थित होने पर भी उन कुण्डलियोंमें 'यमल-योग' घटित नहीं होता।

अतः प्राचीन मतोंमें सामंजस्य बिठा कर तर्क-शक्ति लगा कर वैज्ञानिक मान्यताके आधार पर नवीन मतोंका अनुसरण कर नूतन योगोंका अन्वेषण करें, यही मेरा विनम्र निवेदन है। आगे अनुभव सिद्ध योगोंके बारेमें लिखूंगा, श्रद्धेय श्री त्रिवेदी जी (सम्पादक ज्योतिष्मती) की असीम कृपादृष्टि है, जिससे 'ज्योतिष्मती' में कुछ न कुछ लिखनेका उत्साह बना रहता है।

पता :—

मु०पो० सुखेड़ा, जि० रतलाम (म.प्र.)

फलित ज्योतिषके रहस्य

[लेखक :—श्री पं० श्याम सुन्दर ज्योतिषी]

फलित ज्योतिष अथवा भाग्यफलका तत्व क्या है? यह आज कोई भी दावेके साथ नहीं कह सकता। यह गुत्थी सुलझाना अत्यन्त जटिल कार्य है। इतना तो हम दृढ़ विश्वास पूर्वक कह सकते हैं कि जो भी घटना हमारे जीवनमें घटित होती है वह सभी ग्रहोंके शुभाशुभ प्रभावके द्वारा घटित होती है। ग्रहोंकी दशा-अन्तर्दशा प्रत्यन्तर तथा गोचर ग्रहोंके द्वारा ही हमारी जीवन यात्रा पूर्णतया नियन्त्रित है। हम स्वतः कुछ नहीं कर रहे बल्कि ग्रह ही हमें सब कुछ करने पर बाध्य कर रहे हैं। हमारा स्वभाव, हमारे गुण अवगुण भी ग्रहोंके द्वारा प्रदान किये गए हैं। हानि-लाभ, जीवन-मरण सब ग्रहाधीन हैं। बृहत्पाराशरमें लिखा है कि ग्रहरूपी जनार्दन ही इस सृष्टिके संचालक हैं, किन्तु ग्रहरूपी ईश्वरकी हमारे लिये क्या इच्छा है, यह जानना महाकठिन कार्य है। ज्योतिष शास्त्र में अनेक विधान हैं, अनेक सिद्धांत हैं, अनेक ऋषियोंके भिन्न २ मत हैं, लेकिन कलियुग में पराशर ऋषिके मत को ही प्रमुख माना है। यदि पराशरके मत को ही प्रमुख मान लें तो फिर ताजिक पद्धति व्यर्थ होकर रह जाती है। पराशर में वर्षफलका कोई विधान ही नहीं। उधर जैमिनी सूत्रों को भी कैसे भूल जावें। तो यह समस्या है क्योंकि जैमिनीमें पराशरकी दशा पद्धति नहीं है। पराशरमें सुदर्शन चक्र तथा रेखाष्टकका बड़ा सुन्दर विधान है, किन्तु जैमिनी ऋषि, इसकी चर्चा नहीं करते। इस उलझन को सुलझाना अथवा इस समुद्र मेंसे रत्न प्राप्त करना किसी बिरलेका ही कार्य है। ज्योतिष शास्त्रमें असंख्य योग हैं जिन्हें याद रखना असंभव है। उन योगोंका प्रभाव भी भिन्न २ होता है जो एक दूसरेके प्रभाव को रोकते हैं, तो यह विधान भी सत्य होते हुए भी प्रत्यक्ष चमत्कारी नहीं कहा जा सकता। तब चमत्कारका दर्शन कैसे हो? आज बड़े २ दिग्गज भी हैरान हैं। जीवन यापनके लिये मेरे सरीखे अनेक ज्योतिषी देश में इस विद्याके आश्रित हैं, किन्तु लाचार हैं। समस्या ही ऐसी है। फिर ग्रहोंके प्रभाव को सिद्ध कैसे किया जावे?

यदि ग्रहके प्रभाव को यथार्थ रूपमें जान लिया जावे तो फिर यदि वह ग्रह अनिष्ट कारक है तो उसके अनिष्ट को पर्याप्त मात्रा में रोकनेके अनेकों, अत्यन्त शक्तिशाली विधान शास्त्रोंमें है और उनके द्वारा दुःखी मानव को प्रचुर मात्रामें दुःख रहित बनाया जा सकता है। ज्योतिष शास्त्रकी रचनाका उद्देश्य ही मानव को कष्टों से बचाना है, किन्तु किस ग्रह का क्या प्रभाव है? यह जाने बिना कुछ नहीं किया जा सकता।

मेरे विचारमें पराशर मुनिकी विंशोत्तरी दशा तथा अन्तर्दशा को आधार मानना श्रेष्ठ है। दशानाथकी अपेक्षा अन्तर्दशाके स्वामीका प्रभाव अधिक है। ऐसा कई बार अनुभवमें आया है। फिर एक बात और भी है कि ग्रह का प्रभाव केवल अपना ही नहीं होता वह अपने साथ रहने वाले ग्रहके प्रभाव को भी ग्रहण

करता है, तथा यदि साथ रहने वाला ग्रह अंशोंमें अधिक हो तो फिर उस साथ वाले ग्रह का ही प्रभाव होगा। यह एक विशेष बात है। अधिक अंशका ग्रह, अपनेसे न्यून अंश वाले ग्रह को दबा कर अपनी इच्छानुसार सब कार्य करता है। ज्योतिषवेत्ता इस बात को अच्छी तरह समझते हैं।

इस प्रकार हम ग्रहके प्रभाव को जान सकते हैं। किसी ग्रहकी अन्तर्दशामें यदि उस ग्रहके साथ कोई अधिक अंश वाला ग्रह है तो उस अधिक अंश वाले ग्रहका प्रभाव ही होगा।

यदि कोई शांति विधान रत्न, धातु, मंत्रजप, दान करना हो तो अधिक अंशी ग्रहका करें तो प्रत्यक्ष शांतिका दर्शन संभव है। ज्योतिषमें नामका भी महत्त्व है। नामसे जब तक अनिष्ट कारक ग्रह प्रबल न हो तब तक बड़ी दुर्घटना नहीं होती। न बड़ा लाभ या प्रसन्नता ही प्राप्त हो सकती है। सूर्य अथवा चन्द्रमाके अनिष्ट प्रभावके बिना जीवनका अंत नहीं हो सकता। सूर्य तथा चन्द्रमा ठीक हों तो जीवन सुरक्षित है।

अन्य अनेकों प्रत्यक्ष चमत्कारी विधान हैं जो हम शनैः शनैः प्रकट करेंगे।

क्या हवन मनोरथकी पूर्ति करता है ? (३)

(गताङ्क से आगे)

[लेखक :—श्री विक्रमसिंह जी]

अग्निका आवाहन

स्तुतिके बाद द्यु लोकमें सूर्य रूपसे, अन्तरिक्ष लोकमें विद्युत रूपसे और भू-लोकमें अग्नि रूपसे विद्यमान अग्नि देवताका आह्वाहन "ॐ भू र्भुवः स्वः" इन तीन महा व्याहृतियोंसे किया जाता है और अरणि, दियासलाई, दीपक इत्यादिसे प्रकट करके निम्न मंत्रसे यज्ञ कुण्डमें स्थापित की जाती है :—

अग्नि स्थापन

ॐ भू र्भुवः स्वद्यौ रिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देव यजनि पृष्ठेऽग्निमन्नाद्मायादधे

(यजु. ३/५)

हे देव यजनि पृथ्वी (तेपृष्ठे) तेरी पीठ पर उस (भूर्भुवःस्वः) त्रिलोक व्यापिनी अग्नि को जो (द्यौरिव भूम्ना) द्यु लोकके समान विशाल और (पृथिवीव वरिम्णा) पृथ्वीके समान सुन्दर है (अन्नादाय) अन्न पाचनके लिये (आदधे) स्थापित करता हूं।

निम्न मंत्रसे यज्ञ कुण्डमें अग्नि प्रज्वलित की जाती है :—

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते
सँसृजेथामयं च।
अस्मिन् सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा
यजमानश्च सीदत ॥

(यजु. अ. १५/सं. ४५)

(अग्ने उद् बुध्यस्व प्रति जागृहि) हे अग्ने उठ जाग प्रज्वलित हो (त्वं प्रपंच) तू और यह मैं यजमान (इष्टापूर्ते) इष्ट और पूर्त कर्मों के लिये अर्थात् स्वर्गादि देने वाले और मोक्ष देने

वाले कर्मोंके लिये (संसृजेथाम्) संयुक्त हों।

(अस्मिन सधस्थे) इस यज्ञ स्थल में व (अध्युतरस्मिन्) इससे भी उत्तम स्थानोंमें (विश्वेदेवा यजमानश्च) सब देवता और यजमान (सीदत) बैठे अर्थात् तुझसे संयुक्त हो कर ही बैठें।

आवश्यक हो तो अग्निके प्रज्वलित होने तक यहां प्रतीक्षा करनी चाहिये, क्योंकि इष्ट और पूर्त कर्ममें संयोग जागृत अग्नि ही देता है, जैसा कि मंत्रार्थसे स्पष्ट है—

अग्निहोत्रं तपः सत्यं वेदानां चैव धारणम्।
आतिथ्यं वैश्वदेवं च इष्टमित्यभिधीयते ।।
वापी कूप तडागानि देवतायतनानि च।
पतितानुद्धरेद् यस्तु स पूर्त फलमश्नुते ।।

लघु शंख स्मृतिके उक्त वचनोंसे इष्ट व पूर्तका भेद स्पष्ट होता है। "इष्टापूर्त"का मनोरथ सिद्धि अर्थ यहां उपयुक्त नहीं है।

अग्निके प्रज्वलित होनेके बाद निम्न मंत्रोंसे घीकी तीन आहुतियां आठ २ अंगुल समिधाकी देनी चाहिये व त्यागके घृत को जल पात्रमें टपकाना चाहिये—

ॐ अयं त इध्य आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजपा पशुभिर्ब्रह्मवर्च-सेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदं न मम ।।

हे जातवेदस् अग्ने यह तेरा आहार है इससे तू बढ़ और हमें भी प्रजा पशु ब्रह्मवर्चस् और अन्नादिसे बढ़ा अपने समान कर ले। इससे प्रथम आहुति दें।

ॐ समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।
अस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा ।।
इदमग्नये इदं न मम।

ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा ।।
इदमग्नये जातवेदसे-इदं न मम।

इन दोनों मंत्रोंसे दूसरी आहुति देवें।

(अग्नि अतिथिं) अतिथि अग्नि देव की (समिधा दुवस्पत) समिधासे सेवन करो (घृते बोधयताम्) घृतसे प्रदीप्त करो (अस्मिन् हव्या जुहोतन) इसमें हविका त्याग करो (सुसमिद्धाय शोचिषे) पवित्र करने वाले प्रज्वलित अग्निमें (घृतं तीव्रं जुहोतन) तीव्र घीकी आहुति दो।

ॐ तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि।
बृहत् शोचा यविष्ठच स्वाहा।
इदमग्नयेऽङ्गिरसे-इदं न मम।

इससे तीसरी घृतकी सपिधा अर्पित करें।

हे अंगिरस् हम तुझे घीसे बढ़ाते हैं। तू अत्यन्त पवित्रकर्ता और गतिशील है। उक्त तीन आहुतियां अग्निदेव को तीन भिन्न नामों "अग्नि", "जातवेदस्", "अङ्गिरस्"से तीन विशिष्ट गुणों प्रकाश, सर्वज्ञता सुखके, कारण दी गई हैं, यह ही सत्, चित्, आनन्द हैं।

इसके बाद निम्न मंत्र को पांच बार पढ़ कर पांच समिधायें दी जाती हैं —

ॐ अयं त इध्य आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व।
चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्च-
सेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।
इदमग्नये जातवेदसे-इदं न मम।

हे जातवेदस् (अग्ने) (अयं त इध्य आत्मा) यह आहुति तेरी आत्मा है (एन एधस्व वर्धस्व)

इससे तू बढ़ और जागृत हो। (अस्मान् प्रजया पशुभिः ब्रह्मवर्चसेन अन्नाद्येन वर्धय) हमें प्रजाओं से, पशुओंसे, ब्रह्मज्ञानसे और अन्नादिसे समेधय बढ़ा।

ये पांच आहुतियां विराट पुरुषके पंच प्राणोंकी शुद्धिके लिये दी जाती है जिससे मानव शरीरके पांच प्राणों (प्राण, उदान, समान, अपान, व्यान) में व्याप्त हो कर शुद्धि प्रदान करें। पाँचो प्रार्थित संपत्तियों को प्रदान करे।

जल प्रसेचन

इसके बाद निम्न मंत्रोंसे यज्ञ कुण्डके चारों तरफ जल प्रसेचन किया जाता है :—

ॐ अदितेऽनुमन्यस्व। से पूर्वमें।

ॐ अनुमतेऽनुमन्यस्व। से पश्चिममें।

ॐ सरस्वत्यनुमन्यस्व। से उत्तरमें।

ॐ देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञं पतिं भगाय। दिव्यो गंधर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिः वोचं नः स्वदतु। (यजु. ५/३०/१)

से वेदीके चारों ओर जल छिड़कें।

जल सिंचनका अभिप्राय प्रज्वलित अग्नि को मर्यादित करना है। 'अदिते'से निर्विघ्न 'अनुमते'से सहयोग और 'सरस्वति'से ज्ञानकी अनुकूलता प्राप्त हो, ऐसी प्रार्थना है। चौथे मंत्रकी प्रार्थना है। हे सर्वोत्पादक सविता देव इस यज्ञ को अच्छी प्रकार संपन्न कीजिये। (यज्ञपतिं भगाय प्रसुव) यजमान को ऐश्वर्यके लिये पूर्ण बनाइये। (दिव्यो गंधर्वः केतपूः) यशगान करने वाला दिव्य गन्धर्व (नः केतं पुनातु) हमारे यश को पवित्र करें। (वाचस्पतिः वाचं नः स्वदतु) वृहस्पति हमारी वाणी को कोमल, मधुर, हितकारी बनावें।

आधाराहुति

इसके बाद निम्न मंत्रोंसे चार आहुतियां दी जाती हैं। प्रथम आहुति यज्ञ कुण्डमें उत्तर दिशाकी तरफ, दूसरे मंत्रसे दक्षिणकी तरफ दी जाती है, इन्हें आधारावाज्याहुति कहते हैं। शेष दोनों कुण्डके मध्यमें दी जाती है, इन्हें आज्यभागाहुति कहते हैं।

ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।

से उत्तर भागमें।

ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदं न मम।

से दक्षिण भागमें।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम।

ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय इदं न मम।

से मध्य भागमें।

ये आहुतियां अग्नि को सब जगह प्रज्वलित करनेके साथ साथ रहस्य भी रखती हैं, क्योंकि चारों आहुतियां अग्नि, सोम, प्रजापति व इन्द्रके लिये दी गई हैं। अग्नि ज्ञानका, सोम सुख-आनन्दका, प्रजापति वृद्धि प्रजा सन्तानका और इन्द्र ऐश्वर्यका प्रतिनिधित्व करते हैं। उत्तर दिशाके ज्ञानाधिपति शिव है और सोम दक्षिण दिशाके पितरादि दक्ष हैं। मध्यमें प्रजापति व इन्द्रके साथ वृद्धि एवं ऐश्वर्य को प्राप्त होने वाले मानवमें न शुष्क ज्ञान हो न ज्ञानहीन ऐश्वर्य हो। सबकी समान मर्यादित अभिवृद्धि हो। इस साम्यके लिये ये आहुतियां हैं।

❀ (क्रमशः)

आपका नक्षत्र—

नक्षत्र जातक पर अनुसंधानपूर्ण लेखमाला (२)

(गताङ्क से आगे)

[लेखक :—श्री केवल आनन्द जोशी बी०ए०]

कृत्तिका
(प्रथम चरण)

तीसरा नक्षत्र।

क्षेत्र–२६ अंश ४० कलासे ३० अंश मेष तक

राशि स्वामी—मंगल।

नक्षत्र स्वामी—सूर्य।

योनि—मेष, नाड़ी—अन्त्य, गण—राक्षस।

नामाक्षर—अ।

यह क्षेत्र साधारण रूपसे निम्नलिखित तथ्योंका निरूपण करता है : –

शरीर भाग :— सिर, आँखें, मष्तिस्क, दृष्टि भाग, कार्निया।

रोग :— तेज अथवा मियादी ज्वर, मलेरिया, फाइलेरिया, प्लेग, चेचक, प्रमस्तिष्कीय तानिका शोथ, मस्तिष्क ताप, चोट, सिर पर घाव, दुर्घटनाग्रस्त, विस्फोटका शिकार, फोड़ा-फुन्सी, अग्निकांड, विस्मृति।

मस्तिष्क संरचना :— आमतौर पर हृष्ट-पुष्ट शरीर, बलशाली, उच्चाभिलाषी, आधार युक्त, हमेशा ही आगे बढ़ने की अभिप्रेरणा वाला, युद्धकलामें प्रवीण, नेतृत्व प्रधान अथवा अधिकार प्रिय व्यक्तित्व, प्रतियोगी, प्रतियोगिताओंसे सम्बद्ध, तर्क करनेमें निपुण, अधिक आहार करने वाला, परस्त्री पर आसक्ति, चंचल और तीव्र व्यक्तित्व, प्रसिद्ध और कानूनका प्रतिपालक।

व्यवसाय :— भूमि अधिग्रहण, भवन निर्माण, पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, तेजी से हाथ पाँव मारने वाला, जल्दबाज, निर्भय, सट्टे अथवा द्यूतक्रीड़ा का शौकीन, सैनिक, सेना, पुलिस, तेल अथवा हथियार उद्योग, चिकित्सा कार्य, आपरेशन, नौसेना (यदि चन्द्रमाकी भुक्ति में पैदा हुआ हो तो), रक्षा अथा सुरक्षा विभाग, यात्रा, त्यागपत्र अथवा सेवा निवृत्ति विभाग, रसायन निर्माण, विस्फोटक, पटाखा, माचिस, लोहा-स्टील पात्र, युद्ध सामग्री, सफेद पुष्पका प्रेमी, व्याकरणाचार्य, नाई, पादरी, पंडित, अग्निहोत्री, ब्राह्मण, ज्योतिषी, कुम्हार अथवा बलिदान देने वाला।

विशेष :— मंगलकी राशि और सूर्यके नक्षत्रमें पैदा हुए ये जातक अधिकांश रूपसे विद्याभिलाषी, पशु प्रमी, अस्वस्थ और भोग-प्रिय माने जाते हैं। ऐसे व्यक्ति साधक, योगी, साधुसन्तोंमें आस्था रखने वाले, कलह प्रिय, निर्धनसे धनवान होनेकी अभिलाषा वाले, विवादोंमें रुचि रखने वाले, वकील और कट्टर धर्म को मानने वाले होते हैं।

अगर जातक को सूर्य महादशा मंगल भुक्ति अथवा मंगल महादशा और सूर्य भुक्ति चल रही हो तो वह अपने जन्मांग ग्रहोंकी भावस्थितिके अनुसार फल प्राप्त करता है। गोचरमें भी जब सूर्य-चन्द्र नक्षत्रके उपरोक्त

क्षेत्रसे भ्रमण करें तो भी जातक कुण्डलीके भावानुसार फल प्राप्त करता है। सूर्य इस नक्षत्र भाग पर लगभग सवा तीन दिनोंके करीब अर्थात् वैशाखके अन्तिम ३-४ दिनोंके करीब रहता है और शेष भाग को आगामी मासमें भोगता है । चन्द्रमाकी स्थिति इस क्षेत्रमें केवल छः घंटेके आस-पास प्रति सताइसवें दिन होती है।

कृत्तिका

(द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ चरण)

तीसरा नक्षत्र ।

क्षेत्र—० अंशसे १० अंश वृषम राशि तक ।

राशि स्वामी—शुक्र ।

नक्षत्र स्वामी—सूर्य ।

नाड़ी—अन्त्य, गण राक्षस, योनि—मेष ।

नामाक्षर—इ, उ, ए ।

यह क्षेत्र साधारण रूपसे निम्नलिखित तथ्योंका निरूपण करता है।

शरीर भाग : – चेहरा, गर्दन, कण्ठनली, टान्सिल, निचला जबड़ा, पश्चकपाल क्षेत्र ।

रोग :—झाइयां, मुहांसे, घाव, रक्त नेत्र, दृष्टि दोष, गलेकी खराबी, घुटने पर मस्सा, कंठप्रदाह, गर्दनके ऊपर सूजन, नाकका अधिक बहना ।

मस्तिष्क संरचना :— हमेशा ही मित्र समूहका अभिलाषी, सामाजिक रुचियोंका धनी, अतिथि सत्कार करनेमें कुशल, सुखानुभूतिका इच्छुक, आराम पसन्द और विलास प्रेमी, उदार हृदय, सहृदयता पूर्ण व्यवहार करने वाला, प्रेमी स्वभाव, प्रसन्नहृदय और प्रभावशाली व्यक्तित्वका स्वरूप, रचनात्मक कार्योंमें व्यस्त रहने वाला, फलदायक कार्य करने वाला, शान्तिपूर्वक कार्य करनेका अभिलाषी, जूए एवं सट्टे के प्रति रुचि, सर्वप्रिय एवं सम्पन्न जीवन वाला। यह सरकारसे लाभ प्राप्त करने वाला अथवा राज्य कर्मचारियोंका मित्र होता है।

व्यवसाय :— सरकार अथवा सरकारी क्षेत्रोंसे आर्थिक लाभ, अथवा सरकारी नौकरी, शत्रुओं पर बिजयी रहने वाला, बहुमूल्य वस्त्र अथवा वस्तुओंका प्राप्तकर्ता, विदेशोंसे सम्बन्ध रखने वाला, कभी कभार बुरी तरह ऋणग्रस्त रहने वाला, समारोहोंमें अति प्रसन्न, संगीत, नृत्य, नाटक, आपेरा, कवि सम्मेलन, कलाकर, चित्रकार या चित्रकला अध्यापक, ड्राफ्टसमैन, शिल्पी, विद्युत् या सिंचाई इंजीनियर, शिल्प उत्पादक, फोटोग्राफर, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, उद्यान निर्माण, दवा विक्रेता, घरेलू सजावट कर्ता, उद्योग, मैडीकल डिपार्टमेंट, अभियंता, टेक्स कलक्टर, ऊन विक्रेता, केश निर्यात कर्ता, सूत, रेशा, नकली धागा, नकली इत्र, सूल्यक, रतिरोग विशेषज्ञ ।

विशेष :—शुक्र ग्रहकी राशि और सूर्यके नक्षत्रमें पैदा हुए ये जातक अधिकाँशतः कला एवं कलात्मक विज्ञानों एवं कार्य व्यवसायोंसे सम्बद्ध रहते हैं। इनका मौलिक चिन्तनक्षेत्र अधिक धन कमाने एवं अधिक भोग विलासोंमें डूबे रहनेकी ओर रहता है। विद्या एवं उच्चस्तरके ज्ञानकी इनमें प्रबल क्षमता होती है। मौलिक तर्क प्रस्तुत करनेमें ये बेजोड़ रहते हैं परन्तु विपरीत योनिकी ओर से इन्हें निराशा ही मिलती है। अभिनय एवं नाट्य क्षेत्र, आधुनिक दूरदर्शन (टी०वी०) एवं राजनीतिके क्षेत्रमेंसे इनका उदय होता है।

सूर्य अगर पापस्थानमें स्थित हो तो इस नक्षत्र पर भ्रमण करते समय जातक पिता अथवा राज्य की ओरसे विशेष पीड़ित होता है और विकल्पमें आलोचना आदिका शिकार बनता है। सूर्य इस क्षेत्रमें ज्येष्ठके आरम्भके १० दिनों तक स्थित रहता है (१३ मईसे २३ मई के मध्य)।

जब भी शुक्र अथवा सूर्य इस नक्षत्र भाग से गुजरें जातक को उन फलोंकी प्राप्ति होती है जिनके उपरोक्त ग्रह जन्मकुण्डलीमें मारक होते हैं। भ्रमण प्रतिवर्ष दस दिनके लगभग इस नक्षत्र पर होता है जबकि चन्द्रमा प्रति २७वें दिन लगभग २० घंटेके लिए इस नक्षत्र क्षेत्रसे गुजरता है।

रोहिणी

चौथा नक्षत्र।

क्षेत्र—१० अंशसे २३ अंश २० कला वृषभ राशि तक।

राशि स्वामी—शुक्र।

नक्षत्र स्वामी—चन्द्रमा।

नाड़ी—अन्त्य, गण—मनुष्य, योनि—सर्प।

नामाक्षर—ओ, वा, वी, वू।

यह क्षेत्र साधारण रूपसे निम्नलिखित तथ्योंका निरूपण करता है।

शरीर भाग :— चेहरा, मुंह, जीभ, टान्सिल, तालु, गर्दन, अनुमस्तिष्क, शीर्ष प्रभाग, ग्रीवा, कशेरुकि।

रोग :—गलेका खट्टापन, शीत, पाँव आदि में दर्द, वक्षस्थलमें पीड़ा, खाज, चर्म विकार, स्त्रियोंका अनियमित मासिक, सूजन।

मस्तिष्क संरचना :— सोम्य स्वभाव, सुहास प्रिय, अच्छी प्रकृति, प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रेमी, संगीतमें अभिरुचि, कला, नाट्य, रोचक साहित्य, यात्रावृत्तान्त लेखक, सार्वजनिक उत्सवोंमें अति प्रसन्न, मातृ स्नेह प्राप्त करने वाला, सहानुभूति युक्त, विपरीत योनिके साथ जीवन व्यतीत करने वाला, शुद्ध हृदय, परोपकारी, सत्यवादी, मधुरभाषी, स्थिर मस्तिष्क और प्रिय मिजाज व्यक्तित्व वाला।

व्यवसाय :— सार्वजनिक हितोंकी पूर्ति करने वाला, होटल, रेस्तरां, आरामगाह, बेकरी, छात्रावास, सुख सुविधाका व्यवस्थापक, बार-रेस्तरां मालिक, आवास विक्रेता, भूमि, फल, आटोमोबाइल, पेट्रोल, तेल, दुग्ध, डेरी फार्म, आइसक्रीम, शीशा, प्लास्टिक, सुगन्धी, साबुन, चन्दन तेल, रोगन, जल रंग फरोश, तरल वस्तुका विक्रेता, नेवी, शिपिंग, निकासी ऐजेन्ट, जज, राजनीतिज्ञ, चर्मकार, सूत विक्रेता, रेडीमेड, वस्त्र उद्योग, चीनी, गन्ना, भूगोल तथा पंडितकर्म, प्रतिनिधि, प्रयोगशाला।

(एलनलियोके अनुसार रोहिणी जातक राजा, धनी, प्रतिज्ञा साक्षीकार, मर्चेन्ट, गाड़ीवान, गाय-बैल तथा अन्य पशुओं को रखने वाले, अधिकारी, खेतिहर, यात्रा प्रिय, पर्वतवासी अथवा काव्य लेखक होता है।)

विशेष :— शुक्रकी राशि और चन्द्रमाके नक्षत्रमें पैदा हुए रोहिणी जातक अधिकांशतः स्वच्छन्दताप्रिय, असत्यवादी, संगीतमें रुचि रखने वाले सामाजिक क्षेत्रमें सफल, यात्री प्रसन्नचित्त, भूत प्रेतोंमें विश्वास रखने वाले, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं सम्मानके इच्छुक, ईमानदार एवं सत्यभाषियोंका हित सम्पादन करने वाले होते हैं।

मुष्टिक योगमाला

अनुभूत योग

(गताङ्कसे आगे)

[लेखक :—श्री वैद्य वाचस्पति शर्मा]

(६) भगन्दर-नासूर

(१) जावित्री ५ ग्राम, (२) समुद्रफल १५ ग्राम, (३) अजा (बकरीका) मूत्र २० ग्राम।

दोनों को मिला कर अजामूत्रमें पीस लेवें। पश्चात् भगन्दर-नासूर व्रण पर बांधना चाहिए। या

मनुष्यास्थि भस्म ५० ग्राम
गायका मक्खन ५० ग्राम

दोनों को मिला कर लगावें। आश्चर्य-जनक लाभ होता है। कुछ दिनोंके सतत प्रयोगसे घाव भर कर ठीक हो जावेगा।

(७) उपदंश उष्णवात
(गर्मी सुजाक)

अनन्तमूल	१०० ग्राम	लवंग	२५ ग्राम
मुलेठी	१०० ,,	गोरखमुण्डी	२५ ,,
सनाय	१०० ग्राम	उन्नाव	२५ ग्राम
सफेद मूसली	१०० ,,	सोंफ	२५ ,,
अश्वगंधा	१०० ,,	रक्तचन्दन	२५ ,,
ऊसवा	१०० ,,	श्वेतचन्दन	२५ ,,
हरीतकी	१०० ,,	गुलाबके पुष्प	२५ ,,
जवासा	५० ,,	मञ्जिष्ठा	२५ ,,
दालचीनी	२५ ,,	छोटी इलायची	२५ ,,

इन सबको यव कूट कर १६ गुणे पानीमें भिगो कर पाद शेष क्वाथ कर लेवें। छान कर ५ किलो शर्करा मिला कर शर्करोदक (शर्बत) की चासनी बना काममें लेवें।

मात्रा—१२५/२५० मिं.लि अर्थात् १/२ तोला समान जलके साथ दिनमें ३ बार लें।

पथ्य – रोगके कारणोंसे बचें।

(८) स्वप्नदोष

स्वप्न चाहे सच्चे हों चाहे न हों यह विवादास्पद है; किन्तु स्वप्नदोष सदा सत्य होता है, इसमें कोई दो राय नहीं। जिस पर एक बार इसकी कृपा हो जाती है उसे यह वर्षों तक अनुकम्पित करता रहता है।

१. छोटी इलायची १० ग्राम
२. मुलेठी १२५ ग्राम
३. बेदाना २५० ग्राम
४. गोदुग्ध ५०० ग्राम
५. मिश्री ५० ग्राम

ऊपरकी तीनों औषधियों को कूट पीस कर

जब भी जातक को चन्द्रमहादशा शुक्र भुक्ति अथवा शुक्र महादशा चन्द्र भुक्ति चल रही होती है तो जातक को वे फल प्राप्त होते हैं जिनके कारक शुक्र अथवा चन्द्रमा मूल जन्म-पत्रिकामें होते हैं। सूर्यकी स्थिति इस नक्षत्र पर ज्येष्ठ मासमें लगभग १३ दिन कुछ घंटोंके लिए रहती है। चन्द्रमा प्रति सत्ताइसवें दिन चौबीस घंटेके लगभग इस नक्षत्र क्षेत्रसे गुजरता है।

❀ (क्रमशः)

१५ मात्रा बना लेवें। १ मात्रा रात्रिमें मृतिका (मिट्टी) पात्रमें २५० ग्राम पानीमें भिगो देवें। दुग्धमें मिश्री डाल कर लस्सी बना लेवें। पश्चात् पान करें। इस प्रयोगसे छात्र वर्गमें व्याप्त स्वप्न दोष निर्मूल होता है।

दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं पिवेज्जलम्।
सत्यपूतां वदेत् वाचं मनः पूतं समाचरेत्॥

इस आर्ष वाक्यका अहर्निश मनन करें।

(९) पाण्डु (पीलिया)

नूतन कुटकी चूर्ण ३ ग्राम।
पानी (जल) ५०० ग्राम।

कुटकी को पानीमें डाल कर मिट्टीके बर्तन में क्वाथ कर लेवें। चतुर्थांश शेष रहने पर पान करें। सात दिनमें सभी प्रकारका पाण्डु रोग यकृत् वृद्धि आदि रोग दूर हो जाते हैं।

पथ्य—लोह पात्रमें उबाला दुग्ध यथेष्ट पीना चाहिये। भोजन बन्द। स्मरण रहे यह सरल एवं सुलभ बहुचर्चित योग है। (क्रमशः)

भारतीय मंत्र-यंत्रके चमत्कार

[लेखक :—श्री जगदीशचंद्र जे. पटेल]

मैं यहां कुछ मंत्र, यंत्र और स्तोत्र, पाठक बंधुओंके लाभार्थ प्रस्तुत करता हूं। श्रद्धापूर्वक जप मंत्र यंत्र प्रयोग करनेसे इच्छित कार्य पूर्ण होते हैं।

पुत्र प्राप्ति मंत्र और यंत्र

रविवार को पुष्य नक्षत्र हो तब "सर्पाक्षी का पौधा" सम्पूर्ण मूल सहित उखाड़ लावें। बादमें एक रंगकी गायका दूध लावें। उपरोक्त पौधे को कुमारी कन्या द्वारा पीसावें याने रस निकालें।

रजोदर्शनके बाद चौथेसे छटे दिन तक हर रोज (दश ग्राम) रस स्त्री को पिलावें। भोजनमें दूध, चावल, शक्कर लेना उत्तम है। ज्यादा परिश्रम मत करें। रस पीनेसे पहले निम्नलिखित मंत्रकी माला याने १०८ मंत्र जाप करें और यंत्रका प्रयोग करें और यंत्र हाथ, कमर या कंठ पर तांबेके ताबीजमें डाल कर धूप देकर धारण करें। भोजपत्र पर अष्ट-गंधसे लिखें।

मंत्र : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,
देवकी सुत गोविंद, वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण, त्वामहं शरणं गतः॥

यंत्र :—

०८	०१	३४	२९
३०	३३	०४	०५
०२	०७	२८	३५
३२	३१	०६	०३

सुखपूर्वक प्रसवके लिये मंत्र और यंत्र

कभी प्रसव होनेमें ज्यादा समय लग जाता है। गर्भवती स्त्री मरणासन्न वेदनासे पीड़ित होती है। उस समय बरगद (बड़)के पत्ते पर निम्नलिखित "सुख प्रसव मंत्र और यंत्र" लिख कर स्त्रीके शिर पर रखनेसे सरलतासे प्रसव होता है।

मंत्र : अस्ति गोदावरीतीरे, जम्भला नाम राक्षसी।
तस्याः स्मरणमात्रेण, विशल्या गर्भिणी भवेत्॥

यंत्र :—

१	८	९	१४
११	१२	३	६
७	२	१५	८
१३	१०	५	४

यदि मिल जाये तो इमलीका छोटा पौधा जड़ सहित उखाड़ लावें। उसे शिरके बालोंसे बांध लेना चाहिए, इससे सरलतासे प्रसव हो जाता है। संतान प्रसव होते ही तुरंत बालके साथ मूल को कैंचीसे काट लेना चाहिये।

प्रेतबाधा दूर करनेका यंत्र मंत्र

मंगलवारके दिन यंत्र लिखें और रोगी को बांधे, फिर गायत्री मंत्रसे जल मंत्रकर जल रोगी को पिला दें। थोड़ा जल रोगीके अंगों पर छिड़कें। यंत्र बांध देनेके बाद गायत्री प्रयोग नित्य प्रातः सायं दो बार करना चाहिए। यंत्र इस प्रकार है :—

२४	३१	२	७
६	३	२८	२७
३०	२५	८	१
४	५	२६	२९

मंत्रोंके साथ यंत्र भी होते हैं। कुछ अंकात्मक यंत्र होते हैं। सर्प, चौर, निशाचर, शत्रु, भूत, पिशाचनीके भयसे बचने हेतु और विषमज्वर और आपत्ति नाशके लिये यंत्र है। निम्नलिखित यंत्र सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहण या दीपावलीकी रात्रि को ३४ बार भोजपत्र पर अष्टगंधसे अनारकी कलम द्वारा लिखें तो सिद्ध हो जावेगा या शनिवारके दिन १०८ बार यंत्र ऊपर लिखे अनुसार लिखें और जलमें बहा देवें। पुनः भोजपत्र पर यंत्र लिख कर धूप देकर गलेमें बांध देवें। यंत्र इस प्रकार है :—

९	१६	५	४
७	२	११	१४
१२	१३	८	१
६	३	१०	१५

श्रीजयप्रकाशनारायणके जीवनका ज्यौतिषीय विवेचन

[लेखक :—श्रीपशुपतिनाथप्रसाद गुप्त 'ज्योतिषरुद्र']

[लेखकने श्रीजयप्रकाशनारायणका इष्टकाल (जन्मसमय) नहीं लिखा, वह मैंने अपने नये वर्ष सं० २०३२ वि० के 'श्रीविश्वविजयपंचांग' में दिया है और अपने विचार भी लिखे हैं वहां देखें। —सम्पादक]

आजकल, आबालवृद्धकी जिह्वा पर जिन का शुभ-नाम सर्वदा, सम्यक् स्मृत रहा करता है। ऐसे 'युग मानव' तथा 'युग-स्रष्टा' हैं हमारे परमादरणीय सम्मानित सर्वोदय-नेता तथा लोक-नायक श्री जयप्रकाशनारायण जी।

ईस्वी सन् १९०२ की २५वीं अक्तूबर (शनिवार) सं० १९५९ आश्विन कृ० ९ आश्लेषा नक्षत्रमें श्रीनारायणका शुभ-जन्म उस समय हुआ था जबकि मकर-लग्नका शुभोदय हो रहा था। जन्मकुण्डली यह है इनके 'जन्म-



लग्न' तथा 'जन्मवार' दोनोंके स्वामी हैं शनिदेव, अतः इनका सम्पूर्ण जीवन अद्य-पर्यन्त, उथल-पुथल, चढ़ाव-उतराव तथा कठिन अग्नि-परीक्षाका ही रहता आया है। इनके तनुभावेश तथा धनेश-कुटुम्बेश यही शनिदेव इनके लग्न भावसे व्यय-भावमें बृहस्पतिकी राशिमें अवस्थित हैं। तथा इनके व्ययेश पराक्रमेश बृहस्पति इनके तनु-भावमें शनिदेवकी राशिमें अवस्थित है, इस प्रकार बृहस्पति तथा शनिमें राशि विनिमय द्वारा एक आदर्श-राजयोगकी सृष्टि हो गई है। निस्सन्देह बृहस्पति अपनी नीच राशिमें है, लेकिन चन्द्रमाके स्वगृही होकर सप्तम-भावमें स्थित होनेके कारणवश इनकी नीचता का भंग होकर नीचभंग राजयोगकी रचना भी हो चुकी है। फलस्वरूप परिवार तथा धन-ऐश्वर्यका पूर्ण परित्याग कर उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन लोकोपकारमें लगाया है। सर्वोदय-समाज तथा आदर्श-जनप्रियशासनकी संस्थापनाके लिए ये अहर्निश प्रयत्नशील हैं। स्मरण रहे कि शनि सदा लोक-शासन तथा समीकरण प्रियसमाजका ही प्रतीकात्मकग्रह है।

श्रीनारायणके शुभ-प्रादुर्भावके अवसर पर नक्षत्र-मंडलमें बुधाधिकृत नक्षत्र अर्थात् अश्लेषा नक्षत्रके चतुर्थ-चरणका शुभोदय हो रहा था। अतएव इनका तात्कालिक चन्द्रमा अपनी ही राशिमें अवस्थित था। बृहस्पति तथा शनिमें परस्पर राशि विनमय होनेके कारण तथा बृहस्पतिकी नीचता भंग होनेके परिणामरूपसे अनेकानेक संकटोंका सहन कर अपने अपूर्व त्याग-बलके कारण ये सदा निस्वार्थ प्रयत्नों में सर्वथा सफल रहे हैं, जिसके उपलक्षमें ही सम्पूर्ण भारतीय जनताने 'लोकनायक' तथा 'युग-पुरुष' एवं 'युग-स्रष्टा'की उपाधियोंसे इन्हें विभूषित किया है। विश्व-वंद्य बापूके पश्चात् ऐसा सम्मान इन्हें ही प्राप्त हुआ है। इनका

सुखेश लाभेश मंगल इनके लग्न-भावसे अष्टम-भावमें अवस्थित है जिसके फलस्वरूप इनका शारीरिक आरोग्य अनुकूल नहीं रहता है। आसन्न अतीतकालमें ही इनकी शल्य-चिकित्सा भी हुई है। तथापि अपने पराक्रम, उत्साह तथा निर्भीकताके कारण सदैव अपने प्रयायोंमें सफल होते जा रहे हैं।

इनका मंगल अपने मित्रकी राशिमें है। लेकिन, अष्टमेश सूर्य इनके राज्य-भावमें अपनी नीचराशिमें अपने परम-शत्रु, शुक्र तथा राहुके साथ अवस्थित है। अतएव, ये राजतंत्र अधिनायकतंत्रके कट्टरविरोधी हैं। यद्यपि सूर्य अपनी नीचराशिमें है, तथापि तुलास्थ शुक्रके कारण केन्द्रस्थ होनेसे इसको भी नीच-भंगकी उपलब्धि हो चुकी है। स्वक्षेत्री शुक्रके कारणवश कर्म-भाव (दशम-भाव) में मालव्य-योगकी सृष्टि हो चुकी है जिसके कारण ही इन्हें यश-सम्मान, कीर्तिख्याति, तथा मान्यताकी अद्य-पर्यन्त, उपलब्धि हुई। तथापि सूर्य राहुके द्वारा शुक्रके आक्रान्त होनेसे इनको अपने दाम्पत्य-जीवनसे पूर्ण वैराग्य-सा ही रहा। इनकी धर्म-पत्नीने एक साध्वी तथा तपस्विनीके रूपमें अपने इस त्यागी तपस्वी पतिका मृत्यु-पर्यन्त इनके सारे समाजोन्नययके कार्योंमें पूर्णयोगदान दिया एवं इन्हींके पवित्र हाथोंसे सद्गति भी प्राप्त की। चिन्तनभावेश तथा राज्येश इस योगकारक ग्रह शुक्रका इनके जीवनमें सदैव महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यह ध्रुव-निश्चय है कि बिहार-राज्य में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण भारतवर्षमें इनके आदर्शों तथा सिद्धान्तों पर सामाजिक तथा राष्ट्रीय शासन-प्रणालीकी स्थापना निकट-भविष्यमें अवश्य होगी।

आर्थिक समीकरण, समानता, स्वतंत्रता तथा विश्व-बधुत्वके अमर-आदर्श पर ही इनके कथनानुसार जनप्रियशासनकी स्थापना आशु-कालमें होगी ही।

इनका शत्रुभावेश तथा भाग्येश बुध उच्चस्थ होकर इनके भाग्य-भावमें अवस्थित होकर इसकी अभिव्यञ्जना कर रहा है कि यद्यपि तत्कालीन रूपमें इनके आन्तरिक शत्रु-तथा बाधकतत्व इन्हें अल्पांशतः बाधित कर दें लेकिन अन्ततः इनकी विजय अवश्य ही हुआ करेगी, तथा सभी शत्रु, प्रतिद्वन्दी विपक्षी इनके समक्ष घुटनें टेकेंगे। इनसे पूर्णतः पराजित होकर इन्हींके आदर्शोंके आधारपर निष्कलंक लोकप्रिय शासनकी संस्थापना सर्वत्र होगी।

सम्प्रति, इनके जीवन-चक्रमें बृहस्पतिकी महादशा चल रही है, जो सन् १९८८ ई० की ७वीं जुलाई तक रहेगी। बृहस्पतिकी इस चलित महादशामें शनिकी अन्तर्दशा (भुक्ति) सन् १९७७ ई० की २०वीं फरवरी तक रहेगी। शनि तथा बृहस्पति में उपर्युक्त अभिन्न सम्बन्धके कारणवश शनिकी अन्तर्दशामें इनके सभी वर्तमान आन्दोलनों तथा सत्याग्रहोंकी पूर्ण सफलता होगी, तथा इनकी रूप-रेखाके अनुसार ही शासन-सूत्रकी प्रणाली अथवा पद्धतिमें मूल-परिवर्तन अवश्य ही होगा।

सन् १९७३ ईस्वीकी १०वीं जूनसे इनके जीवनमें शनिकी साढेसाती चल रही है। इनके शारीरिक आरोग्यके लिए यह शन्यावधि अनुकूल नहीं रहेगी। अतएव, इन्हें अपने शारीरिक आरोग्यके लिए सदा पूर्ण ध्यान देना चाहिए। निस्सन्देह इनके लक्ष्यों तथा आदर्शो की पूर्ति होगी। भगवान् इन्हें चिरतर आयु प्रदान करें।

श्रीमती गांधी तथा श्रीनारायणके जन्म-लग्न तथा चन्द्र-लग्नमें प्रतिकूलता है अर्थात्

शेख अब्दुल्ला : ज्योतिषीय अध्ययन

[लेखक :—श्री पं० रामकृष्ण पाण्डेय एम०ए०]

[इस लेखमें शेख अब्दुल्लाकी जन्मकुण्डली पर विचार किया गया है। विद्वान् लेखकने जन्मतिथि और इष्टकाल नहीं दिया। सिंह लग्नमें राहु, शनि भौमसे दृष्ट है, चन्द्रमा अष्टम और सूर्य भो शनिसे दृष्ट है। ऐसे व्यक्ति महत्वाकांक्षी स्वार्थी हठी होते हैं। शेखको हम राष्ट्रभक्त कदापि नहीं मानते। भारतकी राशिसे उनके जन्मलग्नका षडष्टक योग भो हितावह नहीं है। शेख काश्मीर के सम्बन्धमें सौदेबाजीसे बाज नहीं आवेंगे, अतः भारतको सावधान रहना है। —सम्पादक]

यहाँ मेरा उद्देश्य शेख अब्दुलाकी जन्मकुण्डलीका विश्लेषण और उनके समग्र चिन्तन के माध्यमसे निष्कर्ष तक पहुँचनेका प्रयासमात्र है। शेख अब्दुल्लाकी जन्मकुण्डली पर दृष्टि डालने मात्रसे पाठक बन्धुओंको अनुभव होगा कि जन्मकालीन लग्न सिंहका उदय होना ही प्रभावित करने वाली कुछ स्थिति है और शेष जन्माङ्गमें कोई चीज़ मस्तिष्कको विशेष रूपसे आकर्षित नहीं कर पाती। इस प्रकारकी स्थिति ने मुझे शेख साहबकी कुण्डलीका और भी गहराईसे अध्ययन करने पर बाध्य कर दिया और जैसा कि आप भी सहमत होंगे, सम्बन्धित कुण्डलीमें ग्रह स्थितिके अनुसार केवल शनि स्वगृही है और मंगलकी राशि मूलत्रिकोण अर्थात् नवम भावका अधिपति है, जबकि मंगल स्वयं षष्ठेश हैं, अन्य भावगत ग्रहोंकी स्थिति न नीचराशिगत है और न उच्च राशिगत ही।

आरम्भमें ही एक बात उल्लेखनीय है कि अधिकतर राजनीतिज्ञोंकी कुण्डलीमें कर्क, सिंह, तुला और धनु लग्नका उदय होना ही दृष्टिगोचर होता है, इनमें कर्क और तुलाकी स्थिति थोड़ेसे अन्तर पर एक जैसी ही है, (ग्रहस्थिति को छोड़कर) सिंह इससे बिलकुल भिन्न हैं और धनु दोनोंका संमिश्रण कही जा सकती है। सिंह लग्न होनेके कारण शेख साहबकी कुण्डली में मंगल सर्वाधिक कारक ग्रह और सूर्य तथा बृहस्पति श्रेष्ठ फलदाता है जबकि शुक्र सर्वाधिक हानिप्रद स्थितिका द्योतक है और बुध तो हानिप्रद है ही।

सम्बन्धित कुण्डलीके अध्ययन हेतु इसे तीन भागोंमें विभाजित करना उचित होगा, तथा इसी क्रममें विश्लेषण भी, (१) भावना पक्ष, (२) व्यवहार पक्ष, (३) वर्षफल विश्लेषण और संकेत। **भावनापक्ष** :—इसका अध्ययन करनेके लिये लग्न, द्वितीय, चतुर्थ और एकादश भावका अध्ययन ठीक प्रतीत होता है, साथ ही चन्द्र, बुध, शुक्र और केतुका भी अध्ययन युक्तिसंगत है।

एक-दूसरके जन्म-लग्न तथा चन्द्र-लग्न विलोम वत् (उलटे-से) हैं। अतएव, इनमें ऐसा चरम वैषम्य तथा अन्तर (विभेद) है। अपनी संकीर्णता तथा मदान्धताके कारण जहाँ श्रीमती गाँधी शनिकी महादशा तथा बुधकी भुक्तिमें, विफल होंगी, वहीं श्रीनारायण अपनी उदारता तथा उच्चाशयताके कारण गुरुकी महादशा तथा शनिकी भुक्तिमें, पूर्णतः सफल होंगे।



व्यवहार पक्ष – के अध्ययन हेतु तृतीय, षष्ठ, अष्टम, नवम और दशमभावोंके साथ-साथ सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शनि और राहुका अध्ययन करना उचित होगा।

भावना पक्ष विश्लेषण

सिंह राशि तुच्छ और हीन भावनासे विरक्त संकल्पसिद्धिकी द्योतक है, शरीर सुगठित और दृढ़, साहस और आत्मविश्वासकी प्रचुरताके यथेष्ठ बलने ही शेख साहबको 'शेरे-काश्मीर' जैसी ख्याति अर्जित करानेमें सहायक भूमिका निभाई है। परन्तु इतना सब होने पर भी लग्नमें राहु स्थित है और मंगल, शनि तथा केतुकी दृष्टि है, इस प्रभावके कारण ही जातकमें अपनी मान्यताओं और सिद्धान्तोंके प्रति दृढ़ रहनेकी क्षमता तथा अवसरानुसार अपनेको ढालनेकी गजबकी दक्षता विद्यमान है, ऐसी स्थितिमें जातक लक्ष्यको कभी भी दृष्टि से ओझल नहीं होने देता और सामर्थ्य भर इसकी प्राप्तिके लिये येन-केन प्रकारेण प्रयत्नशील रहता है, सूर्यकी स्थितिके कारण कारक बल भी प्राप्त है।

द्वितीय भावमें कन्या राशि है, इसका स्वामी बुध पञ्चम भावमें स्थित है तथा चन्द्र और बृहस्पतिकी दृष्टि है, बृहस्पति इस भाव का कारक है और स्वयं दशमभावमें स्थित है, इस भावकी स्थिति सन्तोषजनक है, मित्रोंका सहयोग और सम्पर्क, विशेषतया धनी मित्रोंका अभाव न खटकेगा, वाक् शक्तिमें विवेक और तर्क पूर्ण ओजस्विताका सम्मिश्रण होगा, दृष्टिके आधार पर चन्द्र-बृहस्पति युति श्रेष्ठ है और निज हित तथा गोपनीयता (Indrawn and Privacy) के रुझानको भी इंगित करती है। बुध हठवादिताका भी परिचायक है। व मानसिक उद्विग्नता और अशान्तिके कारण स्थितिके गंभीर होनेके भी लक्षण हैं, बुध और चन्द्रका प्रभाव क्रमशः ऋणात्मक और धनात्मक है, कुल मिलाकर सामाजिक प्रतिष्ठा और कूटनीतिज्ञतासे पूर्ण जीवनकी झाँकी प्रस्तुत करता है। यह स्थिति चतुर्थभावगत राशि और ग्रह तथा दृष्टिके कारण स्पष्ट होती है। एकादशभावमें मिथुन राशि है तथा कोई ग्रह स्थित नहीं, बुध तथा केतुकी दृष्टि है, परिणाम स्वरूप चातुर्य और कार्यमें जुटे रहनेकी विलक्षण प्रतिभा होगी, उच्च वर्गीय सम्पर्क और ऐसा व्यक्ति समयको भली प्रकार पहचानने वाला अवसरवादी होता है।

उपर्युक्त ग्रहोंकी स्थितिसे सरसरी तौर पर स्पष्ट है, आरम्भ और अन्तका ग्रह अनुकूलता और मध्यके दो ग्रह प्रतिकूलताके सूचक हैं, अतः इनका फल भी क्रमशः इन्हींके स्वभावानुसार ही प्राप्त होगा। चन्द्र मानसिक तनाव और उद्विग्नता और अशान्तिकी स्थितिमें भी केतुके कारण (शनिवत्) Tact and diplomacy और Indrawn and Privacy के माध्यमसे ओजपूर्ण तथा विवेक पूर्ण भाषाके प्रभाव स्वरूप सम्मान प्राप्तिमें सहायक है, परन्तु राज्य कृपासे वंचित करानेमें बुध और

शुक्र तो निःसन्देह समर्थ ही हैं।

व्यवहार पक्ष विश्लेषण :—

तृतीयभावमें तुला राशि है और ग्रह तथा दृष्टि दोनों ही का अभाव है, इस भावका कारक मंगल श्रेष्ठ स्थितिको प्राप्त है । षष्ठ मकर राशिमें मंगल स्थित है, यह स्थिति शत्रु क्षेत्री है, परन्तु मंगल पर गुरुकी दृष्टि है और मंगल जन्माङ्ग लग्नानुसार प्रबल कारक है अतः समन्वय परिणाम साहस, उत्साह, स्फूर्ति और धैर्यकी स्थिति श्रेष्ठ होगी । अष्टम मीन राशिगत चन्द्र है और दृष्टिका लोप है, अतः गूढ युक्तियोंसे परिपूर्ण व्यवहारका सूचक है, इस स्थल पर कारक शनिकी स्थिति स्मरणीय है । नवम भावमें मेष राशि है, मात्र मंगल और शनिकी दृष्टि है, अतः कर्तव्य निष्ठा, न्यूनाधिक परिवर्तन सहित कट्टरता, व्यवहार प्रदर्शनमें निपुणता आदि गुणोंके साथ भाग्योन्नतिमें सहायक है, विशेषतया सूर्य बृहस्पतिके संदर्भमें । दशम भावमें वृष राशिगत बृहस्पति तथा सूर्य और शुक्रकी दृष्टि है, बृहस्पति और सूर्यसे प्राप्त होने वाले फलों में शुक्रके कारण न्यूनता आ गई है और यद्यपि यथेष्ट प्रतिष्ठा-मान, सम्मान, विदेशयात्रायें और उच्चपद प्राप्ति जैसे श्रेष्ठ अवसर प्राप्त होंगे, परन्तु शुक्रकी हानिप्रद स्थितिसे उपर्युक्त प्रभाव नष्ट और दूषित भी होते रहेंगे ।

ग्रह :—सूर्य श्रेष्ठ फलदाता है, आत्मकारक भी है, अतः तेज, गौरव, मर्यादा आदि गुणोंको सुलभ करायेगा ।

मंगल इस लग्न कुण्डलीका सर्वाधिक कारक ग्रह है, यह अहंकार शौर्य, गर्व, हठ, स्वाधीनता, संगठन शक्ति, कार्य कारिणी शक्ति (Executive power) और वाद-विवादका सृजक है ।

बृहस्पति निज प्रयाससे श्रेष्ठ आर्थिक स्थिति और ख्यातिदाता है, साथ ही अहंकार की गरिमासे युक्त भी रखने वाला है ।

शनि यद्यपि अवरोधक ग्रह है, इस कुण्डली में भी किसी सीमा तक इसके द्वारा हानिजनक स्थितिका ही योग हुआ है ।

राहु ईर्ष्या, द्वेष प्रतिद्वन्द्विता आदिकी सृष्टिका द्योतक है, लग्नमें स्थित होनेके कारण इसने स्वार्थ जैसी प्रवृत्तियोंको उभारनेमें सहायक भूमिका निभाई है, आकांक्षाओंको अतृप्त बनाये रखनेकी विचित्र प्रकृति, साथ साथ परिवर्तनशील और चञ्चलताका भी द्योतक है, यह मानवताके विपरीत क्रूर ग्रह समझा जाता है, फिर भी सौभाग्यका स्रष्टा है ।

वर्षफल विश्लेषण और संकेत : —

वर्षफल : लग्न सिंह, मिथुनमें—शनि । कन्या में चन्द्र । वृश्चिक, सूर्य, बुध, मंगल, शुक्र और राहु । कुंभ, बृहस्पति, वृषमें केतु । मुन्था द्वितीय भाव कन्यामें ।

भावी एक वर्षकी घटनाओंका लेखा-जोखा वर्षफलसे ही संभव है, अतः अधिक विस्तारमें न जाकर यहां संक्षिप्त समीक्षा ही प्रस्तुत है ।

- आने वाले वर्षमें शेखसाहब संतुलित दृष्टिकोण अपनायेंगे, अर्थात् अपनेको अधिक भावुक साबित न होने देंगे, व्यवहारिकताका पूर्ण परिचय देनेके लिये तत्पर रहेंगे ।
- आगामी वर्षका घटनाक्रम विचित्रनाटकीयताका परिचायक होगा और कभी-कभी ऐसी स्थितिका बोध भी होगा जैसे सब कुछ पास आकर खिसक रहा हो, अतः मानसिक बाधाओंका सृजन भी होगा ।
- आरम्भके लगभग तीन मास जनवरीसे मार्च तक बहुत अधिक उत्साहवर्धक

मूक प्रश्न विज्ञान : एक विवेचन

[लेखक :—श्री मदनमोहन शर्मा 'अरविन्द']

ज्योतिष्मतीके गत श्रावणमास वर्ष १७ संख्या ४ में आपने ज्योतिषका महत्व, मूक प्रश्न क्या है ? इसका विवेचन किन-किन ग्रन्थों में है ? और पिंड निकालनेके विषयोंमें पढ़ा। इसके आगे पढ़िये पिंडकी सहायतासे प्रश्नोंके विषयका ज्ञान।

पिंडमें ३ का भाग दें, शेष यदि १ बचे तो प्रथम काल। २ बचें तो द्वितीय काल। ० बचें तो तृतीय काल।

यथा—पहले उदाहरणोंके अनुसार—चंपा का पिंड—२००। ३ का भाग देने पर लब्धि ६६ एवं शेष २। शेष २ से 'द्वितीय काल' ज्ञात हुआ। काल ज्ञानके अनुसार प्रश्नका विषय इस भांति जाना जाता है। पिंडमें काल ज्ञानके समय भाग देने पर प्राप्त हुई लब्धिको युक्त करके योगमें पुनः ३ का भाग दें। भाग देने पर शेष यदि १ हो और प्रथम कालका प्रश्न हो तो धातु संबंधी प्रश्न। द्वितीयकालका प्रश्न हो तो मूल संबंधी प्रश्न। तृतीय कालका प्रश्न हो तो जीव संबंधी प्रश्न। और यदि शेष २ हो एवं प्रथम कालका प्रश्न हो तो मूल सबंधी प्रश्न। द्वितीय कालका प्रश्न हो तो जीव संबंधी प्रश्न। तृतीय कालका प्रश्न हो तो धातु संबन्धी प्रश्न तथा शेष यदि ० हो और प्रथम कालका प्रश्न हो तो जीव संबंधी प्रश्न। द्वितीय काल संबंधी प्रश्न हो तो धातु[1] संबंधी प्रश्न। तृतीथ कालका प्रश्न हो तो मूल[2] संबंधी प्रश्न। पृच्छकके हृदयमें वर्तमान रहता है।

यथा—

पूर्व पिंड—२००+लब्धि ६६=२६६

३ का भाग देने पर लब्धि ८८ शेष २

शेष २ एवं द्वितीय कालका प्रश्न होनेके कारण जीव[3] संबंधी प्रश्न हुआ। यही मत आचार्य गर्गका है—

"धातुर्मूलं तथा जीवं मूल जीवं च धातुकम्
जीव धातुं तथा मूलं ज्ञेयं काल कमेण च।।

इतना जान लेनेके अनन्तर पिंडमें काल ज्ञान वाली (प्रथम) और प्रश्न विषय ज्ञान वाली (द्वितीय) दोनों लब्धियां जोड़ दें।

यथा—

१–धातुसे अभिप्राय सोने चांदी रत्न आदिसे है।
२–मूलसे अभिप्राय काठ त्वचा पत्ते लता आदिसे है
३–जीवसे अभिप्राय जीवधारियों स्त्रीपुरुषपशुसे है

प्रतीत नहीं होते, इस बीच विभिन्न समस्याओंकी घुटन और स्वास्थ्य सम्बन्धी गिरावटके लक्षणोंकी ही प्रचुरता रहेगी।

- परन्तु फरवरी ७५ के अन्तिम सप्ताहसे उपर्युक्त स्थितिमें सुधारकी गति होगी और पूर्वार्द्धसे उत्तरार्द्ध श्रेष्ठ फलदायक होगा।
- जुलाईके पश्चात् अगस्त और सितम्बर मासफलकी दृष्टिसे श्रेष्ठ नहीं।
- अक्तूबर ७५ से आगे समय काफी श्रेष्ठ लाभप्रद है, इस समयमें मान, सम्मान, उत्साह, गौरव और कीर्ति सभीसे साक्षात्कार होगा, वास्तवमें यह ही समय पूरे वर्षमें सर्वश्रेष्ठ समयकी संज्ञा प्राप्त करने में सक्षम है।

पिंड २००+प्रथम लब्धि ६६+द्वितीय लब्धि ८८=३५४।

प्राप्त योगमें प्रश्नके विषयके अनुसार—
यदि जीव सबंधी प्रश्न हो तो ४ का।
यदि मूल संबंधी प्रश्न हो तो ६ का।
यदि धातु संबंधी प्रश्न हो तो २ का।
भाग दें।

यदि ४ का भाग दिया गया हो तो शेष
१ रहने पर द्विपद संबंधी प्रश्न।
२ रहने पर चतुष्पद संबंधी प्रश्न।
३ रहने पर अपद संबंधी प्रश्न।
० रहने पर बहुपद संबंधी प्रश्न।

और यदि ६ से भाग दिया गया हो तो शेष—

१ रहने पर मूल (जड़) संबंधी प्रश्न।
२ रहने पर काष्ठ (काठ) संबंधी प्रश्न।
३ रहने पर त्वचा (छाल) संम्बन्धी प्रश्न।
४ रहने पर पत्र (पत्ता) संबंधी प्रश्न।
५ रहने पर पुष्प (फूल) संबंधी प्रश्न।
० रहने पर फल संबंधी प्रश्न।

एवं यदि २ का भाग दिया गया हो तो शेष
१ रहने पर धाम्य (गलनशील) धातु संबंधी प्रश्न।
० रहने पर अधाम्य ,, ,,।

यथा—पूर्व योग ३५४ जीव चिंता संबंधी प्रश्न होनेके कारण ४ का भाग दिया। इस भांति लब्धि ८८ व शेष २। चूंकि ४ से भाग दिया गया और शेष २ रहा अत: चतुष्पद (चौपाए) संबंधी प्रश्न हुआ।

अब पूर्व योगमें अभी प्राप्त हुई लब्धि जोड़ दे। उदाहरणार्थ—

पूर्वयोग ३५४+८८=४४२ लब्धि।

योगमें यदि द्विपद* संबंधी प्रश्न ज्ञात हो तो ४ का भाग दें शेष यदि—

१ हो तो देवता संबंधी प्रश्न समझें।
२ हो तो मनुष्य संबंधी प्रश्न समझें।
३ हो तो पक्षी संबंधी प्रश्न समझें।
० हो तो राक्षस संबंधी प्रश्न समझें।

यदि चतुष्पद संबंधी प्रश्न हो तो गाय घोड़ा आदि चार पैर वाले जीवधारियों संबंधी प्रश्न समझें। यदि अपद संबंधी प्रश्न ज्ञात हो तो सर्प इत्यादि बिना पैरों वालेके संबंधमें प्रश्न समझें। और यदि बहुपद संबंधी प्रश्न ज्ञात हो तो बहुतसे पैरों वालेके संबंधमें प्रश्न समझें। मूल संबंधी प्रश्न होने पर योगमें ६ का भाग दें, शेष १ से वस्तुका रंग सफेद, २ से लाल, ३ से पीला, ४ से काला, ५ से चितकबरा और ० से हरा समझना चाहिए।

यदि धाम्य धातु सबंधी प्रश्न हो तो पूर्वानीत योगमें १० का भाग दें। शेष यदि—

१ हो तो सुवर्ण संबंधी प्रश्न।
२ ,, चांदी ,, ,,।
३ ,, तांबा ,, ,,
४ ,, गिलट ,, ,,
५ ,, कांसा ,, ,,
६ ,, पीतल ,, ,,
७ ,, सीसा ,, ,,
८ ,, जस्ता ,, ,,
९ ,, लोहा ,, ,,
० ,, रांगा ,, ,,

यदि अधाम्य धातु संबंधी प्रश्न हो तो योगमें १० का भाग दें और एकादि शेष क्रमसे

*द्विपदसे तात्पर्य २ पैरों वाले जीव धारियोंसे है।

त्रैमासिक व्यापार-दिग्दर्शन

[लेखक :–ज्योतिषरत्न श्री राजाराम जैन अर्घकाण्ड-वाचस्पति]

माघ मास

मार्गशीर्ष कृष्णा १ शनिवारी, पौष कृष्णा १ रविवारी और यह माघ कृष्णा १ मंगलवारी होनेसे "शनिअङ्गारक योग" महोत्पातक है। वस्तुओंकी चलती लाइन बदलेगी तथा माघ मासमें ५ मंगलवार संवत् २०२० की भांति सभी अन्नादि विशेष तेज होंगे कहा भी है कि :–

'महा मङ्गल ज्येष्ठैं रवी, भादों शनियुत होय।
तात कहे रे बालका नाजमें एकका दोय ॥

३० जनवरीको कृष्णा तिथि ४ का क्षय उ०प्र० पंजाब राजस्थान म०प्र० में वर्षा होने की पूर्ण आशा है। ता० ३१ को प्राय: सभी वस्तुओंमें तेजी कर देगा। कृष्णा ५ शुक्रवारी षष्ठी शनिवारी सप्तमी रविवारी होनेसे कहीं युद्ध तो कहीं प्रजा-विग्रहादिसे त्राहि-त्राहि होगी। पशु भोज्य वस्तुयें मन्दी। आगे भाद्रपद मासमें उत्तम वर्षाकी सूचक है। ४ फरवरीको पुन: मकरे बुध जो शुक्रको छोड़कर उलटा चलनेसे ५।७ दिनमें उपर्युक्त क्षेत्रोंमें तथा हिन्द व्यापी अच्छी वर्षा करेगा। ता० ६।७ को हर्षल वक्री जबर्दस्त चाल देगा। ता० ८ को ३।४२ बजे भौम शनि दृष्टिसे महोत्पात या आन्दोलनका प्रारम्भ या अन्नादि सभी वस्तुओंमें जबर्दस्त तेजी या मन्दा चल पड़ेगा। १३ जनवरीका टर्निङ्ग हो सकेगा। गुड़ खांड पर राजकीय घोषणासे विचित्र चाल निकलेगी। किरानेके व्यापारी सावधान! कृष्णा १४ रविवारीकी वृद्धि तेजीकारक, कहीं प्लेग भी सुनाई देगा। कृष्णा १२।१३।३० को बादल बिजली गर्जना ओलापात हो तो उपजकी श्रेष्ठता पर सभी वस्तुयें मन्दी, किराना भी प्रभावित होगा। ११ फर्वरीको गुरु+शुक्र+चन्द्रयोगसे भारतके पश्चिममें युद्धादि भय, गुजरात व दक्षिणी हिन्दमें उत्पात होंगे। शुक्ला १ बुधवारी संवत् २०२०।२०३० की भाँति आलू प्याज लहसुन अदरख सोंठ हल्दी जीरा धनियां साग-सब्जी तेलके बीज अन्नादि तेज, धातुयें मन्दी होंगी। आज ही रातको १३ फर्वरीमें कुम्भे अर्कः (१५ मुहूर्ता) होते ही चतुर्ग्रही जबर्दश्त चाल देगी। मिथुनांशे गुरु-बुध ता० १७ तक बादल वर्षा होते ही मन्दा। ता० १४ को पूर्वोदयी बुध रातसे वर्षा और घोर मन्दा होगा। ता० १८ को गुरु-शुक्र युति सभी वस्तुओंमें एकदम तेजी होगी। यहां शुक्ला ४ शनिवारी शुक्ला ५ रविवारी शुक्ला ६ सोमवारी शुक्ला ११ शनिवारी देशी घी तेलके बीज सभी अन्नादिके भावोंको आगे सवाया डयौढ़ा करदे आश्चर्य नहीं। किन्तु शुक्ला ७ को भरणी नक्षत्र भयानक मन्दी कीसूचना दे रहा है। यहांसे ८ दिनमें उपर्युक्त क्षेत्रोंमें वर्षा हो तो यहां तुरन्त श्रेष्ठ मन्दा,

---

मृत्तिका, अंजन, पाषाण, हड़ताल, शिला, शक्कर, मर्कत, वज्र, पद्मराग और प्रवाल संबंधी प्रश्न समझ लें। शेष ० होने पर मौक्तिक संबंधी प्रश्न होता है।

इतनी जानकारियां करनेमें प्रयुक्त भाज्य और लब्धिका पुन: योग करें। योगमें पुन: द्विपदादि क्रम जान कर यथोचित संख्यासे भाग देना चाहिए, जिनका विवेचन हम अगले अंक में करेंगे। (क्रमशः)

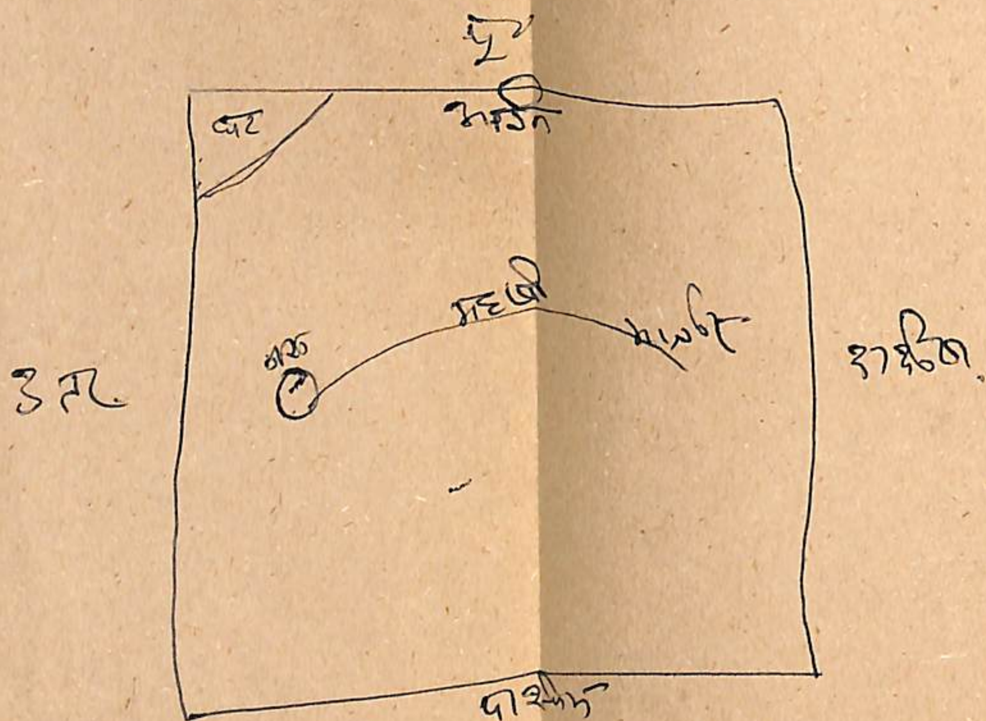
साथ ही उसी क्षेत्रमें आगे वर्षाकाल भी निश्चत रूपसे श्रेष्ठ रहेगा, परीक्षित है। प्रसङ्ग देखते हुये चलती लाइनका ही उपयोग करें। ता० २० को रोहिणी वाले दिन वैधृत योग रुई पाट रेशम कपड़ा ऊन कालीमिर्चमें अच्छी मन्दी लाने वाला योग है। ता० २१ को मार्गी बुध समर्थक है, बादल वर्षा भी करेगा। ता० २२ को सभी खाद्य वस्तुयें मन्दी, कहीं-कहीं वर्षा भो होगी। माघी पूर्णिमाको मघा नक्षत्र आगे भी मन्दा लावेगा।

फाल्गुन मास

कृष्णा ८ बुधवारी मन्दीकारक, आज ही ५ मार्चको रुई पाट रेशम कपड़ा कालीमिर्च तेज, अन्य सभी वस्तुयें मन्दी होंगी। ता० ८ को चना चांदी-सोना सर्वधातु तेलके बीज तेज होंगे। कृष्णा १३ को उपर्युक्त शेत्रोंमें जहां जोरसे वायु चलेगी वहां टिड्डीभय, किसी नेता का पतन वा अवसान भी सम्भव है। ११ मार्च को सायं ३।२७ बजे कुम्भे बुध होकर सूर्य+बुध योग मसूरके साथ सभी दाल अन्न मन्दे, गुड़ खांड सोना चांदी सर्वधातु भी मन्दी होगी। ता० १२ को बादल वर्षा वायुवेग, संक्रान्ति अमावस बुधवारी सोनासे मिट्टी पर्यन्त सभी वस्तुयें तेज करेगी। ता० १३ को सभी वस्तुओं में मन्दी, चांदी जस्तामें अच्छा मन्दा, ता० १४ को प्रातः नेपच्यून बक्रीसे तिलहन-दलहन तेज, आज ही १।१८ बजे शनि मार्गीसे बादल वर्षा वायुवेग, वस्तुओंकी चलती लाइनमें जबर्दस्त परिवर्तन, अथवा तिलहन-दलहनमें अच्छी मन्दी कीं चाल देगा, सोना चांदी सर्वधातुमें भी मन्दा ही लावे आश्चर्य नहीं, किन्तु रातको मीने रवि होते ही तिलहन-दलहनमें जबर्दस्त मन्दा आ जानेकी आशंका है। गुड़ खांड सोना चांदीके घटे भाव बढ़ने लगेंगे। ७।१० दिनमें सोना-चांदी सर्वधातुको तेज करेगी। ता० २४ को सभी वस्तुयें तेज। ता० २५ को सभी वस्तुयें मन्दी। ता० २६ को पूभायां बुध भरणी में शुक्र समर्थक है, आज ही रातमें ता० २७ को भद्रा मुखोत्तर बुधवार उ०फा० नक्षत्रमें होलिका दहन तेजीकारक है।

चैत्र मास

इस मासमें जहां पतझड़ होकर वृक्ष नंगे हो जावेंगे वहां वर्षाकालमें आगे निश्चित रूपसे श्रेष्ठ वर्षा होगी। कृष्णा ४ का क्षय मन्दीकारक ता० २८ को डेढ़बजेसे २ अप्रैलको ११।१५ बजे तक बादल चाल उपर्युक्त क्षेत्रोंमें हो तो उत्तम ता० ३० तकसोना-चांदी पाट कालीमिर्च रेशम तेलके बीज दाल अन्न मन्दे होंगे। ता० ३१ को तुलांशे राहु-शुक्र २ अप्रैल तक सभी वस्तुयें मन्दी होंगी। १ अप्रैलको सभी वस्तुयें मन्दी होंगी। कृष्णा ७ को घटाटोप बादल उपर्युक्त क्षेत्रोंमैं हो तो सभी खाद्य वस्तुयें तेज; कृष्णा ८ की वृद्धि समर्थक है। ता० ३ को शी० कुम्भे भौमसे बादल वर्षा वायुवेग सभी व्यापारिक वस्तुओंमें तूफानी-सुलतानी विचित्र चाल देगा। ता० ५ को बादल वर्षा वायुवेग। ३१ मार्चको चली लाइन बदले या तेजी होगी। ता० ७ को सभी वस्तुयें तेज, सोना-चांदी सर्वधातु भी तेज होगी। कृष्णा ११ सोमवारी मूंग मोठ मसूर ज्वार बाजरा मक्का तेज, किन्तु आज महापात योगमें सभी शुभ कार्य १ बजे तक बर्जित है। साथ ही मन्दा भी रहेगा। ता० ८ को सायं ४ वजे २० जून ७४ की भांति पुनः बनेगा जो सोना चांदी सर्वधातु पाट रेशम कालीमिर्च



इतनी जानकारियां करनेमें प्रयुक्त भाज्य और लब्धिका पुनः योग करें। योगमें पुनः द्विपदादि क्रम जान कर यथोचित संख्यासे भाग ... जिनका विवेचन हम अगले अंक

... शनिवार देशी घी तेलके बीज सभी अन्नादिके भावोंको आगे सवाया डयौढ़ा करदे आश्चर्य नहीं। किन्तु शुक्ला ७ को भरणी नक्षत्र भयानक मन्दी कीसूचना दे रहा है। यहांसे ८ दिनमें उपर्युक्त क्षेत्रोंमें वर्षा हो तो यहां तरन्त श्रेष्ठ मन्दा,

तेलके बीजोंमें यहां भी मन्दा लावे आश्चर्य नहीं। ता० ११ को बादल वर्षा वायुवेग, सोना चांदीमें विचित्र चाल, सभी खाद्य वस्तुओंमें मन्दा अथवा १२ मार्चको चली लाइन यहां बदल भी सकेगी। मन्दीकी आशा है। संक्रान्ति अमावस शुक्रवारी सभी धातुओंके साथ अन्य वस्तुयें भी तेज करेगी। सं० २०३२ का प्रारम्भ शनिवारको होनेसे वर्षेश शनि तिलहन-दलहनके संग्रहसे श्रावण तथा मार्गशीर्ष मासमें लाभ करावेगा। काली वस्तुयें मन्दी, तेल उड़द घी बाजरामें अच्छा मन्दा। सोना तेज, (यहांसे एक मासमें गुड़ खांडमें तेजी सम्भव) वर्षाकाल में कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टिसे उपज का नाश, किन्तु रोहिणीका बास समुद्रमें संवत् मालाकार गृहमें एवं मेघ नाम द्रोण प्रायः सर्वत्र अच्छी वर्षा करेगा, ऐसी आशा है। शुक्ला १ से शुक्ला ४ तक उ०प्र० पंजाब राजस्थान म०प्र० में बादल हों तो वहां वर्षा-काल उत्तम रहेगा। शी० शत० भौम ७ दिन तक उपजकी आवकको बढ़ाकर मन्दी लावेगा। सोना चांदी सर्वधातु तेज होगी। १४ अप्रैल को सवेरे मेषे अर्क कालमें मेषे चन्द्र (जन्मवेध) से उपजकी वस्तुयें मन्दी, सोना-चांदी सर्वधातु तेज होगी। अतिचारी गुरुका शी० ता० १६ तक यत्र-तत्र वर्षा और मन्दा सभी धातुयें तेज होंगी। ता० १५ से दाल अन्न व सभी धातुयें तेज होंगी। शुक्ला चतुर्थीको चावल विशेष तेज। शुक्ला ५।७।१३ को उपर्युक्त क्षेत्रोंमें जहां वर्षा होगी वहां वर्षाकाल प्रायः सूखासा रहेगा। ता० १६ को सभी वायदे तेज। सायं ३।३२ बजेसे अच्छा मन्दा होगा। रातको चना दाल अन्नादि मन्दे, सोना चांदी सर्वधातु तेज होगी। ता० १७ को मन्दी वस्तुयें खरीदो। ता० १९ सूर्य-बुधकी वहिर्युति ७ दिन पूर्वसे आज तक तेजी। ता० २० से ता० २२ तक सभी वस्तुयें मन्दी, ता० २४ को शुक्ला १४ का क्षय तेजीकारक, चैत्री पूर्णिमा शुक्रवारी चित्रा संयोगी उपजकी सभी वस्तुओंमें अच्छा मन्दा पेश करेगी। लाभ-हानि का पूर्ण उत्तरदायित्व प्रयोक्ता पर ही रहेगा।

त्रैमासिक राशि भविष्य

[लेखक :—श्री पं० कैलाशनाथ उपाध्याय ज्योतिर्विद]

माघ मासका राशिफल

(ता० २८ जनवरीसे २६ फरवरी ७५ तक)

मेष—यह मास सामान्य है । विश्वास-पात्रोंसे धोखा, खर्चकी अधिकता और विशेष दौड़-धूपसे शरीरको कष्ट होगा । विद्यार्थियों को बुद्धि-हीनताका सामना करना पड़ेगा । चित्त अशान्त रहेगा । साधारण द्रव्य, अन्न, वस्त्रादिकी प्राप्ति होगी । धर्मका अभाव रहेगा । ता० १९ फरवरीसे द्वादशस्थ गुरुका प्रवेश अशुभ है । गहरे आत्म-विश्वासके साथ कर्मक्षेत्रमें जुटे रहना तथा गुरु-बृहस्पतिका उपचार करना अनिवार्य है ।

वृष—व्यावसायिक सफलताका योग चल रहा है । साहसिक कामोंमें उत्साह व स्फूर्ति दिखायेंगे । स्त्री सन्तानका सुख, व्यापार-नौकरीकी स्थिति असामान्य रहेगी । शरीर भी पूर्णत: स्वस्थ रहेगा । राजनीतिक व्यक्ति उच्चकोटिकी सफलता प्राप्त करेंगे । धार्मिक क्षेत्रमें दर्शनार्थ प्रोग्राम बनेगा । आपका खर्च वस्त्रादि निर्माण पर बढ़ जायेगा । सरस्वतीके उपासकों एवं विद्यार्थियोंको बौद्धिक तनाव प्रतीत हो सकता है ।

मिथुन—शासकीय उलझनों पर विजयोपलब्धि होगी । कुछ विशेष द्रव्य लाभ होगा । व्यापार-नौकरीमें उतार-चढ़ाव होता रहेगा । वेकारकी कुछ घरेलू झंझटें सामने आयेंगी । दौड़-धूप व दिमागी कामोंकी उलझनें बढ़ सकती हैं । धर्म:कर्ममें आस्था कुछ बढ़ेगी । विद्यार्थीवर्ग विशेष परिश्रमसे सफल होंगे । महिलाएँ हर क्षेत्रमें कृत-कार्य रहेंगी । ता० १९ से १०वें गुरुका प्रभाव परिस्थितियोंका सुधार करने वाला होगा । धैर्य रक्खें ।

कर्क—यह मास अशुभ है । दैनिक-कृत्यों में अवरोध उत्पन्न होगा । भोजनमें अबेर-सवेर वायु-पित्त जनित पीड़ा, मिथ्या कलंक इत्यादिसे बचना चाहिये । घरेलू सुख-शान्ति खटाईमें पड़ेगी । अर्थाभावसे मानसिक विफलता, मानसिक उन्माद, पारिवारिक उलझन एवं नित्य नई परेशानियोंका सामना करना पड़ सकता है । ता० १६ से २२ फरवरीके बीच मानसिक परेशानीमें कुछ कमी आ जायेगी और सामान्य द्रव्य लाभ भी होगा ।

सिंह—चालू व्यवसायमें कर्म तत्परतासे सफलता मिलेगी । सम्पर्कमें आने वाले साधु-पुरुषोंसे अनुग्रह प्राप्त होगा । आर्थिक स्थिति सामान्य रहते हुए भी उत्साह बल बढ़ेगा । इतना सब शुभ प्रभाव होते हुए भी आप यह देखेंगे कि आपके चारों तर्फ एक प्रबल विरोधी दल तैयार हो रहा है—अतः सामाजिक संघर्षके लिए तैयार रहना चाहिए । ता० १९ से अष्टमस्थ गुरुका पदार्पण चिन्तनीय रहेगा । सूर्य उपासनासे शान्ति होगी ।

कन्या—रोग-शोककी वृद्धि होगी । मानसिक तनाव, संताप, अपव्यय, घरेलू कठि-

नाईयाँ, पति-पत्नीके बीच परस्पर अवरोध-विरोधका प्रत्यक्ष आप स्वयं करेंगे। यद्यपि मित्र पक्ष आपकी सहायता करनेको आतुर रहेंगे, यथा सम्भव आप उनसे लाभान्वित भी होंगे, तथापि आर्थिक लेन-देनमें आपको सतर्क रहना ही चाहिए। शुक्लपक्षमें द्रव्यागम, कर्म-व्यस्ततासे कठिनाइयां कम हो जायेंगी।

तुला—अपव्ययके साथ आर्थिक स्थिति में स्वल्प सुधार होगा। अपनी बुद्धिका उपयोग करके आप जीविका प्राप्त करेंगे। स्वतन्त्र व्यवसायमें सफलता, भागीदारीमें कष्ट होगा। राश्येश शुक्र उच्च सम्मान प्राप्तिमें सहायक है। नौकरी वाले लोग शिथिलताके शिकार होंगे, उन्हें अपने उत्साहको जागृत करना चाहिये। राजनीतिज्ञोंकी नेतृत्व शक्ति बढ़ेगी, यात्राका प्रोग्राम बनेगा।

वृश्चिक—मासफल उत्तम है। पीले तथा सफेद रंगके वस्त्र धारण करनेसे आकर्षण शक्ति बढ़ेगी। वृश्चिक राशि वाले युवावर्ग विला-सिता-प्रवृत्तिसे बचें। भ्रमणमें सन्त-समागम का अवसर मिलेगा। प्रसूति-स्त्रियोंको पुत्रकी प्राप्ति होगी। भाइयोंके सुख-स्नेहमें बाधक योग है। मित्रोंके बीच गलतफहमीके शिकार हो सकते हैं। हनुमानजीकी उपासना करें।

धनुः—अभीष्ट कार्य पूर्ण होगा। आजीविका के जिज्ञासुओंको किसीकी मददसे पनपनेका अवसर मिलेगा। धार्मिक कामोंके विचार मन में आयेंगे, उसमें कुछ सफल भी रहेंगे। भाई-बहनोंका सामान्य सुख मिलेगा। व्यायाम-प्रियता एवं कार्य सम्पादनकी क्षमता बढ़ेगी। श्रेष्ठजीवनी शक्ति, उत्साह वृद्धिका योग है। परन्तु मासान्तमें अतिव्यय, व्यर्थभ्रमण आदि पर नियन्त्रण जरूरी है।

मकर—मानसिक उत्तेजनामें वृद्धि होगी। किसी खास स्नेही जनसे बिगाड़ पैदा होगा। नेत्र-दृष्टि कुछ दुर्बल रहेगी। वृद्ध जनोंको आकस्मिक दुर्घटना, मृत्यु तुल्य कष्ट, लोकापवा-दादिका भाजन बनना पड़ सकता है। गुरुके अनुकूल परिणाम स्वरूप वक्तृत्व और नेतृत्व शक्ति बढ़ेगी। भावुकताकी जगह चिन्तनकी विचारधारा कार्य-रूपमें परिणत होगी।

कुम्भ—मासफल मध्यम है। दृष्टि दोष से कोई भूल संभव है—जिस पर पश्चात्ताप करना पड़ेगा। किसी स्नेहीजनके अस्वस्थताका समाचार मिलेगा। जीवनी-शक्ति कुछ कमजोर रहेगी। राश्येश शनि कमजोर देह और दुर्बल आरोग्य प्रदान कर रहा है। विषय लोलुपतासे बचिये, उत्तरार्द्धमें कर्मक्षेत्रका विकास होने वाला है। परिश्रमके अनुसार द्रव्यागमसे प्रसन्नता।

मीन—राश्येश गुरुकी द्वादश एवं जन्मगत स्थिति, दोनोंका संधिकाल परेशानियोंको बढ़ाने वाला है। नौकरी वालोंको घोटाला महसूस होगा। भ्रमणमें कठिनाइयां आयेंगी। विषयासक्त एवं दीर्घसूत्री मित्रोंसे बचकर एकान्त-साधना करें तो आजीविका सम्बन्धी कोई दिक्कत नहीं आयेगी। मंगल ग्रहकी अनुकूलतासे साहस और उत्साह बढ़ेगा, उसीसे दैनिक कृत्य सफल होगा।

फाल्गुन मासका राशिफल

(ता० २७ फरवरीसे २७ मार्च ७५ तक)

मेष—यह मास साधारण है। बौद्धिक

और मानसिक शक्तियोंका सर्वश्रेष्ठ विकास होगा। आरोग्य लाभके साथ ही जीवनी शक्ति भी बढ़ जायेगी। व्यापारमें आपके कार्यक्षमता की जरूरत है, तदनुकूल व्यापारिक सफलता मिलेगी। आत्मश्रद्धा, काम करनेकी ताकत और हिम्मत अटूट रहेगी। मासान्तमें कुछ स्थाई लाभ व्यवसायपक्षसे होगा। बुद्धि-चातुर्य प्रशंसा-योग्य होगा।

वृष—मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। आप उद्योगी, उत्साही और नीति कुशल बनकर हर क्षेत्रमें सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अन्त-स्फूर्तिसे सूझबूझ लाभदायी होगी। यातायात वाहनादि साधनोंसे सम्बन्धित व्यवसायी, सरकारी नौकर तथा अधिकारी वर्गके लिए यह मास उलझन पूर्ण होगा। शुक्लपक्षमें हृदय विकार रक्तचाप एवं श्वांसके रोग शरीके लिए कष्टदायी होंगे, उपचार पर ध्यान दें।

मिथुन—कठिनाइयोंके साथ प्रयासोंमें सफ-लता। यह मास सौख्यदायी है। परिश्रमके मानसे सामाजिक प्रभाव एवं धन-प्राप्ति सामान्य रहेगी। दूरस्थ इष्टमित्रोंके द्वारा कुछ फायदा रहेगा। घर-परिवारका वातावरण सन्तोषपूर्ण नहीं रह सकेगा। बुद्धिजीवियोंको उत्तरार्द्धमें थोड़ी परेशानी होगी। ता० ७,८, १६,१७,२३,२४ मार्च कष्टप्रद रहेगा।

कर्क—मासफल अशुभ है। अकारण परे-शानी होगी, जिससे कदाचित् आपकी बुद्धि कुंठित हो जायेगी। रेव्हिन्यूविभागसे सम्बन्धित उच्चाधिकारियोंको लोकापवाद-अपमानादिका सामना करना पड़ेगा। स्वाभाविक पारिवारिक चिन्ताके साथ कुछ आशा और कुछ सन्तोष दिखाई देगा। भाई-बन्धुओंके कारण खर्च योग प्रबल रहेगा। यात्राकारी योगसे लाभ उठानेको तैयार रहें।

सिंह—औद्योगिक विकासमें बाधा आयेगी। आपके निजी सिद्धान्त उन्नतिमें बाधक होंगे। माता या पिताके आरोग्यकी चिन्ता होगी। वृद्धजनोंके प्रति द्रव्यका अतिव्यय होगा। सामाजिक जीवनमें प्रगतिकी दिशा अवरुद्ध रहेगी। बन्धु-बान्धवोंके बीच सहयोग अटूट रहनेसे उत्तरार्द्धमें बिगड़ते हुए कार्य बन जायेंगे। ता० १० मार्चसे प्रतिष्ठा-वृद्धिका योग शुरु होगा।

कन्या—साधन-सम्पन्न होते हुए भी आप हार्दिक दुर्बलताका अनुभव करेंगे। निजी नित्य व्यवसायमें द्रव्य प्राप्ति कम होने पर भी अन्य मार्गसे, मित्रोंसे, बौद्धिक कामोंसे अथवा अचा-नक लाभ होकर पैसोंकी सहूलियत रहेगी। पत्नीसे सन्तोषपूर्ण व्यवहार रहेगा। सन्तान-पक्षसे उचित समाधान मिलेगा। खर्च बढ़ जायेगा। सामान्य कर्मचारियोंको विशेष आर्थिक उलझनोंका सामना करना पड़ेगा।

तुला—कर्मक्षेत्रका विकास होगा। शुक्र ग्रहके गुण धर्मोंका विकास, व्यापारिक परि-वर्तन, बौद्धिक और मानसिक शक्तियोंका विकास, संकोची स्वभावके शुभोदयका योग चल रहा है। स्थावर सम्पत्तिमें कुछ वृद्धि या लाभ होगा। उपदेशक, ट्रस्टी, बैंकर्स तथा बीमा-व्यवसायियोंके लिए गहरे लाभका अव-सर है। मित्रोंसे मिलाप, आमोद-प्रमोद, भ्रमण मनोरंजनका उत्तम योग है।

वृश्चिक—यह मास खराब है। व्यवसायसे

कष्ट और कठिनाइयोंका सामना करना पड़ेगा। शत्रुवर्ग अतिक्रमण करेंगे। आपको बुद्धि दोष उत्पन्न होगा। जिससे अकारण या सकारण विवाद-कलह पैदा होगा। उन्नतिमें अड़ंगे पैदा होंगे। बार-बार चिन्ताको स्थान मिलेगा। शान्त चित्तसे, ईश्वर पर भरोसा रखकर, धैर्यपूर्वक काम करनेसे उचित मार्ग मिलेगा।

धनुः—व्यापार धन्धेमें मामूली आमदनी होगी। खनिज व्यवसायियोंको उन्नतिका आसार दिखाई देगा। हिम्मत बढ़ेगी। परिस्थितियोंमें कुछ सुधारकी आशा रहेगी। नई योजना प्रारम्भ करनेका विचार हो तो अभी स्थगित रक्खें। आपकी चित्तवृत्तियाँ एकाग्र होना जरूरी है। ता० १४ से चतुर्थ सूर्य घरेलू सुख-सुविधामें बाधाकारक होगा।

मकर—मासफल उत्तम है। अध्यवसायिक शक्तिकी वृद्धि होगी। प्रवास तीर्थयात्रा या धार्मिक कार्योंमें खर्च बढ़ेगा। धातु व्यवसायियों को विशेष लाभ होगा, और व्यावसायिक उन्नति होगी। इष्टदेवका जाप पूजन कल्याणकारी होगा। स्वास्थ्यकी स्थिति बहुत अच्छी नहीं रहेगी। पत्रव्यवहारसे शुभ समाचार मिलेगा। जो कुछ अर्थलाभ हो उसीमें आपकी सन्तुष्टि अनिवार्य है।

कुम्भ—सहकारी और उच्चाधिकारीजनों के बीच आपका मतभेद होगा। शरीरमें रोग-बाधा रहेगी, जिसे संयमसे टालना उचित है। व्यापार मध्यम चलेगा। ता० १४ से राश्येश शनि मार्गी होकर सफलता-साधक होगा। खर्च का मान बढ़ेगा। अन्य परेशानियाँ कम हो जायेंगी। परिस्थितियोंमें सुधार होगा। धर्म कर्ममें संलग्न रह कर आप स्वयं पराक्रम शक्ति का विकास कर सकते हैं।

मीन—आकस्मिक रोग-शोककी वृद्धि होगी लौह और उद्योगसे सम्बन्धित व्यवसायी क्षतिग्रस्त होंगे। कटु-शब्दोंके प्रयोगसे बचना उचित है। नौकरी पेशा वाले कुछ सुखी रहेंगे। पत्नीं-सन्तान एवं अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना उचित होगा। धार्मिक ग्रन्थोंका पठन-पाठन, और देव-गुरु-ब्राह्मणके प्रति श्रद्धा-भक्ति जाग्रत रखना चाहिये। तीसरा सप्ताह कष्टप्रद है।

चैत्र मासका राशिफल
(ता० २८ मार्चसे २५ अप्रैल ७५ तक)

मेष—मासफल मध्यम है। रोजगार-धंधे में सामान्य हानि उठानी पड़ेगी। कर्मक्षेत्रमें आलस्य, उच्चाधिकारियोंसे विरोध एवं चौपाया जानवरोंसे हानिका योग। आप जिसके साथ भलाई करेंगे, वही आपकी बुराई करनेको तैयार होगा। पुलिस, मिलटरी तथा एक्साइज विभागके कर्मचारियोंको समय कष्टकारक है। शीतल पदार्थोंका सेबन एवं शान्त वातावरण में रहन-सहन जहुत जरूरी है।

वृष—सूर्यकी प्रतिकूलतासे कुछ मानसिक परेशानी होगी। मित्र समुदाय बढ़ेगा, परन्तु उनसे विवादका भय है। परिवारमें अस्वस्थताकारी प्रभाव दिखाई देगा। खर्चकी ताकत बढ़ेगी। पीड़ाकारक और हानिकारक योगों पर मासोत्तरार्द्धमें काबू पा सकते हैं। उसी समय व्यापार-धंधे सम्बन्धी कुछ कठिनाइयां दूर होंगी। उचित समझें तो रुद्राभिषेकका एकादश पाठ सविधि करा दें।

मिथुन मासफल मध्यम है । आरोग्य सम्बन्धी कोई खास चिन्ता नहीं होगी, किन्तु पत्नीकी तबियत और तन्दुरुस्तोकी ओर विशेष ध्यान तो रखना ही होगा। सम्मान रक्षाके निमित्त धनका अति व्यय होगा। मासान्तमें उच्चाधिकारीजनोंसे हर्षकी प्राप्ति होगी। कात्यायनी-मंत्रजपसे शान्ति मिलेगी। बैंकर्स और सर्राफा व्यापारियोंको सन्तोषप्रद द्रव्य-लाभ होगा।

कर्क—यह मास अशुभ है। कोष्ठबद्धता, अतिसार अथवा मूत्रविकारसे शरीर कष्ट सम्भव है। शत्रु सम्बन्धी विवादको प्रयत्न-पूर्वक टालना उचित होगा । राजनैतिक व्यक्तियोंका प्रयास असफल होगा । एकाग्रताका अभाव रहेगा। राज्यपक्ष अथवा टैक्सविभागसे परेशानी होगी। शुक्लपक्षमें सन्तोषप्रद स्थिति का योग है । नारायणकवचके पाठसे स्थिति संभाल सकते हैं।

सिंह—सूर्य कष्टप्रद चल रहा है। घरमें कुछ चिन्ताका वातावरण रहेगा। सहयोगियों से झगड़े-झंझट, कलह आदिका अवसर मिलेगा। विपरीत फीलिंग और विपरीत सोसायटीसे कष्ट होगा। व्यापार धंधेमें कठिनाइयाँ बढ़ेंगी। आमदनी सामान्य रहेगी । लेखक, सम्पादक, बुद्धिधीवि और हस्त-व्यवसायी लोग थोड़ी सावधानी बरतें । चौथा सप्ताह कुछ अच्छा है।

कन्या—यह मास साधारण है । लौह अथवा मशीनरीज उद्योगमें तत्पर व्यवसायी भाग्यमें कमजोरी महसूस करेंगे । आरोग्यमें खास बिगाड़ होनेका डर नहीं है । राश्येश बुध मनोरंजन-भ्रमण आदिके लिए अनुकूल तथा सौख्यदायी है । सन्तान एवं स्त्रीपक्षसे विशेष सन्तोषपूर्ण परिस्थिति बन जायेगी। महिलाओंको गर्भाशयके विकार अथवा आर्त्तव विकारसे शरीर पीड़ा संभव है।

तुला—मानसिक परेशानियोंमें कुछ राहत मिलेगी। कुछ विशिष्ट उलझनें दूर होंगी। व्यापारमें लाभकारी प्रभाव एवं पति-पत्नीका दाम्पत्य जीवन उत्तम रहेगा । मानसिक प्रसन्नता बनी रहेगी । प्रतिपक्षी लोग परास्त होंगे, अथवा झगड़े-झंझटमें सुलह कर लेंगे। मित्र समाजमें कुछ अच्छे सम्बन्धोंका निर्माण होगा, परन्तु कवि, कलाकार और सम्पादक-लेखकोंको विपरीत बुद्धिसे भ्रमित होना पड़ेगा।

वृश्चिक—यह मास अत्यन्त श्रेष्ठ है। नौकरी वालोंकी उन्नति होगी। सम्मान रक्षा का योग उत्तम है । भाग्योन्नतिका अवरोध हटेगा । उद्योग धन्धेमें विरोधका वातारण रहते हुए भी धन लाभ सन्तोषप्रद होगा। महिलाओंको अपने प्रत्येक क्षेत्रमें मनचाही सफलताकी उपलब्धि होगी। तीव्र बुद्धि वाले स्कॉलर होल्डरोंको विदेश यात्राका चांस मिलना अवश्यम्भावी है।

धनुः—अभीष्ट कार्य सिद्धि और पराक्रम वृद्धिका सुयोग चल रहा है। मित्र और नारी-वर्गकी सहायतासे अथवा उनके कारण उन्नति और लाभ होगा। नौकरी वालोंको मानसिक तनावका सामना करना पड़ेगा । और छोटे-छोटे धंधे वालोंको तथा हस्तव्यवसायियोंको मुनाफा ज्यादा होगा । बुद्धिजीवियोंके लिए उलझनपूर्ण समय है, केवल सम्मान लाभ हो

सकता है।

मकर—भाग्योन्नतिके मार्गमें आने वाली कठिनाइयां दूर होती दिखाई देंगी। प्रथम सप्ताहमें ही सामान्य लाभदायी अवसर मिलेगा, व्यापार-नौकरीकी स्थिति सन्तोषप्रद रहेगी। पत्नीसे प्रेम-सम्बन्ध उत्तम रहेगा। लेखनी शक्ति एवं सम्भाषण शक्ति तीव्र होगी। मित्र-मिलाप, आमोद-प्रमोद, भ्रमण आदिका मौका मिलेगा। मकर राशिकी महिलायें खान-पान रहन-सहन पर संयम रक्खें।

कुम्भ—कर्मपक्षमें बाधक समय चल रहा है। जोश, क्रोध और उतावलापन बढ़ेगा। रक्तक्षय, फेफड़ोंके विकार अथवा प्रमेहादि रोग का संकेत मिले तो तत्काल उपचार पर ध्यान दें। शुक्लपक्ष परिवासे व्यवसाय उद्योगमें विरोध होते हुए भी कुछ प्रगति हो सकेगी। आमदनीका साधन सफल होगा। किसी विशिष्टतम समस्या अथवा कठिनाईका समाधान करना चाहें तो सद्‌बुद्धिका उपयोग करें।

मीन—भाग्य-प्रतिकूलताका प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई देगा। सांझेदारीमें मतभेद होगा। नौकरी पेशा वालोंको वरिष्ठाधिकारियोंके प्रति शान्ति और नम्रतासे व्यवहार उचित है। सरकारी अधिकारी और नेताओंको तीसरे सप्ताहमें अनेक विपत्तियोंका सामना करना पड़ेगा। सामान्य पूंजीपतिके लिए समय कुछ अनुकूल होगा। शिक्षक-उपदेशक-कवि और चिकित्सक वर्ग सुखी एवं स्वस्थ रहेंगे।

त्रैमासिक श्रीशंकर व्यापार भविष्य

वायदा और हाजर बाजारके अनुभूत चांस

[लेखक :—श्री शिवचरणलाल शर्मा रमलाचार्य]

चांदी पुराना सिक्का एवं धातु पदार्थ—रिपोर्ट लिखते समय चांदी दिल्ली सराफा भाव १०१५) १०२०) रु० चल रहा है। ता० २५ अप्रैल तक चांदी नीचेमें ९४०) ९५०) ऊँचेमें ११४०) ११५०) रु० लगभग भाव बन जाना सम्भव है। ता० २९ जनवरी तक आई मन्दी खरीदो, ता० १ फरवरी तक तेजी खेलने वाले माल कमायेंगे।

पाट जूट बारदाना—ता० २७ जनवरीसे खरीदो १ फरवरी तक अच्छी तेजी बनेगी। ता० २ फरवरीसे आई तेजी बेचान करदो, १२ फरवरी तक मार्केट उछल-उछल कर टूटता जायेगा। ता० १३ फरवरीसे खरीदो ता० २८ फरवरी तक इकतरफा तेजी चलेगी। पाट जूटके व्यापारी बन्धुओंको परामर्श है कि हमारे चांसों द्वारा माल कमायें।

गुड़ खांड चीनी—ता० १ फरवरीसे आई तेजी स्टाक निकाल दो, ता० १३ फरवरी तक तूफानी मन्दी। १३ फरवरीसे २८ फरवरी तक घट बढ़से तेजी प्रधान रहेगी। गुड़ खांड चीनीके व्यापारी अभी स्टाकके चक्करमें नहीं पड़े, भविष्यमें ध्यान मन्दीका है।

रुई कपास—ता० १ से १३ फरवरी तक मन्दीमें खरीदो ता० २८ फरवरी तक अच्छी

तेजी बनेगी । दिग्विजयमें लगभग १२५) १५०) रु० तक तेजी बन सकती है।

मिल शेयर्स—रेशमी व सूती धागा व D.C.M. मिल सेंचुरी डिफर्डमें जनरल लाइन जनवरीके मध्यसे मन्दीकी चालू है, यह मन्दी १३ फरवरी तक इकतरफा चलेगी । आई मन्दी खरीदो। २८ फरवरी तक तेजी खेलने वाले व्यापारीबन्धु माल कमायेंगे ।

तिलहन तेलबीयां—रिपोर्ट लिखते समय अरण्डा बम्बई वायदा २२७) २२८) रु०, अलसी बम्बई वायदा ३४०) ३४५), तेल मूंगफली ८७) ८८) रु०, बिनौला धूरी मन्डी भाव ८९) ९०) रु० चल रहा है। उपरोक्त भावोंसे ऊंचा भाव बननेकी आशा नहीं है। ता० २५ अप्रैल तक बम्बई वायदा एरण्डा नीचा भाव १८०) १९०) रु०, अलसी २७५) २८०) रु०, तेल मूंगफली १० कि० भाव ६९) ७२) रु० बिनौला ७२) ७४) रु० नीचेमें भाव बन जाना सम्भव है। उपरोक्त आंकड़ोंसे कम अधिक भी लाइन चल सकती है।

ता० २९ जनवरीसे खरीदो १ फरवरी तक प्रत्येक तेलवीयांमें तेजी बनेगी । ता० १ फरवरीसे बेचो १४ फरवरी तक मार्केट उछल-उछल कर टूटता जायेगा । १४ फरवरीसे खरीदो । २८ फरवरी तक तेजी खेलने वाले व्यापारी माल कमा लेंगे। ता० २८ फरवरीसे अरण्डामें २५) ३०) रु०, अलसीमें ३०) ४०) तेल मूंगफलोमें ५)७) रु०, बिनौलामें ७)८) रु०, सरसोंमें १०)१२) रु०, करड़ी व तिल्लीमें २५)३०) रु० की इकतरफा लाइनका अचूक चांस कमाई करनेका है।

किराणा—ता० १ फरवरीसे हल्दी व कालीमिर्च लालमिर्च धनियां सौंफ छोटी बड़ी इलायची मैंथी सुपारी ईसबगोल जीराका बेचान कर दो । ता० १५ तक अच्छी मन्दी बनेगी। १५ से २८ तक उछाला आयेगा किन्तु यह तेजी स्थिर नहीं होगी, किराणा व्यापारी बन्धुओंको परामर्श है कि वह व्यापार हाजिर एवं वायदामें लाभ उठाना है तो हमारा परामर्श अवश्य प्राप्त करें। ता० २८ फरवरीसे समस्त किराणा वस्तु मात्र पर तूफानी मन्दीका संचार होगा ।

स्थानाभावके कारण यहां सिर्फ गिने-चुने चांस ही स्पष्ट किये गये हैं।

ता० ११ मार्चको रुई कपास गुड़ खांड चीनी प्रत्येक तिलहन तेलवीयां चांदी पुराना सिक्का सोना प्रत्येक धान्यादि दालवाना खरीदो, ता० २२ मार्च तक घटबढ़से जनरल रुख तेजीका रहेगा। ता० ३० मार्चको पाट जूट बारदाना चांदी सोना पुराना सिक्काका बेचान कर दो। ता० ९ अप्रैल तक मार्केट उछल-उछल कर टूटता जायेगा । ता० ३० मार्च को रुई कपास गुड़ खांड चीनी खरीदो, ३० अप्रैल तक जनरल रुख तेजीका रहेगा।

किराणा—ता० १ मार्चसे हल्दी धनियां जीरा लालमिर्च कालीमिर्च अजवाइन मैथी सौंफ सौंठ ईसबगोल पोस्ताका बेचान करदो (स्टाक निकाल दो) भविष्यमें तूफानी मन्दी निश्चय बनेगी।

खुश्क मेवा—काजू बादाम पिस्ता खुश्क गोला अखरोट मखानामें आई तेजी स्टाक निकाल दो अप्रैलके अन्त तक जनरल रुख मन्दीका रहेगा।

तिलहन तेलबीयां—ता० १ मार्चसे अलसी में ४०)५०) रु०, अरण्डामें २५)३०) तेल मूंगफलीमें १२)१५) रु० बिनौला (सरकी) सरसोंमें १० से २०) रु० तक, तिल्ली महुआ नीम करन्जी तेल गोला (खोपरा) में ५०)६०) ७०) तककी लाइन ता० ३० अप्रैल तक बन जाना सम्भव है। गरीब व्यापारी इस चांस पर नजराने लगाकर ही मालामाल बन जायेंगे।

खली—खल बिनौला सरसों मूंगफली तारामीरा खलीमें ता० १५ फरवरी तक जनरल रुख मन्दीका रहेगा। ता० १५ फरवरी से खरीदो २८ फरवरी तक अच्छी तेजी बनेगी।

धान्यादि दालवाना—ता० १ फरवरीसे गेहूं चावल चना मटरा बाजरा जुवारी मक्की अरहर (तूअर) उर्द मूंग राजमाष लोवियामें १०)१५) रु० की मन्दी ता० १३ फरवरी तक बन जाना सम्भव है। आई मन्दी १३ तक खरीदो, २८ फरवरी तक १५)२५) रु० तक तेजी बनेगी।

बम्बई वरली ग्रह योगायोग द्वारा भाग्यांक—ता० २८ जनवरी ५।६।१०, ४।७।१ क्लोज, ता० ३० जनवरी १।३।६ ओपन या क्लोज। ता० ३ फरवरी ५।७।६ क्लोज। ता० ५ फरवरी ६।१।८ ओपन। ता० ११ फरवरी ८।३।५ ओपन या क्लोज। ता० १३ फरवरी ३।६।४ ओपन। ता० २० फरवरी १।८।५ क्लोज। ता० २६ फरवरी १०।६।३ ओपन। २७ फरवरी ५।७।८ क्लोज।

वस्तु मात्र पर फलित चांस वायदामें गली फलित तारीखें—ता० ३० जनवरीको खरीदो १ फरवरी तक तेजी खेलने वाले माल कमायेंगे। ता० ७ को बन्द तक खरीदो, ६ तक तेजी। ६ को बेचान करदो, १० में घट बढ़से मन्दी बनेगी। ता० १५ फरवरी प्रातःसे जब भी मन्दी बने खरीदो। १७।१८।२०।२१ में तेजीके नजराने फलित होंगे।

चांस देशी घृत—ता० २७ जनवरीसे खरीदो २८ फरवरी तक घटबढ़से ५०)६०) रु० तक तेजी बनेगी।

त्रैमासिक भविष्य विचार (सोना चांदी)

[लेखक :—श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त साहित्यविशारद]

माघ मास

२८ जनवरी, शनि-अंगारक योग होनेसे तूफानी तेजी अथवा मन्दीकी लाइन बनेगी। आशा तेजीकी है। ३० जनवरी बक्री बुध, सोना तेज। यह तेजी ता० ४—५ फ० तक रहेगी, कारण १ फरवरीको बुधका अस्त भी तेजी करेगा। ता० ६ फरवरी धनिष्ठाका सूर्य, ११ तक सोना तेज। ता० १२ बुधवारी पड़वा सोना, चांदी मंदा करेगी। परन्तु १३ फरवरी को कुंभ संक्रांति फिर तेजीकी लाइन बना येगी। १४ को पूर्वमें बुधका उदय भी तेजीका प्रतीक है। यहांकी लाइन २२ को बुध मार्गी होने पर बदल जायेगी। ता० २४ फर्वरी मंगल गुरु त्रिकोण तेजी. २८ को राहु शुक्र त्रिकोण तेजी करेंगे। एक योग ता० १७ से २२ फर्वरी तक चांदीमें मन्दीका भी है। बाजारका रुख देखें।

ता० ३ मार्च रेवतीका शुक्र चांदी मन्दी करेगा। साथ ही ४ से ७ मार्च तक चंद्र राहु युति तेजीकारक। ता० ८ से १३ मार्च तक श्रवणे भौम चांदी सोना मन्दा करेगा। ता० १२ मार्च गुरुका अस्त एक मास तक सोना मन्दा। १४ मार्च मीने रविः सोना चांदी मंदा, आज ही शनिमार्गी होगा यह तेजीकारक है लाइनमें परिवर्तन हो। शुक्रवारा चंद्रदर्शन १५ मार्च को सोना तेज करेगा। १८ मार्च मंगलवारी पंचमी सोना चांदीमे एकतर्फा तेजीकी लाइन बनायेगी।

ता० १ अप्रेल रेवत्यां रविः सोना चांदी में तेजी, आज ही मीने बुध तेजी करके मन्दी करेगा। ता० ३ अप्रेल कुंभे भौम सोना चांदी तेज करेगा। १० अप्रेल गुरुका उदय मन्दी करेगा। ता० ७ अप्रेलसे शुक्र केतुका नक्षत्र योग २५ अप्रेल तक चांदी सोनामें जनरल लाइन तेज। चैत्र शुक्लपक्षमें १४ दिन होनेसे चांदी तेज रहेगी।

नोट—मिथुनके शनि कालमें सोना मन्दा रहता है। इस कारण ता० २३ जुलाई सन १९७५ ई० तक सोनेमें मन्दीकी लाइन रहेगी। इस लेखमें जहां तेजी लिखी है वहां तेजीके रियक्शन आयेंगे। सोनेकी तेजी मन्दीके साथ ताम्बा पीतल और चांदीके साथ कांसीका भाव भी समझें।

तृण, घास, चारा, भूसा, आदि

ता० १२ जनवरी धनुषि भौमः घास चारा लकड़ी तेज। ता० १३ मई मीन पर गुरु मंगल तेजी करेंगे।

ता० २१ जुलाई आषाढ़ी चतुर्दशी, सोमवारी, तृण घास चाराकी उपजमें कमीका ढोल बजा रही है। सावधान! इस वर्ष तृणका स्तम्भ भी नहीं है, चारेका स्टाक करें, ता० ८ नवम्बर शनिवारी पंचमी, घास चारेका स्टाक आगे लाभकारी रहेगा।

नोट—सन् ७४ में चारेमें तूफानी तेजी आई थी। सन् ७५ में यह तेजी उग्ररूप धारण करेगी, आगे ईश्वराधीन है।

पता—पो० खोरी via रेवाड़ी (हरियाणा)

व्यापार-रुख (माघ, फाल्गुन, चैत्र २०३१)

(ता० २८ जनवरी से २५ अप्रैल १९७५ तक स्पेशल चांस)

[लेखक :—ज्योतिर्विद् पं० श्री गणेशात्मज विद्यासागर शर्मा दैवज्ञरत्न]

ता० ३ से ६ फरवरी ७५ तक प्रत्येक वस्तु बाजारमें झड़पी मंदीका धमाका लगेगा। ता० ३,५,६ को मंदीके फाटक फलेंगे। ता० ९ से १३ फरवरी ७५ तक प्रत्येक हाजर-वायदा वस्तु मार्केटमें मंदीका घटाड़ा आयेगा, आये उछाले बेचान करो । ता० १०,११,१२, को मंदीके फाटक अच्छी लिमिटसे फलते रहेंगे। ता० १४ से १८ फरवरी ७५ तक प्रत्येक वस्तु मार्केटमें तूफानी तेजीका जोश बढ़ेगा । ता० १४,१५,१७ को तेजीके फाटक भी अच्छी लिमिटसे फलेंगे। ता० २४ से २८ फरवरी ७५ तक तेजीका रंग दृष्टिगोचर होकर ता० २४, २५,२६,२७ को प्रत्येक वायदा वस्तु बाजारमें तेजीके फाटक फलते रहेंगे। ता० १ से ५ मार्च ७५ तक प्रत्येक वस्तु बाजारमें झड़पी मंदीका धमाका लगेगा । ता० ३, ,५, को फाटक फलेंगे। ता० १३ से २२ मार्च ७५ तक रुई, सूत, बारदाना, चांदी, स्टील, जस्त, लोहा, गुड़, खांड, शक्कर, देशी घृत, के बाजारमें तेजी का जोश बनेगा, ता० १४,१५,१७,२१.२२ में तेजीके फाटक भी फलते रहेंगे जबकि अन्य वस्तु मार्केटमें मंदीका भी घटाड़ा अच्छी लिमिटसे आयेगा। ता० २७ मार्चसे १ अप्रैल तक सोना, पीतल, तांबा, कांसी, शीसा, सरसों, एरंडा, अलसी मूंगफली, बिनोला, जूट, हैसियन, हलदी, जीरा, कालीमिर्च, मूंग, उड़द, चणा, मोठ, अरहर, गेहूँ बाजारोंमें मंदीका धमाका लगेगा। ता० २७,२८, ३१ मार्च व १ अप्रेलको फाटक भी फलेंगे, जबकि अन्य वस्तु मार्केटमें तेजीका रंग दृष्टिगोचर हो सकेगा। ता० २ से ८ अप्रेल ७५ तक तेजी, सूत, सण, कपड़ा, रुई, बारदाना, स्टील, जस्त, आईरन, चांदी, गुड़, खांड, घृत, मील शेयर्स बाजारोंमें अच्छी तेजीका रंग दृष्टिगोचर होकर ता० २,३,४,७,८ को फाटक भी शानदार फल जायेंगे। कदाचित् यहाँ अन्य वस्तु बाजारोंमें मंदीका भी धमाका लगेगा। ता० ९ से १६ अप्रेल ७५ तक झड़पी मंदी प्रत्येक वस्तु मार्केटमें आकर ता० ९,१०, ११ व १४,१५ को मंदियां फलेंगी । ता० २१ से २४ अप्रेल ७५ तक अच्छी तेजी। सोना, पीतल, तांबा, कांसी, शीसा, सरसों, अलसी, मूंगफली, एरंडा, बिनोला, बीयां, तिल, तेल आदि प्रत्येक तेल वाली वस्तुएं, गुड़, खांड, शक्कर, चीनी, गन्ना, घृत, पाट, जूट हैसियन बीटविल, बारदाना, सैंचुरी, डीफर्ड, आईरन, फर्टीलाइजर आदि शेयर, मिलशेयर्स, हल्दी, जीरा, कालीमिर्च, गेहूं, जो, मूँग, चणा, उड़द, अरहर, तुवर, मोठ, चोला आदि प्रत्येक धान्यादि वस्तु बाजारोंमें श्रेष्ठ तेजीका उछाला शानदार आवेगा । ता० २१,२२,२३,२४ को तेजीके फाटक फल जायेंगे । जबकि रुई, सूत, सण, बारदाना, चांदी, स्टील, जस्त, लोहा, आदि वस्तु मार्केटमें झड़पी मन्दीका धमाका लगेगा और फाटक भी ता० २१,२२,२३,२४ को अच्छी लिमिटसे फल जायेंगे। व्यापारीवर्ग अपनी वस्तुका व्यापार करके लाभ उठावें ।